पीएनबी प्रतिभा
pnb pratibha
अंक : 61–03 अक्टूबर–दिसंबर, 2020

सतर्क भारत, समृद्ध भारत

सतर्कता एवं अनुपालन विशेषांक

पीएनबी स्टाफ जर्नल
PNB staff journal

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त श्री सुरेश एन. पटेल का पीएनबी में आगमन

प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली में पधारने पर श्री सुरेश एन. पटेल, केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त तथा श्री पी. डेनियल, अतिरिक्त सचिव, केंद्रीय सतर्कता आयोग का स्वागत करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, कार्यपालक निदेशक श्री विजय दुबे तथा मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री विजय कुमार त्यागी। पंजाब नैशनल बैंक में सतर्कता जागरूकता सप्ताह की शुरूआत केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त, श्री सुरेश एन. पटेल के कर कमलों से की गई। इस अवसर पर श्री पी. डेनियल, अतिरिक्त सचिव, केंद्रीय सतर्कता आयोग भी उपस्थित रहे। सतर्कता जागरूकता सप्ताह (VAW) के अवसर पर पंजाब नैशनल बैंक ने पीएनबी ट्रैकिंग एंड मॉनिटरिंग स्टाफ एकाउंटेबिलिटी केसेस (TMSAC) पोर्टल और पीएनबी 2020 विजिलेंस मैनुअल का शुभारंभ किया। टीएमएसएसी पोर्टल और विजिलेंस मैनुअल का उद्घाटन श्री सुरेश एन पटेल, सतर्कता आयुक्त, श्री पी. डेनियल, केंद्रीय सतर्कता आयोग के अतिरिक्त सचिव एवं पीएनबी के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव के कर कमलों से किया गया।

संपादक मंडल

मुख्य संरक्षक:

सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव
(प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी)

संरक्षक:

संजय कुमार
(कार्यपालक निदेशक)

विजय दुबे
(कार्यपालक निदेशक)

अज्ञेय कुमार आजाद
(कार्यपालक निदेशक)

प्रबंधकीय संपादक:

बी. एस. मान
(मुख्य महाप्रबंधक-राजभाषा)

संपादक:

मनीषा शर्मा
(सहायक महाप्रबन्धक- राजभाषा)

सह संपादक:

बलदेव कुमार मल्होत्रा
(मुख्य प्रबन्धक-राजभाषा)

रविन्द्र मंडले
(वरिष्ठ प्रबन्धक-राजभाषा)

नरेश कुमार
(राजभाषा अधिकारी)

श्री बी. एस. मान, मुख्य महाप्रबंधक-राजभाषा द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबन्धक-राजभाषा द्वारा सम्पादित।

पंजाब नैशनल बैंक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, सेक्टर-10, द्वारका, नई दिल्ली

मुद्रण:

इनफिनिटी एडवर्टाइजिंग सर्विसेस, प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद

पीएनबी प्रतिभा में लेखकों/रचयिताओं द्वारा व्यक्त राय एवं विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं। बैंक प्रबंधन का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश	2
कार्यपालक निदेशक का संदेश	4
मुख्य सतर्कता अधिकारी का संदेश	6
मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा) का संदेश	8
सम्पादक की कलम से...	9
उच्चाधिकारियों के दौरे	10
सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन	15
संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण	22
सतर्कता संबंधी विविध लेख	24-29
ग्राम संपर्क अभियान	30
डिजिटल अपनाएं अभियान	31
निवारक सतर्कता संबंधी विभिन्न लेख	32
संविधान दिवस	41
बैंक द्वारा सीएसआर की विशेष पहल	42
सतर्क भारतः समृद्ध भारत पर विभिन्न लेख	44-69
संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दिल्ली बैंक नराकास का निरीक्षण	54
अंचल प्रबन्धक सम्मेलन	56
राजभाषा गतिविधियाँ	61
अनुपालन संबंधी लेख	70
उद्घाटन/विमोचन	77
पुस्तक समीक्षा	78
आधुनिक बैंकिंग और प्रशिक्षण की आवश्यकता	80
ममता का मर्म (कहानी)	83
मैं भी हुआ कोरोना पॉजिटिव...	84
वास्तु-टिप्स	86
गाँव का सम्मान : कल्पना	88
ज्ञान प्रश्नोत्तरी	90
यात्रा-वृतांत	92
पारंपरिक उत्सव-लोसोंग	97
पहाड़ों की रानी-शिमला	98
बैंकिंग अपडेट	100
आपबीतीः लॉकडाउन	102
हमें गर्व है	103
क्षेत्रीय भाषा के झरोखे से	104
काव्य सरिता	105
विविध गतिविधियाँ	113
सेवानिवृत्ति	115
आपके पत्र	116

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय पीएनबीयंस,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि बैंक की त्रैमासिक गृह पत्रिका "**पीएनबी प्रतिभा**" का यह अंक "**सतर्कता और अनुपालन**" विषय पर प्रकाशित किया जा रहा है। बैंकों जैसी संस्थाओं में सतर्कता और अनुपालन का अत्यधिक महत्व है, क्योंकि बैंक सार्वजनिक धन में लेन-देन करते हैं और इन पर ग्राहकों एवं हितधारकों के हितों की सुरक्षा का बहुत बड़ा दायित्व है।

आज के गतिशील परिदृश्य में, केवल वो संगठन जो कार्य-कुशल हैं और अपने संसाधनों का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करते हैं, निरंतर आधार पर सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अतः, बैंक के प्रत्येक कर्मचारी का यह दायित्व है कि वह पारदर्शिता, निष्पक्षता, जवाबदेही और वस्तुनिष्ठता सुनिश्चित करे ताकि बैंक के संसाधनों का अधिकतम उपयोग हो सके। बैंक में निवारक सतर्कता पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है।

हमारे कामकाज में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने के लिए सतर्कता विभाग द्वारा कई उत्कृष्ट नए कदम उठाए गए हैं। हाल ही में, सतर्कता विभाग द्वारा की गई नई पहलों में से एक है स्टाफ जवाबदेही मामलों की ट्रैकिंग और निगरानी या TMSAC पोर्टल को विकसित करना जो शिकायतों और एनपीए मामलों की ट्रैकिंग और निगरानी आरंभिक बिंदु से लेकर विभिन्न स्तरों तक रियल टाइम के आधार पर करता है।

Dear PNBians,

I am pleased to know that this issue of **"PNB PRATIBHA"**, the quarterly house journal of the Bank, is being published on the theme **"Vigilance and Compliance"**. Vigilance and Compliance have assumed massive importance in the institutions like banks which deal in public money and have huge responsibility to safeguard interests of customers and stake holders.

In today's dynamic scenario, only those organizations that are efficient and manage their resources efficiently can achieve success on a sustained basis. So, it is the responsibility of each employee of the Bank to ensure transparency, fairness, accountability and objectivity so that the Bank's resources are optimally utilized. The preventive vigilance is the main focus in Bank.

Many good initiatives have been taken by Vigilance Department for enhanced transparency and accountability in our working. One of the initiatives, recently taken by Vigilance Department is development of tracking and monitoring staff accountability cases or TMSAC portal for tracking and monitoring the complaints and NPA references from its trigger point to various stages on real time basis.

इसके अलावा, केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC) द्वारा प्रतिवर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन इसके द्वारा प्रसार के लिए उठाए गए विभिन्न नवाचारों में से एक है जो भ्रष्टाचार से लड़ने तथा जन सेवकों एवं नागरिकों में भ्रष्टाचार के दुष्परिणामों एवं ईमानदारी की आवश्यकता के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने का प्रयास है। ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही की संस्कृति के निर्माण और विकास के लिए सभी हितधारकों का सहयोग आवश्यक है, जो भ्रष्टाचार मुक्त समाज के लिए नागरिकों की अपेक्षाओं को पूर्ण करने में सहायता करेगा।

इस वर्ष सीवीसी ने **"सतर्क भारत, समृद्ध भारत"** (Vigilant India, Prosperous India) विषय पर 27 अक्टूबर से 2 नवंबर, 2020 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया है। सतर्कता विभाग ने जागरूकता सप्ताह के दौरान विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया और बैंक के सभी कर्मचारियों द्वारा इनमें उत्साहपूर्वक भाग लिया गया।

सतर्क रहना समाज, संगठन और समग्र रूप से राष्ट्र की प्रगति के लिए परम आवश्यक है।

आइए, हम सभी अपने भीतर सशक्त आंतरिक मूल्यों की भावना विकसित करने का संकल्प लें और सुदृढ़ संगठन के निर्माण के लिए **"भय और पक्षपात"** के बिना एकजुट होकर कार्य करें।

शुभकामनाओं सहित,

सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव
(प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी)

Besides, Observance of Vigilance Awareness Week every year is one of the various outreach initiatives undertaken by Central Vigilance Commission (CVC) in its endeavor to fight corruption and create awareness among the public servants as well as the citizens on the ill-effects of corruption and need for integrity. Co-Operation of all stake holders is imperative in creating and promoting a culture of integrity, transparency and accountability, which would help to fulfill the expectations of the citizens for a corruption free society.

This year CVC has observed Vigilance Awareness Week from 27th October to 2nd November 2020 with the theme - **"Satark Bharat, Samriddh Bharat"** (Vigilant India, Prosperous India). Vigilance Department has organized various activities during the awareness week and all the employees of the Bank participated with enthusiasm.

Being vigilant is indispensable condition to progress for the society, organization and nation as a whole.

Let's all pledge to built within ourselves a sense of strong internal values and work together without **"fear and favor"** to build the strong organization.

With Best Wishes,

Ch. S. S. Mallikarjuna Rao
(Managing Director & CEO)

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय पीएनबीयंस,

मुझे बैंक की तिमाही गृह पत्रिका "पीएनबी प्रतिभा" के इस अंक के माध्यम से आप सभी के साथ अपने विचार साझा करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

बैंकों जैसे सेवा संस्थानों के लिए सतर्कता और अनुपालन प्रमुख स्तंभ होते हैं अतः, इस अंक के लिए इस विषय का चयन काफी उपयुक्त है। किसी भी संगठन में उत्कृष्ट प्रबंधन के लिए एक अच्छी अनुपालन नीति का होना अति आवश्यक है। किसी भी संगठन की सफलता काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि उस संगठन के कर्मचारी कितने सतर्क हैं और अनुपालन पद्धतियों का कितना पालन कर रहे हैं।

अनुपालन कार्यात्मकता किसी भी संगठन की प्रतिष्ठा की रक्षा करने और साथ ही, नियमों और वैधानिक दिशानिर्देशों के उल्लंघन को रोकने के लिए एक विश्वसनीय और प्रभावी उपकरण है।

एक अच्छी अनुपालन पद्धति अपनाने से कारोबार का विधिसम्मत संचालन होता है साथ ही यह स्वीकार्य व्यवहार की समझ को बढ़ाता है।

बैंकिंग कार्यकलापों के विभिन्न क्षेत्रों में अच्छी अनुपालन पद्धति के पालन से निम्नलिखित लाभ प्राप्त होते हैं-

- लेखापरीक्षा, ऋण जैसे कई पक्षों में व्यय कम होना और नियामकों से अच्छा जोखिम स्कोर प्राप्त होना।
- नियामकों/सांविधिक निकायों आदि द्वारा लगाए जाने वाले दंडों में कमी आना।
- आस्ति गुणवत्ता में सुधार होता है तथा स्लिपेज में कमी आती है जिससे वसूली पक्ष स्वतः मजबूत होता है।

Dear PNBians,

I am delighted to share my views with all of you through this issue of bank's quarterly house journal 'PNB Pratibha'.

Vigilance and compliance being the pillars of service institution like banks, selection of theme for this issue is quite apt. A good compliance policy is essential for better management of any organization. The success of any organization depends a lot on how vigilant the staff of that organization is and the compliance practices being followed by it.

Compliance function is a credible and effective tool in safeguarding the reputation of any organization and detecting as well as preventing contraventions of the regulations & statutory guidelines.

A good compliance practice subsequently leads to legitimate business conduct and enhance the understanding of what is acceptable behavior.

Observance of good compliance function in various areas of banking activity leads to:

- Reduced expenditure in many aspects like Audit, Credit and getting good risk score from regulators.
- Imposition of lesser Penalties by regulators/ statutory bodies etc.
- Improves Asset Quality, reduces Slippages and automatically strengthen the Recovery aspects.

बैंक के कारोबार में वृद्धि करते समय अनुपालन संस्कृति का संवर्धन भी व्यवहार में सुनिश्चित किया जाना चाहिए ताकि हानि से बचा जा सके।

विश्वसनीय होने के लिए, सभी व्यावसायिक इकाइयों द्वारा अनुपालन कार्यों के कार्यान्वयन का प्रदर्शन बाहरी दुनिया और सभी हितधारकों को करना चाहिए।

इसे प्रभावी करने के लिए, प्रत्येक कर्मचारी को इसके महत्व से अवगत करवाया जाए। व्यवसाय के नाम पर अनुपालन से समझौता नहीं किया जाना चाहिए। बैंकिंग कार्य करते समय संगठन में सतर्कता अपनाना आवश्यक है ताकि हम विभिन्न प्रकार की हानियों से बच सकें।

विगत वर्षों में, बैंकिंग में बड़ा परिवर्तन आया है। यह अब पारंपरिक बैंकिंग नहीं रही है। बैंकिंग क्षेत्र अधिक प्रतिस्पर्धी, ग्राहक केंद्रित और प्रौद्योगिकी आधारित हो गया है। बैंक के व्यावसायिक कारक आंकड़ों की गुणवत्ता पर निर्भर हो गए हैं। सीबीएस या अन्य एप्लिकेशन में उपलब्ध आंकडें सही और विश्वसनीय होने चाहिए क्योंकि दर्ज किए गए आंकडें संगठन के प्रत्येक स्तर पर नियंत्रण और पारदर्शिता की कुंजी है। संगठन के प्रत्येक स्तर पर सिस्टम में सही आंकडें प्रविष्ट करने से शोध एवं विकास में सहायता मिलती है साथ ही यह नियामक/सांविधिक निकायों को सटीक और समय पर रिपोर्टिंग में सहायता प्रदान करता है।

संगठन में अच्छी अनुपालन संस्कृति विकसित करने से अभीष्टतम प्रक्रियागत लाभ प्राप्त होगा तथा संगठन के प्रत्येक कार्यकलाप को कारगर बनाया जा सकेगा। हितधारकों के मस्तिष्क में एक अत्यंत अनुपालक बैंक की समग्र छवि होने से मार्किट के अवसरों को आकर्षित करने और प्रत्येक के लिए मूल्य में वृद्धि होने का लाभ प्राप्त होगा।

मुझे आशा है कि यह अंक कर्मचारियों को संवेदनशील बनाने और उन्हें सतर्कता के महत्व को समझने और संगठन में सर्वोत्तम अनुपालन संस्कृति बनाने में सक्रिय रूप से कार्य करने की दिशा में सहायक सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं सहित,

आपका,

अज्ञेय कुमार आजाद
(कार्यपालक निदेशक)

Enhancement of Compliance Culture must be ensured in practice while increasing business of the Bank so as to avoid losses.

To be credible, compliance functions must demonstrate its implementation by all business units to the outside world & all stake holder.

To be effective, each employee to be told its importance. Compliance should not be diluted in the name of business. Vigilant approach in the organization is essential while doing banking activities to safeguard us from various losses.

Over the years, banking has transformed. It is no longer the conventional banking. Banking sector has become more competitive, customer centric, and technology based. Bank's business factors has become dependent upon the quality of data. Data available in the CBS or in other applications should be correct and reliable as the data entered is the key to Control and Transparency at each level of the organization. Correct Data feeding in the system at every level of organization helps in R&D, accurate and on-time reporting to Regulators/Statutory Bodies.

Inculcating Good Compliance Culture in the organization will ultimately lead to Process Benefit Optimization & Streamlining of each and every activity in the organization. Having overall perception in the mind of stakeholders being Highly Compliant bank will attract opportunities from the market and increased value to everyone.

I hope that this issue will go a long way in sensitizing the employees & making them understand the importance of vigilance & to act proactively to create the best compliance culture in the organization.

With Best Wishes,

Yours Sincerely,

Agyey Kumar Azad
(Executive Director)

मुख्य सतर्कता अधिकारी का संदेश

प्रिय पीएनबीयंस,

सतर्कता को न केवल भ्रष्टाचार को रोकने बल्कि गुणवत्ता के मानकों और उत्कृष्टता के मापदंडों को बढ़ाने की गतिविधि के रूप में माना जाता है। समग्र रूप से देखा जाए, तो यह और अधिक सार्थक भूमिका निभा सकता है। वास्तव में, सतर्कता का किसी भी संगठन के समग्र जोखिम प्रबंधन तंत्र के साथ आंतरिक संबंध है, जिससे सिस्टम को इस तरह से संरचित किया जाता है ताकि लीकेज और अक्षमताओं को रोका जा सके और ग्राहकों के साथ आंतरिक और बाहरी दोनों तरह से व्यवहार करते समय संगठन को पारदर्शी और जवाबदेह बनाया जा सके।

बैंक के सतर्कता विभाग ने हमेशा बैंक के लगभग सभी व्यावसायिक कार्यों में बेहतर सुशासन के लिए उत्तरोत्तर नवाचार अपनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। निवारक सतर्कता अपनाने अर्थात सभी महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं का निरंतर विश्लेषण और मूल्यांकन करने, असामान्य संकेतों के लिए नियमित अलार्म और सावधानी सूचना देने से हम आगामी जोखिमों से बचने के लिए सदैव अच्छी तरह से तैयार रहते हैं।

पिछले वर्षों की तरह, इस वर्ष भी, सभी पीएनबीयंस और ग्राहकों के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए, हमने केंद्रीय सतर्कता आयोग की विषयवस्तु **"सतर्क भारत, समृद्ध भारत"** की तर्ज पर सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2020 मनाया। इस दिशा में, हमने पीएनबी सतर्कता नियमावली 2020 का अनावरण किया तथा शिकायतों और एनपीए मामलों पर उसके ट्रिगर बिंदु से लेकर विभिन्न स्तरों तक वास्तविक समय के आधार पर नजर रखने और निगरानी के लिए ट्रैकिंग और स्टाफ जवाबदेही मामलों की निगरानी हेतु TMSAC पोर्टल एवं निवारक

Dear PNBians,

Vigilance is considered as an activity not merely to prevent corruption but to raise standards of quality and parameters of excellence. Considered holistically, it can acquire a more meaningful role. In fact, vigilance has intrinsic relationship with the overall risk management mechanism of any organization, whereby systems are structured in such a manner so as to prevent leakages and inefficiencies while making the organization transparent and accountable to its dealings with customers both internal and external.

Bank's Vigilance Department has always been instrumental to progressively adopt initiatives for better governance in almost all business operations of the Bank. Pursuing Preventive Vigilance i.e. doing continuous analysis and appraisal of all critical processes, throwing up regular alarms and cautions for abnormal indications, keep us well poised to influence us against emanating risks.

To increase awareness amongst all PNBians and customers, like previous years, this year also, we celebrated Vigilance Awareness Week 2020 in accordance with the Central Vigilance Commission theme **"Satark Bharat, Samriddh Bharat"** (Vigilant India, Prosperous India). In this pursuit, we unveiled PNB Vigilance Manual 2020 and launched Tracking and monitoring staff accountability cases or TMSAC portal for tracking & monitoring the complaints and NPA references from its trigger point to various stages

सतर्कता के बेहतर संयोजन के लिए PVCM पोर्टल का शुभारम्भ किया।

उपयुक्त रणनीतियों के आधार पर प्रभावी सतर्कता निश्चित रूप से गुणवत्तापूर्ण परिणाम में बदलती है जो संगठन के विकास को नई ऊँचाईयों तक ले जाती है।

निवारक सतर्कता तंत्र को मजबूत करने के लिए, निवारक सतर्कता सत्रों को भी प्रशिक्षण कार्यक्रमों का हिस्सा बनाया गया है। वास्तव में, निवारक सतर्कता एकबारगी कवायद नहीं है, यह एक सतत प्रक्रिया है, यह उत्कृष्टता की ओर एक यात्रा है जिसमें हमेशा बदलते कारोबारी माहौल के अनुरूप प्रणाली और प्रक्रियाओं में निरंतर सुधार किया जाना शामिल है।

नई ऊंचाइयों को प्राप्त करने की दिशा में सक्रिय भागीदारी के लिए मैं 'टीम पीएनबी' को हार्दिक बधाई देता हूँ और सभी से अपने कार्य क्षेत्र में हर समय सतर्क और सचेत रहने की आशा करता हूँ। हम अपने सभी व्यवहारों में नैतिक बने रहें; हमारे सहयोगियों, अधीनस्थों और युवा पीढ़ी को देश के सतर्क और स्मार्ट नागरिक बनने के लिए प्रोत्साहित करें और देश की समृद्धि के लिए योगदान दें तथा अपने प्रिय पीएनबी को वित्तीय समाधानों के लिए सबसे पसंदीदा संस्थान बनाएं।

on real time basis and PVCM for betterment of Preventive Vigilance.

Effective vigilance based on apt strategies surely translates into quality output that puts the growth of organization on a higher trajectory.

To strengthen Preventive Vigilance Mechanism, Preventive Vigilance sessions have also been made part of the Training Programmes. In fact, Preventive vigilance is not a one-time exercise, it is an ongoing process, it's a journey towards excellence which involves improvement of system & procedures in line dynamically with ever changing business environment.

I compliment 'Team PNB' for active participation in our pursuit towards achieving newer heights and wish everyone to remain vigilant & informed at all times in their respective areas of responsibility. Remain ethical in all our dealings; encourage our colleagues, subordinates and the younger generation to become alert & smart citizens of the country and contribute towards the prosperity of the country and make our beloved PNB as one of the most preferred destination for financial solutions.

विजय कुमार त्यागी
(मुख्य सतर्कता अधिकारी)

Vijay Kumar Tyagi
(Chief Vigilance Officer)

मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा) का संदेश

प्रिय पीएनबीयंस,

बैंक की गृह पत्रिका **'पीएनबी प्रतिभा'** के 'सतर्कता एवं अनुपालन विशेषांक' के माध्यम से पुनः आपके समक्ष अपने विचार रखते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

वर्तमान समय में, व्यक्ति, संस्थान आदि के जीवन में सतर्कता के महत्त्व में वृद्धि हुई है। हमें जीवन के हर मोर्चे पर सतर्क रहना चाहिए और यह समय की मांग भी है। विशेषतः बैंक जैसी वित्तीय संस्थाओं के लिए सतर्कता की आवश्यकता और भी अधिक है। आए दिन हमें बैंकों के साथ हुई धोखाधड़ी की खबरें सुनने को मिलती हैं। **"सावधानी हटी दुर्घटना घटी"** हमारी थोड़ी सी लापरवाही बड़ी धोखाधड़ी को अवसर प्रदान कर सकती है। इसलिए हमें अपना दैनिक बैंकिंग कार्य करते समय समुचित सावधानी बरतनी चाहिए। बैंक द्वारा समय-समय पर जारी एसओपी, परिपत्रों के माध्यम से परिचालित दिशानिर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए दैनिक बैंकिंग जिम्मेदारियों का निर्वाह पूरी सावधानी के साथ करना चाहिए।

वर्तमान समय में ऑनलाईन धोखाधड़ी की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। ऑनलाईन धोखाधड़ी से हमारे ग्राहकों को बचाने के लिए उन्हें जागरूक करने की आवश्यकता है। आज के डिजिटल समय में डिजिटल बैंकिंग का महत्व और अधिक बढ़ता जा रहा है अतः साईबर सुरक्षा संबंधी मार्गनिर्देशों का अनुपालन भी उतना ही महत्वपूर्ण हो गया है। बैंकों को अपने ग्राहकों एवं हितधारकों का विश्वास जीतने व अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए एक बेहतर अनुपालन संस्कृति को अपनाना भी अत्यंत आवश्यक है। बैंक जैसी संस्था में अनुपालन एवं सतर्कता हर एक व्यक्ति की जिम्मेदारी है।

समुचित जागरूकता हेतु दिशा-निर्देशों का हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषा में उपलब्ध होना भी आवश्यक है। जन-जन तक बैंकिंग सुविधाएं, विविध योजनाओं एवं दिशानिर्देशों की जानकारी पहुँचाने में हिन्दी व क्षेत्रीय भाषाओं की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। हमें ग्राहकों को ग्राहकों की भाषा में ही बैंकिंग सेवा देनी चाहिए तभी हम अधिक से अधिक ग्राहकों तक पहुंच पायेंगे। हम अपने ग्राहकों को विविध बैंकिंग योजनाएं एवं बैंकिंग के अद्यतन दिशानिर्देशों की जानकारी तथा सावधानी सूचनाएं हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं में पहुँचा रहे हैं ताकि उन्हें बैंकिंग संबंधी जानकारी अपनी भाषा में मिल सकें।

इस अवसर पर मेरी आप सभी से यह अपेक्षा है कि राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन को अधिक से अधिक बढ़ावा दें तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करें। साथ ही आप सभी अपने बैंकिंग कार्यों में सरल भाषा का प्रयोग करें ताकि हमारे ग्राहकों के लिए भी बैंकिंग को समझना आसान हो सके।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि **'पीएनबी प्रतिभा'** का यह नवीनतम अंक आप सभी के लिए रोचक, ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी सिद्ध होगा। प्रतिभा के इस अंक के लिए आप सभी के सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी ताकि हम इस पत्रिका को सर्वश्रेष्ठ पत्रिका के रूप में स्थापित करने में सफल हो सकें।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित!

आपका,

विकट सिंह मान
(मुख्य महाप्रबंधक-राजभाषा)

सम्पादक की कलम से...

प्रिय साथियो,

"पीएनबी प्रतिभा" के "सतर्कता एवं अनुपालन विशेषांक" के जरिए आपको संबोधित करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। हम सब जानते हैं कि "पीएनबी प्रतिभा" के प्रत्येक अंक के लिए हम हर बार अलग-अलग बैंकिंग विषयों का चयन करते हैं, इसके पीछे हमारा यही उद्देश्य रहा है कि "पीएनबी प्रतिभा" न केवल संस्था की गतिविधियों का आईना बने वरन् हमारे पाठकों के लिए भी यह उपयोगी सिद्ध हो सके। आप इस बात से सहमत होंगे कि "पीएनबी प्रतिभा" पत्रिका इस उद्देश्य को सफलतापूर्वक प्राप्त भी कर पाई है।

बैंक के लिए लाभप्रदत्ता बनाए रखना महत्वपूर्ण है और लाभप्रदता का मार्ग ग्राहक संतुष्टि से होकर जाता है और ग्राहक संतुष्टि एवं विश्वास अर्जित करने के लिए अच्छी अनुपालन संस्कृति अपनाना आवश्यक है। अनुपालन बैंक की सुरक्षित और सुदृढ़ कार्यपद्धति का एक महत्वपूर्ण तत्व है, गैर-अनुपालन बैंक के जोखिम प्रोफाईल पर प्रतिकूल असर डाल सकता है। एक मजबूत संगठन के निर्माण के लिए प्रत्येक कर्मचारी द्वारा पग-पग पर सतकर्ता जरूरी है। साथ ही, अनुपालन को दैनिक कार्यकलाप का हिस्सा बनाने से न केवल दक्षता व कार्यनिष्पादन बढ़ता है बल्कि बैंक धोखाधड़ी के कारण होने वाले बड़े नुकसान से भी बच सकता है। ग्राहकों को जागरूक करने के लिए जरूरी है कि बैंक कर्मियों को अनुपालन व सतर्कता संबंधी अपेक्षाओं की जानकारी नियमित रूप से दी जाए ताकि वे इसे अपनी कार्यप्रणाली में समाहित कर सकें। आपकी प्रिय पत्रिका "पीएनबी प्रतिभा" का यह विशेषांक इस उद्देश्य की पूर्ति में सहायक होगा।

"पीएनबी प्रतिभा" के इस अंक में हमने बैंक द्वारा मनाए गए सतर्कता जागरूकता सप्ताह की कुछ झलकियाँ तथा साथ में बैंक के विभिन्न अंचल कार्यालयों/मंडल कार्यालयों द्वारा की जा रही गतिविधियों को भी सुरुचिपूर्ण तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। पत्रिका को और रुचिकर बनाने के लिए कुछ स्थायी कॉलम यथा; ज्ञान प्रश्नोत्तरी, वास्तु टिप्स, प्रांतीय उत्सव, पुस्तक समीक्षा आदि भी इस अंक में सम्मिलित किए गए हैं। इसके अतिरिक्त इस अंक में "सतर्कता एवं अनुपालन" संबंधी विभिन्न लेखों/कविताओं को भी यथोचित स्थान प्रदान किया गया है। साथ में, कहानियाँ, यात्रा वृतांत, क्षेत्रीय भाषा के प्रसार की श्रृंखला में बांगला तथा पंजाबी की कविताओं के समावेश से यह पत्रिका और अधिक जीवंत हो उठी है।

सर्वोच्च प्रबंधन द्वारा "पीएनबी प्रतिभा" का आगामी अंक "कृषि एवं वित्तीय समावेशन विशेषांक" के रूप में प्रकाशित किए जाने का निर्णय लिया गया है। मेरा अनुरोध है कि आप सब इस अंक के लिए अपने लेख/रचनाएँ तथा अन्य उपयोगी सामग्री प्रेषित कर पत्रिका को संग्रहणीय अंक बनाने में हमें अपना बहुमूल्य सहयोग प्रदान करें।

मुझे आशा है कि "पीएनबी प्रतिभा" का यह अंक आपको सुरुचिपूर्ण, ज्ञानवर्धक एवं विविधता से परिपूर्ण लगेगा। "पीएनबी प्रतिभा" को और अधिक रुचिकर बनाने के लिए आपके सुझाव सदैव आमंत्रित हैं। आपकी प्रतिक्रिया हमारे लिए बहुमूल्य हैं व हमें इनकी प्रतीक्षा रहेगी।

साभार,

मनीषा शर्मा
(सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा)

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी के दौरे

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव के अंचल कार्यालय, वाराणसी में पधारने पर उनका स्वागत करते हुए अंचल कार्यालय के स्टाफ सदस्यगण।

अंचल कार्यालय, वाराणसी के दौरे के दौरान नव निर्मित अंचल कार्यालय परिसर का फीता काट कर उद्घाटन करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, साथ में हैं अंचल प्रमुख श्री राजेंद्र कुमार वशिष्ठ एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव अंचल कार्यालय, वाराणसी के नव-निर्मित परिसर में बैंक के संस्थापक पंजाब केसरी लाला लाजपत राय जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए, साथ में हैं अंचल प्रमुख श्री राजेंद्र कुमार वशिष्ठ एवं अन्य अधिकारीगण।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव अंचल कार्यालय, वाराणसी दौरे के दौरान मीडिया कर्मियों से बैंक की वर्तमान एवं आगामी नीतियों पर आयोजित कार्यक्रम में संबोधित करते हुए।

अंचल कार्यालय, वाराणसी की पत्रिका "पीएनबी काशिका" के प्रवेशांक का विमोचन करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव एवं अंचल प्रमुख श्री राजेंद्र कुमार वशिष्ठ।

चेन्नई दौरे के दौरान प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव का अंचल कार्यालय चेन्नई में स्वागत करते हुए अंचल कार्यालय के स्टाफ सदस्यगण।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी के दौरे

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव आई-रैम चेन्नई का उद्घाटन करते हुए, साथ में हैं अंचल प्रमुख, चेन्नई श्री विनोद कुमार एवं मंडल प्रमुख चेन्नई उत्तर श्री रतिश कुमार।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव आई-रैम चेन्नई का उद्घाटन करते हुए, साथ में है अंचल प्रमुख श्री विनोद कुमार एवं आई-रैम प्रमुख श्री मुकेश गुप्ता।

अंचल कार्यालय, चेन्नई के वीरे के वीरान समीक्षा बैठक करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव। इस अवसर पर अंचल प्रमुख, चेन्नई श्री विनोद कुमार, उप महाप्रबंधक श्री गिरियर अग्रवाल, मंडल प्रमुख, चेन्नई दक्षिण श्री मोहम्मद मख्सूद अली, मंडल प्रमुख, चेन्नई उत्तर श्री रतिश कुमार एवं अन्य मंडल कार्यालय प्रमुख वीडियो कोन्फ्रेंस के माध्यम से उपस्थित रहे।

अंचल कार्यालय कोलकाता वीरे के वीरान वरिष्ठ अधिकारीगणों को संबोधित करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव।

अंचल कार्यालय कोलकाता में समीक्षा बैठक के वीरान संबोधित करते हुए अंचल प्रबंधक श्री अश्विनी कुमार झा तथा मंच पर उपस्थित हैं प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव ।

अंचल कार्यालय कोलकाता में अयोजित समीक्षा बैठक के वीरान संबोधित करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव।

कार्यपालक निदेशकों के दौरे

अंचल कार्यालय, अहमदाबाद के दौरे के दौरान समीक्षा बैठक करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री संजय कुमार, साथ में हैं अंचल प्रमुख, अहमदाबाद श्री सुनिल कुमार गोयल तथा मंडल प्रमुख, अहमदाबाद श्री अनुपम।

गांधीनगर में पीएनबी ऋण सेंटर (पीएलपी) का उद्घाटन करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री संजय कुमार।

गांधीनगर में अंचल कार्यालय की समीक्षा बैठक करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री संजय कुमार, साथ में हैं अंचल प्रमुख, अहमदाबाद श्री सुनिल कुमार गोयल तथा अन्य उच्चाधिकारिगण।

अंचल कार्यालय, शिमला के दौरे के दौरान नवनिर्मित मंडल कार्यालय सोलन का उद्घाटन करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री विजय वुबे, साथ में हैं श्रीमती रीता कौल अंचल प्रमुख, शिमला तथा श्री संजीव कुमार, मंडल प्रमुख, सोलन।

अंचल कार्यालय, शिमला के दौरे के दौरान अंचल कार्यालय शिमला की समीक्षा बैठक करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री विजय वुबे, साथ में हैं अंचल प्रमुख, शिमला, श्रीमती रीता कौल तथा अंचल के अंतर्गत सभी मंडलों के मंडल प्रमुख।

अंचल कार्यालय, रायपुर के प्रांगण में वृक्षारोपण करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री अज्ञेय कुमार आजाद। इस अवसर पर अंचल प्रमुख श्री एस. के. राणा एवं मंडल प्रमुख, रायपुर श्री मनमोहन लाल चांदना भी उपस्थित रहे।

कार्यपालक निदेशकों के दौरे

कार्यपालक निदेशक श्री अज्ञेय कुमार आजाद ने अपने रायपुर के दौरे के दौरान कोविड-19 के बढ़ते प्रकोप के मद्देनजर छत्तीसगढ़ राज्य के मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी को मुख्यमंत्री राहत कोष में 25 लाख रुपये का अनुदान दिया। इस अवसर पर रायपुर अंचल के अंचल प्रबंधक श्री एस. के. राणा एवं मंडल प्रमुख श्री मनमोहन लाल चांदना भी उपस्थित रहे।

नवनिर्मित अंचल कार्यालय, रायपुर का उद्घाटन करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री अज्ञेय कुमार आजाद।

अंचल कार्यालय, रायपुर के दौरे के दौरान कार्यपालक निदेशक श्री अज्ञेय कुमार आजाद के साथ अंचल प्रमुख श्री एस. के. राणा एवं मंडल प्रमुख श्री मनमोहन लाल चांदना तथा अन्य स्टाफ सदस्यगण।

स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्र, पंचकुला के दौरे के दौरान स्टाफ सदस्यों के साथ उपस्थित कार्यपालक निदेशक श्री अज्ञेय कुमार आजाद।

स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्र, पंचकुला दौरे के दौरान समीक्षा बैठक करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री अज्ञेय कुमार आजाद, साथ में उपस्थित हैं प्रशिक्षण केन्द्र के उच्चाधिकारीगण।

कार्यपालक निदेशक श्री अज्ञेय कुमार आजाद स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्र, पंचकुला के दौरे के दौरान पौधारोपण करते हुए, साथ में हैं ट्रेनिंग सेंटर के उच्चाधिकारीगण।

कार्यपालक निदेशकों के दौरे

अंचल कार्यालय, भुवनेश्वर में पुनरीक्षण बैठक की अध्यक्षता करते हुए कार्यपालक निवेशक, श्री अज्ञेय कुमार आजाद, साथ में हैं अंचल प्रमुख श्री अश्वनी कुमार तथा आंचलिक लेखा परीक्षा कार्यालय प्रमुख श्री मुक्ति रंजन राय।

अंचल कार्यालय, भुवनेश्वर की पुनरीक्षण बैठक में उपस्थित अंचलाधीन मंडल प्रमुख, पीएलपी एवं रैम प्रमुख, एमसीसी प्रमुख तथा अंचल के अन्य अधिकारीगण।

अंचल कार्यालय, भुवनेश्वर के नवनिर्मित परिसर का उद्घाटन करते हुए कार्यपालक निवेशक श्री अज्ञेय कुमार आजाद एवं अंचल प्रमुख, श्री अश्वनी कुमार।

अंचल कार्यालय, भुवनेश्वर वीरे के वीरान बीड़ानाशी शाखा का उद्घाटन करते हुए कार्यपालक निवेशक, श्री अज्ञेय कुमार आजाद, साथ में हैं अंचल प्रमुख, श्री अश्वनी कुमार।

कार्यपालक निवेशक, श्री अज्ञेय कुमार आजाद, रैम, कटक का उद्घाटन करते हुए। साथ में हैं अंचल प्रमुख, भुवनेश्वर श्री अश्वनी कुमार तथा रैम प्रमुख श्री राजेश खटुआ।

पीएनबी में सतर्कता सप्ताह का आयोजन

पंजाब नैशनल बैंक द्वारा इस वर्ष 27 अक्टूबर से 2 नवंबर, 2020 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के आयोजन की शुरुआत 1999 में केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC) द्वारा की गई थी। सीवीसी की मूल रणनीति सामूहिक रूप से सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार रोकने के लिए सभी हितधारकों को प्रोत्साहित करना है, इसी को ध्यान में रखते हुए प्रतिवर्ष अक्टूबर माह के अंतिम सप्ताह में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह की थीम **"सतर्क भारत, समृद्ध भारत"** थी।

इस अवसर पर प्रधान कार्यालय में प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव तथा मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री विजय कुमार त्यागी द्वारा प्रधान कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्यों को सार्वजनिक जीवन में पारदर्शिता और ईमानदारी को अपनाने की शपथ दिलाई गई। साथ ही कार्यपालक निदेशकगण श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे, श्री अज्ञेय कुमार आजाद तथा मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री विजय कुमार त्यागी द्वारा सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर जारी माननीय राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त (CVC) के संदेश भी पढ़े गए। बैंक के प्रधान कार्यालय के साथ-साथ देश भर के सभी प्रशासनिक कार्यालयों अर्थात् अंचल कार्यालयों, मंडल कार्यालयों, आंचलिक लेखा परीक्षा कार्यालयों और शाखाओं, रैम केंद्रों, सीएलपीसी और अन्य कार्यालयों के समस्त स्टाफ सदस्यों द्वारा पारदर्शिता और ईमानदारी की शपथ ली गई।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह (VAW) के अवसर पर पंजाब नैशनल बैंक ने पीएनबी ट्रैकिंग एंड मॉनिटरिंग स्टाफ एकाउंटेबिलिटी केसेस (TMSAC) पोर्टल और पीएनबी 2020 विजिलेंस मैनुअल का शुभारंभ किया। टीएमएसएसी पोर्टल और विजिलेंस मैनुअल का उद्घाटन श्री सुरेश एन पटेल- सतर्कता आयुक्त, श्री पी. डेनियल - अतिरिक्त सचिव, केंद्रीय सतर्कता आयोग एवं पीएनबी के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव के कर कमलों से किया गया।

टीएमएसएसी पोर्टल का उद्देश्य वास्तविक समय के आधार पर शिकायतों/एनपीए संदर्भ को उसके ट्रिगर बिंदु से विभिन्न चरणों तक ट्रैक और मॉनिटर करना है। पोर्टल बैंक को अग्रिम रूप से आंतरिक धोखाधड़ी की पहचान करने, तुरंत कार्रवाई करने और आंतरिक प्रक्रियाओं में सुधार करने में मदद करेगा; यह कर्मचारियों के बीच ईमानदारी और सत्यनिष्ठा की भावना का निर्माण करेगा और आंतरिक प्रणालियों को नियंत्रित करेगा।

सतर्कता आयुक्त श्री सुरेश एन पटेल ने इस अवसर पर संबोधित करते हुए कहा कि "हम पीएनबी द्वारा टीएमएसएसी पोर्टल और 2020 विजिलेंस मैनुअल को लॉन्च करने के साथ-साथ सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन करने के प्रयासों की सराहना करते हैं। हमारे जीवन के सभी पहलुओं में ईमानदारी को बनाए रखने के लिए समाज के सभी वर्गों को सतर्क रहने की आवश्यकता है। इसमें आंतरिक प्रक्रियाओं में सुधार, कार्य का समयबद्ध निपटान और प्रणालीगत सुधार का लाभ उठाने वाली प्रौद्योगिकी शामिल है"।

पीएनबी के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव ने इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए कहा कि "टीएमएसएसी पोर्टल और विजिलेंस मैनुअल के शुभारम्भ के साथ-साथ सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन करना हमारे लिए बहुत प्रसन्नता की बात है। इस तरह की पहल निश्चित रूप से बैंक को आंतरिक गतिविधियों में अधिक सतर्क रहने में मदद करेगी और सभी कर्मचारियों को बिना किसी संकोच के किसी भी अनधिकृत गतिविधियों की रिपोर्ट करने में मदद करेगी।

प्रधान कार्यालय में आयोजित सतर्कता जागरूकता सप्ताह की झलकियाँ

सतर्कता जागरूकता सप्ताह (VAW) के अवसर पर श्री सुरेश एन. पटेल- सतर्कता आयुक्त, श्री पी. डेनियल, अतिरिक्त सचिव, केंद्रीय सतर्कता आयोग तथा पीएनबी के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, कार्यपालक निदेशकगण श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे, श्री अज्ञेय कुमार आजाद तथा मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री विजय कुमार त्यागी।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह (VAW) के अवसर पर पीएनबी 2020 विजिलेंस मैनुअल का उद्घाटन करते हुए श्री सुरेश एन. पटेल- सतर्कता आयुक्त, श्री पी. डेनियल, अतिरिक्त सचिव, केंद्रीय सतर्कता आयोग तथा पीएनबी के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, कार्यपालक निदेशकगण श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे, श्री अज्ञेय कुमार आजाद तथा मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री विजय कुमार त्यागी।

प्रधान कार्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह (VAW) के अवसर पर ट्रैकिंग एंड मॉनिटरिंग स्टाफ एकाउंटेबिलिटी केसेस (TMSAC) पोर्टल उद्घाटन करते हुए श्री सुरेश एन. पटेल- सतर्कता आयुक्त, श्री पी. डेनियल, अतिरिक्त सचिव, केंद्रीय सतर्कता आयोग तथा पीएनबी के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, कार्यपालक निदेशकगण श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे, श्री अज्ञेय कुमार आजाद तथा मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री विजय कुमार त्यागी।

प्रधान कार्यालय में आयोजित सतर्कता जागरूकता सप्ताह की झलकियाँ

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान पारदर्शिता एवं ईमानदारी की शपथ दिलाते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह समारोह के अवसर पर माननीय राष्ट्रपति महोदय का संदेश पढ़ते हुए कार्यपालक निदेशक श्री संजय कुमार।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह समारोह के अवसर पर माननीय उपराष्ट्रपति महोदय का संदेश पढ़ते हुए कार्यपालक निदेशक श्री विजय दुबे।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह समारोह के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री महोदय का संदेश पढ़ते हुए कार्यपालक निदेशक श्री अजेय कुमार आजाद।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह समारोह के अवसर पर माननीय केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त का संदेश पढ़ते हुए मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री विजय कुमार त्यागी।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान फील्ड में आयोजित विभिन्न गतिविधियाँ

अंचल कार्यालय, गुरुग्राम

अंचल कार्यालय, दिल्ली

अंचल कार्यालय, हैदराबाद

अंचल कार्यालय, भोपाल

अंचल कार्यालय, जोधपुर

अंचल कार्यालय, लुधियाना

अंचल कार्यालय, भुवनेश्वर

अंचल कार्यालय, चड़ीगढ़

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान फील्ड में आयोजित विभिन्न गतिविधियाँ

अंचल कार्यालय, अहमदाबाद

अंचल कार्यालय, जबलपुर

मंडल कार्यालय, शिमला

मंडल कार्यालय, कपूरथला

मंडल कार्यालय, हल्द्वानी

मंडल कार्यालय, हरिद्वार

मंडल कार्यालय, रायबरेली

मंडल कार्यालय, उन्नैन

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान फील्ड में आयोजित विभिन्न गतिविधियाँ

मंडल कार्यालय भुवनेश्वर

मंडल कार्यालय, कुरुक्षेत्र

मंडल कार्यालय, जबलपुर

मंडल कार्यालय, पंचकुला

मंडल कार्यालय, इंदौर

मंडल कार्यालय, संगरूर

रैम, (RAM) बालेश्वर

रैम, (RAM) भोपाल

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान आयोजित सीएसआर गतिविधियाँ

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव द्वारा तमिलनाडु राज्य के मुख्यमंत्री श्री के पलानीस्वामी को सीएसआर गतिविधि के अंतर्गत एंबुलेंस भेंट की गई। इस कार्यक्रम में अंचल प्रबंधक श्री विनोद कुमार, मंडल प्रमुख चेन्नई दक्षिण श्री मोहम्मद मख्सूद अली एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

मंडल कार्यालय, मंडी

मंडल कार्यालय, जीन्द

मंडल कार्यालय, मिदनापुर

मंडल कार्यालय, अलवर

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा अंचल कार्यालय दिल्ली का निरीक्षण।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा दिनांक 26.10.2020 को हमारे अंचल कार्यालय दिल्ली तथा दिल्ली स्थित कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (उत्तर दिल्ली), केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड तथा भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, दिल्ली का राजभाषायी निरीक्षण किया गया।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण के समन्वय का कार्य पंजाब नैशनल बैंक को सौंपा गया था। जिसे पंजाब नैशनल बैंक द्वारा सफलतापूर्वक पूर्ण किया गया। संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति के निरीक्षण के दौरान समिति के निम्नलिखित सदस्य उपस्थित रहे:

संसद सदस्य	पदनाम
श्री भर्तृहरि महताब	उपाध्यक्ष, संसद सदस्य (लोक सभा)
डॉ. मनोज राजोरिया	सदस्य, संसद सदस्य (लोक सभा)
डॉ. अमी याज्ञिक	सदस्य, संसद सदस्य (राज्य सभा)
श्रीमती कान्ता कर्दम	सदस्य, संसद सदस्य (राज्य सभा)
सुश्री सरोज पाण्डेय	सदस्य, संसद सदस्य (राज्य सभा)
समिति सचिवालय के अधिकारीगण	
श्री गोपी चंद छावनिया	सचिव (समिति)
डॉ. सत्येन्द सिंह	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
श्री विकास वर्मा	हिंदी अधिकारी
श्री मुकेश शर्मा	अनुसंधान सहायक
श्री अब्दुल मोहीब	सहायक
वित्त मंत्रालय से उपस्थिति	
श्री सुधीर श्याम	आर्थिक सलाहकार
श्री संजय कुमार	उप सचिव
श्री सर्वेश कुमार मिश्रा	सहायक निदेशक - राजभाषा
पंजाब नैशनल बैंक से उपस्थिति	
प्रतिनिधि - प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली	
नाम	**पदनाम**
श्री बी. एस. मान	मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा)
श्रीमती मनीषा शर्मा	सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
श्री बलदेव कुमार मल्होत्रा	मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा)

अंचल कार्यालय, दिल्ली	
श्री राम कुमार,	अंचल प्रमुख
श्री मुकेश दवे,	उप अंचल प्रमुख
श्री भारतेन्दु पंत,	सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

अंचल कार्यालय दिल्ली का राजभाषायी निरीक्षण सफल रहा एवं माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण के दौरान प्रश्नावली के विभिन्न मदों पर सविस्तार चर्चा की गई तथा संसदीय राजभाषा समिति ने पंजाब नैशनल बैंक द्वारा राजभाषा में किए जा रहे कार्यों तथा डिजिटलाईजेशन सहित भारत सरकार के निर्देशों के अनुपालन में क्रियान्वित की जा रही विभिन्न योजनाओं की भी प्रशंसा की गई। उन्होंने आगे कहा कि पंजाब नैशनल बैंक द्वारा राजभाषा हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं का अधिकाधिक प्रयोग कर ग्राहकों तक पहुचना अत्यंत प्रशंसनीय है इसे निरंतर आगे बढ़ाते रहें।

इस अवसर पर पंजाब नैशनल बैंक द्वारा राजभाषा प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। संसदीय राजभाषा समिति के सभी सदस्यों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया और पंजाब नैशनल बैंक द्वारा राजभाषा के उत्थान के लिए किए जा रहे प्रयासों की पुनः एक बार सराहना की और कहा कि पंजाब नैशनल बैंक का राजभाषा कार्यान्वयन अन्य संस्थाओं के लिए भी अनुकरणीय है।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब का स्वागत करते हुए श्री राम कुमार अंचल प्रमुख, अंचल कार्यालय, दिल्ली।

निरीक्षण बैठक के दौरान संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यों के साथ उपस्थित पीएनबी के उच्चाधिकारीगण।

निरीक्षण बैठक के दौरान पीएनबी के उच्चाधिकारीगण के साथ चर्चा करते हुए माननीय संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यगण।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि मेहताब का स्वागत करते हुए श्री बी. एस. मान मुख्य महाप्रबंधक-राजभाषा, प्रधान कार्यालय, द्वारका, नई दिल्ली।

निरीक्षण बैठक के दौरान पीएनबी द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए संसदीय समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि मेहताब, साथ में हैं मुख्य महाप्रबंधक श्री राम कुमार अंचल प्रमुख, दिल्ली अंचल तथा अन्य उच्चाधिकारीगण।

बैंक में सतर्कता प्रबंधन सुधार नीतिगत-सतत प्रक्रिया

डॉ. अरुण गोयल
सहायक महाप्रबंधक
सतर्कता प्रभाग
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

पीएनबी अपनी सुदृढ़ नीतियों व अनुपालन संस्कृति के लिए जाना जाता है तथापि समय के बदलाव नियामक प्राधिकारी के मार्गदर्शन, तकनीकी सुधार, ग्राहकों की आवश्यकताओं एवं फील्ड में कार्यरत स्टाफ का कार्य सुचारू रूप से करने हेतु हमारा बैंक समय-समय पर अपनी नीतियों, प्रणाली एवं प्रक्रियों को अपडेट तथा अपग्रेड करता रहता है।

बैंकिंग उद्योग में अपनी अग्रणी भूमिका बनाए रखने हेतु हमारा बैंक समय-समय पर प्रणालीगत सुधार करता रहा है। इस दिशा में अभी कुछ समय में प्रणालीगत सुधार किए गए हैं जो निम्न प्रकार हैं।

1. स्टाफ जवाबदेही मामलों की ट्रैकिंग और निगरानी (TMSAC) पोर्टल:-

बैंक द्वारा स्टाफ जवाबदेही मामलों की ट्रैकिंग और निगरानी के लिए एक ऑनलाइन पोर्टल जो पूर्णतः एचआरएमएस (HRMS) इंटरफेस के साथ आंतरिक संसाधनों के माध्यम से विकसित किया गया है। विभिन्न प्रभागों से उपयोगकर्ता शुरुआती बिंदु से अंतिम आदेश तक केस विवरण को वास्तविक समय के आधार पर ट्रैक/अद्यतन कर सकते हैं। आंकड़ों/सूचना को कॉर्पोरेट मेमोरी के रूप में भविष्य के संदर्भ के लिए डिजिटल लाइब्रेरी में संग्रहीत किया जा सकता है।

2. मानक परिचालन प्रक्रियाएं:-

बैंक दिशानिर्देशों के विचलन को रोकने के लिए सभी प्रमुख परिचालन कार्यों पर प्रभागों द्वारा एसओपी (SOP) तैयार किए गए हैं और फील्ड पदाधिकारियों के लिए उन्हें पीएनबी नॉलेज सेंटर पोर्टल पर अपलोड कियो गयो है।

3. नीतियों का संशोधन:-

ई-ओबीसी व ई-यूएनआई के पीएनबी में समामेलन के पश्चात बैंक की नीति संबंधी दिशा-निर्देशों के बारे में स्टाफ सदस्यों के त्वरित संदर्भ हेतु संबंधित प्रभागों द्वारा प्रमुख नीतियों में समीक्षा संशोधन किए गए हैं।

4. पीएनबी सतर्कता नियमावली का अद्यतन:-

समामेलित इकाई में सतर्कता कार्यों के बारे में बेहतर समझ और स्पष्टता लाने के लिए, पीएनबी सतर्कता नियमावली को सीवीसी (CVC) नियमावली 2017 और पिछले 2 वर्षों के दौरान केन्द्रीय सतर्कता कमीशन (CVC), वित्तीय सेवाएँ प्रभाग (डीएफएस), एमओएफ (MOF) द्वारा जारी निर्देशों, परामर्शों को शामिल करते हुए अद्यतन किया गया है। मैन्यूअल सॉफ्ट फॉर्म में पीएनबी नॉलेज सेंटर पर भी उपलब्ध है।

5. स्टाफ जवाबदेही नीति:-

बैंक में उपयुक्त सतर्कता प्रशासन की भावना को बनाए रखने के लिए एसओपी (SOP) बनाने के साथ-साथ सर्वोत्तम व्यवस्थाओं के साथ इसे संरेखित करने के लिए स्टाफ जवाबदेही नीति (मार्च 2020) में अपेक्षित संशोधन किए गए हैं।

6. व्हिसल ब्लोअर नीति:-

बैंक की व्हिसल ब्लोअर नीति को संशोधित कर निगरानी प्रणाली को और भी सुदृढ़ किया गया है। इस नीति का उद्देश्य बैंक के किसी भी कर्मचारी के खिलाफ किसी भी आरोप या

शक्ति/विवेक के दुरुपयोग से संबंधित संरक्षित प्रकटीकरण प्राप्त करने हेतु व्यवस्था स्थापित करना है।

7. निवारक सतर्कता समिति (PVC) पोर्टल:-

सतर्कता विभाग ने निवारक सतर्कता की भावना को विकसित करने के लिए ऑनलाइन तंत्र के माध्यम से शाखाओं की गतिविधियों की प्रभावी रूप से निगरानी के लिए यह पोर्टल लॉन्च किया है। वर्तमान में लगभग 98% स्टाफ सदस्यों, शाखाओं और कारोबार को इसके अधीन कवर कर लिया गया है।

8. उद्यम-व्यापी धोखाधड़ी जोखिम प्रबन्धन (EFRM) समाधान:-

संदिग्ध धोखाधड़ी स्वरुप या परिदृश्यों की वास्तविक समय के आधार पर पहचान करने के लिए ईएफआरएमएस शुरू किया गया है। यह अब अलर्ट जारी करने के लिए 131 संभावित परिदृश्यों को कवर कर रहा है, जिनमें से 41 परिदृश्य निवारक मोड में हैं और 90 परिदृश्य निगरानी मोड में हैं।

9. सतर्कता अधिकारियों की भूमिकाएं और जिम्मेदारियां (KRA):-

प्रभावी सतर्कता प्रशासन के लिए पीएनबी व बैंक के अधीन आरआरबी (RRB) में सतर्कता अधिकारियों की भूमिकाएं और जिम्मेदारियां (KRA) विकसित की गई हैं व उनके पद को सहायक महाप्रबंधक/मुख्य प्रबंधक तक अपग्रेड किया गया है।

10. प्रशिक्षण और जागरूकता:-

a) निवारक सतर्कता तंत्र को मजबूत बनाने के लिए, CVC के निर्देशानुसार प्रबंधन प्रशिक्षुओं और मिड कैरियर प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए निवारक सतर्कता सत्र शुरू किए गए हैं।

b) ज्ञान अद्यतन के साथ बैंक के निरीक्षण और लेखा परीक्षा प्रभाग को मजबूत करने और निरीक्षण अधिकारियों को शाखाओं के साथ कमियों के बारे दैनिक आधार पर विचार-विमर्श करने एवं उसी समय कमियों को दूर करने की सुविधा शुरू करना।

c) अनुशासनात्मक प्राधिकारियों के लिए वेब आधारित/ऑनलाइन प्रशिक्षण सत्र का आयोजन करना और उचित आरोप निर्धारण के लिए जागरूकता/संवेदनशीलता निर्माण करना।

11. लीवरेज प्रौद्योगिकी/स्वचालन:-

a. कर्मचारियों के आचरण, अवकाश प्रबंधन, एक्सेस प्रबंधन आईपी पता असाइनमेंट आदि की प्रभावी निगरानी के लिए सीबीएस के साथ एचआरएमएस का एकीकरण।

b. सीबीएस के साथ बाहरी सीबीएस अनुप्रयोगों (जैसे ट्रेजरी) का एकीकरण।

c. टीएमएसएसी (TMSAC) पोर्टल में रिकॉर्ड का 2015 से डिजिटलीकरण।

d. शीर्ष प्रबंधन स्तर तक एस्केलेशन मैट्रिक्स के साथ अधिक प्रभावी ऑनलाइन शिकायत प्रबंधन।

e. अधिक प्रभावी कानूनी मामलों का प्रबंधन, अर्थात् कोर्ट, सीबीआई के साथ शीर्ष प्रबंधन तक एस्केलेशन मैट्रिक्स उपलब्ध कराना।

f. एचआरएमएस के साथ आवासीय घरों और वाहनों के आबंटन प्रणाली के एकीकरण पर विचार।

12. पीएनबी प्राइड:-

पीएनबी प्राइड के नाम से एक मोबाइल एप विकसित किया गया है जिसके माध्यम से MSME में दो मॉड्यूल लीड मैनेजमेंट तथा SMA मोनिटरिंग बनाए गए हैं। RBD के द्वारा फील्ड फंक्सनरी की विभिन्न गतिविधियों का विवरण रखने का प्रावधान है। विजिलेंस विभाग सतर्कता अधिकारयों द्वारा की जा रही विभिन्न गतिविधियों की मोनिटरिंग, कंट्रोलिंग अथोरिटी द्वारा संभव है।

उपरोक्त नीतिगत सुधारों के माध्यम से फील्ड में कार्यरत स्टाफ सदस्यों का ज्ञान अद्यतन होगा, बैंक की कार्यप्रणाली में सुधार एवं गुणवत्तापूर्ण कारोबार में बढ़ोतरी होगी।

दिलीप जूथी
सहायक महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

"अपनी अंत: चेतना के प्रति सतर्कता ही जीवन का मूल मन्त्र है"

उपर्युक्त उक्ति "सर्वश्रेष्ठ की उत्तरजीविता" के कथन की सिद्धि के लिए सतर्क रहने की इच्छा से उद्भूत है। प्राचीन काल से मानव जाति अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है। उसकी आवश्यकताएं, उसकी आकांक्षाएं जागरूकता के स्तर में बदलाव के साथ-साथ बदल रही हैं। यह जागरूकता वह अपने अनुभव या संयोग से एकत्रित करता रहा है। गुफाओं से लेकर आधुनिक सभ्यता तक, यह लंबी यात्रा केवल सतर्क प्रवृत्ति, विशेषतः अपने अस्तित्व से सम्बंधित खतरों के बारे में सतर्क रहने, से संभव हो पाई है और इस तरह मानव जाति का विकास बढ़ता गया। आग की खोज, पत्थरों से उपकरण बनाना, पहिए का आविष्कार, पशु पालना, खेती करना आदि कुछ मील के पत्थर थे जो समृद्धि की ओर उनकी यात्रा में प्राप्त हुए। ज्ञान प्राप्त करने और सतर्क रहने की इस अभिलाषा ने आज मानव जाति को आधुनिक जीवन शैली में पहुँचा दिया है और उसका यह संघर्ष आज तक जारी है। उसकी सतर्कता स्तर में वृद्धि ने, विशेष रूप से शिक्षा के आगमन के साथ, विकास और समृद्धि की प्रक्रिया को और तेज किया है। जितना वह सतर्क हुआ, उतना वह अपने लिए, अपने परिवार, अपने समाज, अपने देश और दुनिया, जिसका वह एक महत्वपूर्ण भाग है, के लिए अधिक समृद्धि ला पाया है। सतर्कता और 'समृद्धि' के बीच यह महत्वपूर्ण संबंध आज भी प्रासंगिक है और हमारे देश में 27 अक्टूबर, 2020 से 2 नवंबर, 2020 तक मनाए जा रहे 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' के लिए चुने गए इस वर्ष के विषय –**"सतर्क भारत, समृद्ध भारत"**; VIGILANT INDIA PROSPEROUS INDIA) के औचित्य को उचित ठहराता है।

महान स्वतंत्रता सेनानी और दूरदर्शी – **भारत के लौह पुरुष**, स्वर्गीय सरदार वल्लभभाई पटेल के जन्मदिन के उपलक्ष्य में, भारत में प्रति-वर्ष अक्टूबर माह में सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया जाता है। सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाने की परंपरा, आधुनिक भारत की एक सशक्त संस्था–**केंद्रीय सतर्कता आयोग** द्वारा शुरू की गई है, जिसका शिलान्यास हमारे देश में भ्रष्टाचार के उन्मूलन और अच्छे-प्रशासन व्यवस्थाओं को स्थापित करने के उद्देश्य से किया गया था। चूंकि भ्रष्टाचार सभी बुराइयों का मूल कारण है, इसलिए यह जागरूकता सप्ताह देश के प्रत्येक नागरिक को हमारे देश की विकास प्रक्रिया में भ्रष्टाचार से हो रहे नुकसान के बारे में संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से मनाया जाता है। हमारे रोजमर्रा के जीवन में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता और जीवनशैली में नैतिकता को सम्मिलित कराने की दिशा में किया गया एक सतत प्रयास है और जिसके माध्यम से भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में योगदान देने और हमारे देश की प्रगति और समृद्धि के लिए प्रत्येक नागरिक की आंतरिक चेतना को जगाने का एक कड़ीबद्ध अभियान है।

हमारे देश की अर्थव्यवस्था दुनिया की तेजी से बढती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और आने वाले समय में हमें विश्व की महाशक्तियों में से एक के रूप में देखा जा रहा है। हमारे पास यह गौरव हासिल करने की क्षमता भी है। भारत ने महान दूरदर्शी, महान वैज्ञानिक और महान अर्थशास्त्री इस दुनिया को दिए हैं। इस देश का युवा हर क्षेत्र में राष्ट्रीय ध्वज को ऊंचा करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहा है। स्वतंत्रता के बाद से भारत के लोगों द्वारा दिखाया गया विकास पथ, अपने आप में एक उदाहरण है। लेकिन इस सफलता की कहानी की गति को भ्रष्टाचार के कालरूपी सर्प ने बुरी तरह से ग्रसित किया है, जो जीवन के हर पड़ाव को प्रभावित करता है। हम भ्रष्टाचार को अपने दैनिक जीवन के हर क्षेत्र में पर फैलाते हुए देख रहे हैं। **"पैसा सब काम करवाता है"** हमारी दैनिकी का एक कटु सत्य बन कर रह गया है। भ्रष्टाचार ने हमारे देश में अपनी गहरी जड़ें जमा ली हैं। चाहे वह सार्वजनिक क्षेत्र हो या निजी क्षेत्र, भ्रष्टाचार एक बड़ी चुनौती बनकर उजागर हुआ है। यह न केवल विकास की गति को धीमा कर रहा है, बल्कि इसे नीचे भी खींच रहा है।

किसी भी देश में प्रचलित भ्रष्टाचार का स्तर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर **"भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक"** (Corruption Perception Index) के माध्यम से **'अंतर्राष्ट्रीय पारदर्शिता'** द्वारा आंका जाता है। जो सार्वजनिक क्षेत्र के भ्रष्टाचार के कथित

स्तर को, 0 से 100 के पैमाने पर हर देश को क्रमांकित करता है। जितना उच्चतर CPI सूचकांक, उतना भ्रष्टाचार का निचला स्तर है और जितना कम CPI सूचकांक स्तर, उतना उस देश में भ्रष्टाचार का स्तर उच्चतर माना जाता है। उन्होंने भ्रष्टाचार को **"निजी लाभ के लिए सार्वजनिक शक्ति के दुरूपयोग"** के रूप में परिभाषित किया है। 2019 में 180 देशों के सर्वेक्षण के अनुसार, भारत को क्रमशः सीपीआई स्कोर 87-85 की सीमा के साथ, शीर्ष पांच सबसे कम भ्रष्ट अर्थव्यवस्थाओं के रूप में न्यूजीलैंड, डेनमार्क, फिनलैंड, सिंगापुर और स्विट्जरलैंड जैसी तुलनात्मक छोटी अर्थव्यवस्थाओं के मुकाबले, 41 CPI स्कोर के साथ 80 **वें स्थान पर रखा गया है**। हाल के एक सर्वेक्षण से यह भी पता चलता है कि CPI और प्रति व्यक्ति वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (RGDP/Cap) के बीच महत्वपूर्ण संबंध है। सर्वेक्षण में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि उच्च RGDP वाले देशों में आमतौर पर भ्रष्टाचार कम होता था। जहाँ तक भ्रष्टाचार का संबंध है, दो अन्य प्रोविसस - **ब्लैक मार्केट गतिविधि** और **नियमों की अधिकता** आग में ईंधन डालने का कार्य करती है।

हमें हमारे अधिकारों की रक्षा के लिए, अपने व्यक्तिगत जीवन में तथा अपने सार्वजनिक जीवन में सतर्क रहना होगा। सशस्त्र बलों को देश की क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए सीमा पर सतर्क रहना होगा, कारखाने में काम करने वालों को उचित पारिश्रमिक और अच्छे कार्य वातावरण हेतू अपने अधिकारों के प्रति सतर्क रहना होगा, कारखाने के मालिक को अपनी पूंजी सुरक्षा के लिए सतर्क रहना होगा, रोगी को नैतिक उपचार के अपने अधिकारों के प्रति सतर्क रहना होगा, एक छात्र को शिक्षा के अपने अधिकार के प्रति सतर्क रहना होगा और इसी तरह शिक्षक को भी **देश के भविष्य निर्माण** के प्रति सतर्क रहना होगा। आर्थिक मोर्चे पर, देश को अन्य देशों से वैश्विक स्तर पर सामना कर रही विदेश व्यापार नीति के प्रति सतर्क रहना होगा। अपने प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करते हुए भी, किसी को इस हद तक सतर्क रहना होगा कि वह प्रकृति में असंतुलन पैदा न करे। इस संदर्भ में हमें राष्ट्रपिता बापूजी के वचन - **"हमारे संसाधन हर किसी की जरूरत के लिए पर्याप्त हैं, लेकिन हर किसी के लालच के लिए नहीं"** को सदा यथार्थ करना हैं।

'सतर्कता' को निम्नानुसार शब्दांश द्वाराः परिभाषित किया गया है:

"संभावित खतरे या कठिनाइयों पर निगरानी रखने की क्रिया या स्थिति"

वित्तीय क्षेत्र में सतर्कता की भूमिका का अपना महत्व है विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में, जहां हर लेनदेन पैसे के ईर्दगिद घूमता है। यह सतर्कता **'निवारक सतर्कता'**, **'निगरानी सतर्कता'** या **'दंडात्मक सतर्कता'** के रूप में हो सकती है। जमाकर्ता को अपने पैसे की सुरक्षा के बारे में, ग्राहक को अपने अधिकारों के बारे में सतर्क रहना होगा तो दूसरे समकक्ष अर्थात् उधारकर्ताओं के साथ भी ऐसा ही अपेक्षित है। यदि उधारकर्ता वित्तीय संस्थान के ऋण देने के नियमों और विनियमों के बारे में सतर्क है और आवाज उठाने के वैकल्पिक चैनलों के प्रति जानकार है तो वह बहुत अच्छी तरह से "बिना किसी परेशानी" के अपना कार्य पूर्ण करा सकता है। लेकिन इससे ऊपर, एक सतर्क बैंकर **सार्वजनिक धन के संरक्षक** की अपनी भूमिका का निर्वाह कैसे करे, यह एक बहुत बड़ा प्रश्न उसके सामने खड़ा है। इस प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए एक बैंकर को सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी, नैतिकता और उत्तम आचार दिखाने पर बार-बार जोर दिया जाता है।

उपरोक्त तीन उपायों में से **'निवारक सतर्कता'** बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जैसा कहा गया है **"सही समय पर उठाया गया छोटा सा कदम भविष्य की बड़ी समस्याओं से बचाता है"**। वर्तमान समय में, इन संस्थानों/बैंकों द्वारा अपनाई गई प्रौद्योगिकी को प्रभावी ढंग से **सतर्कता-उपकरण** के रूप में उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, प्रणाली - संचालित **'अलर्ट'** किसी भी खाते में 'असामान्य' या 'संदिग्ध' लेनदेन के मामले के प्रति पूर्व सचेत करता है। धोखाधड़ी से बचने के लिए **'रिंग-फेंसिंग'** किया जाता है। नए खुले खातों में लेनदेन के मामले में स्क्रीन पर प्रणाली द्वारा संदेशों को फ्लैश किया जाता है। **"एक खाते"** से लेकर **"संपूर्ण बैंक"** स्तर पर ऑनलाइन ट्रांजेशजन, प्रोसेसिंग सिस्टम की सहायता से, विशेष रूप से निगरानी और नियंत्रण के उद्देश्य के लिए, वांछित एमआईएस (MIS) को प्राप्त किया जा रहा है। एंटरप्राइज डेटा वेयरहाउस (EDW) को प्रभावी सतर्कता के लिए एक मजबूत टूल (Tool) के रूप में परखा गया है।

इस वर्ष के लिए, सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान दिया गया विषय **"सतर्क भारत, समृद्ध भारत"** उपयुक्त रूप से प्रासंगिक रहा है, वर्तमान दौर के तथ्यों के परिपेक्ष्य में, भारतीय अर्थव्यवस्था एक विकास पथ पर है और इसे दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में देखा जा रहा है। 2019 तक, भारतीय अर्थव्यवस्था लगातार अच्छा प्रदर्शन

कर रही है और लगभग 7% की जीडीपी विकास दर को प्राप्त किया है। एक महत्वपूर्ण कारक, जो अर्थव्यवस्था की वृद्धि और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, की पहचान **'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस'** में की जाती है। **'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस'** की दिशा में प्रगतिशील कदम उठाते हुए, कई सुधार उपाय शुरू किए गए हैं। हालाँकि, इस प्रक्रिया के दौरान, 'सार्वजनिक क्षेत्र', जिसमें सरकारी, संस्थान, वित्तीय और गैर-वित्तीय, शामिल है, संदेह के घेरे में आते हैं। यह महसूस किया गया है कि भ्रष्ट-मुक्त कार्य संस्कृति सुनिश्चित करना राज्य की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। इसके लिए, विभिन्न स्तरों पर तैनात सतर्कता-तंत्र को सक्रिय मोड पर रखना होगा। सार्वजनिक स्थान पर ईमानदारी और अखंडता दिखाने के महत्व के बारे में लोगों को जागरूक करना होगा और यह एकमात्र तरीका है जिसके माध्यम से हम आर्थिक-विकास में तेजी को सुनिश्चित कर सकते हैं। यहां तक कि दंडात्मक प्रावधानों का एक निवारक उपाय के रूप में कार्यान्यवन करना चाहिए।

इन संवेदनशील अभियानों के माध्यम से जैसे वर्तमान में - **"सतर्क भारत, समृद्धि भारत"**, हम लोगों को यह समझने की आवश्यकता है कि कैसे सतर्क रहते हुए, एक अर्थव्यवस्था के विकास और तरक्की में अपना महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं और इसे और अधिक समृद्ध बना सकते हैं। यदि हम अर्थव्यवस्था की वृद्धि में क्षेत्रवार योगदान देखते हैं, तो **'सेवा-क्षेत्र'** ने 10% से अधिक की वृद्धि दर्ज करके एक बेहतर सुधार दिखाया है। 'सेवा-क्षेत्र' द्वारा दिखाए गए विकास में बैंकिंग-क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है। यह 'फार्म-सेक्टर' को आसान शर्तों पर कम ब्याज दर पर मदद करता है, व्यावसायिक समुदाय की प्रारंभिक 'कार्यशील पूंजी की जरूरते' पूरी करता है और परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था की वृद्धि-प्रक्रिया को गति प्रदान करता है।

इसके अलावा, वर्तमान में दुनिया **कोरोना-19** महामारी की वैश्विक चुनौती से गुजर रही है, जिसने दुनिया की सभी अर्थव्यवस्थाओं को उलझा दिया है। दूसरा अत्यधिक आबादी वाला देश होने के करण भारत भी इस आपदा का शिकार हुआ है। इसका अर्थव्यवस्था पर भी बहुत बुरा असर पड़ा है। इस वित्तीय वर्ष की पहली छमाही मे, हर आर्थिक गतिविधि पर इसका असर पड़ा है। जानलेवा कोरोना- वायरस से जीवन को, जाति, पंथ और लिंग निरपेक्ष हर व्यक्ति, अमीर या गरीब, बुजुर्ग, युवा या बच्चे के लिए, बचाना सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिकता बन गया है। सरकार द्वारा लोगों के जीवन को बचाने के लिए लगाया गए **'लॉक-डाउन'** का अर्थव्यवस्था के विकास पर प्रभाव पड़ा है। लोग, विशेष रूप से प्रवासी मजदूर, सुरक्षा के लिए अपने मूल स्थानों पर जा रहे हैं। व्यापार और उद्योग में अभूतपूर्व गिरावट देखी जा रही है। तृतीय श्रेणी (Tertiary Sector) के उद्योग में भी, **'वर्क फ्रॉम होम'** की अवधारणा शुरू की गई थी, जिसने समग्र उत्पादन और उत्पादकता पर भी भारी सेंध लगी है। एक आम आदमी की आधारभूत जरूरतों को पूरा करने लिए और उत्पादन का एक उचित स्तर सुनिश्चित करने के लिए, सरकार द्वारा अर्थव्यवस्था को **'अन-लॉक'** करने का सतर्क निर्णय लिया गया है। इस परीक्षा की घड़ी में, हर संभव सहायता प्रदान करने के लिए सरकारी एजेंसियों की सर्वोच्च प्राथमिकता बन गई है। क्षति नियंत्रण अभ्यास के रूप में, विभिन्न राहत उपायों को शुरू किया गया है, समर्पित धनराशि जारी की गई है और अर्थव्यवस्था को जल्द से जल्द वापस लाने के लिए नीतिगत घोषणाएं की गई हैं। अब इन सभी पहलों की सफलता, कार्यान्वयन एजेंसियों की, ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारी के निर्वाह, पर बहुत अधिक निर्भर करती है, जिसमें अन्य बातों के साथ सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक भी शामिल हैं। इस समय, प्रत्येक घटक को अतिरिक्त सतर्क रहना होगा। प्रत्येक कार्य पर एक करीबी नजर रखनी होगी और एक पूर्ण प्रमाणित निगरानी तंत्र को अपनाना होगा, जो एक ईमानदार, पारदर्शी और नैतिक कार्य संस्कृति सुनिश्चित करने में एक प्रभावी उपकरण के रूप में कार्य करे।

इसलिए, **'सतर्कता जागरूकता सप्ताह'** का जश्न एक वार्षिक रस्म के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए बल्कि लोगों को अज्ञानता से जगाने के एक प्रयास के रूप में लिया जाना चाहिए। इसलिए उनके संबंधित डोमेन में सतर्कता के महत्व के बारे में उन्हें जागरूक करना चाहिए, क्योंकि यह हमारी सर्वोपरि जिम्मेदारी है कि कार्य स्थल पर हम पूरी ईमानदारी, निष्ठा और नैतिकता दिखाएं। ऐसा करने से, जो आत्म संतुष्टि और आनंद की अनुभूति होती है वह किसी भी इनाम या मान्यता की मोहताज नहीं होती है। इस दिशा में हमारे द्वारा उठाया गया एक छोटा सा कदम भारत को सशक्त बनाने के लिए एक मील का पत्थर सिद्ध होगा। आइए सार्वजनिक नैतिकता के उच्च मानदंड स्थापित करें, दूसरों के लिए एक रोल मॉडल बनें और **"सतर्क भारत, समृद्ध भारत"** के कथन को सार्थक करें।

प्रत्येक देशवासी को यह सपना खुली आँखों से देखना है- सतर्क और जागरूक आँखों से।

सूक्ष्म स्तर पर निवारक सतर्कता

राजेश कुमार शर्मा
मुख्य प्रबन्धक
सतर्कता प्रभाग
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

बैंकों के पास सामान्य जनता से एकत्रित निधियों/जमा राशियों को सुरक्षित रखने का बहुत बड़ा दायित्व है। चूंकि रोकथाम हमेशा उपचार से बेहतर होती है, इसलिए हमें पहले से उपलब्ध अपने निवारक उपायों को अपग्रेड/सुधारते रहने की आवश्यकता होती है, ताकि प्रौद्योगिकी, नियामक वातावरण और लोगों की मानसिकता में परिवर्तन के साथ, विशेष रूप से धोखेबाजों/समाज के अवांछित तत्वों से दो कदम आगे रहें।

किसी भी बैंकिंग संगठन का, जमीनी स्तर पर एवं उन सभी स्तरों पर जहां निर्णय लेना/विवेकाधिकार का प्रयोग करना शामिल हो, दैनिक कार्यों में सतर्कता, जागरूकता तथा पद्धति व प्रक्रियाओं के अनुपालन के व्यापक प्रचार-प्रसार का मिशन होना चाहिए। यह व्यापक प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए आवश्यक है, जो दीर्घावधि में सभी हितग्राहियों को धोखाधाडी से बचाएगा।

तीन गतिविधियों में से निवारक सतर्कता सबसे पहली है तथा इसके बाद जासूसी सतर्कता और दंडात्मक सतर्कता आती है, जो "360 डिग्री" सतर्कता पर्यावरण तैयार करती है। निवारक उपायों में व्यापक रूप से निम्नलिखित सक्रिय उपाय शामिल हैं: -

1. एक ऐसी संस्कृति का निर्माण करना जिसमें किसी कार्य में कोई कमी न छूटे, किसी भी बैंकिंग गतिविधि के प्रति कोई लापरवाही वाला दृष्टिकोण न हो, यद्यपि यह कितना भी नगण्य या निरर्थक प्रतीत हो। इसमें ग्राहकों और काउंटर पर हमारे अग्रिम पंक्ति स्टाफ के बीच होने वाले दैनिक लेनदेन को कवर करना चाहिए जैसे नकदी जमा के लिए प्रिंटेड रसीद जारी करना, उपयुक्त व्यक्ति/प्राधिकृत व्यक्तियों को वैकल्पिक डिलीवरी चैनल उत्पाद प्रदान करना, केवल चपरासी द्वारा ही वाउचरों/आहरण पर्चियों/चेकों और अन्य रिकॉर्ड को हैंडल करना आदि। अन्य स्तरों पर, इसमें ग्राहकों की साख का सत्यापन, निवास/कार्य स्थल/संपत्ति का दौरा/सरकारी रिकॉर्ड या प्रमाणपत्रों का सत्यापन, उधारकर्ताओं/गारंटीदाताओं पर सीआर आधारित तथ्य संकलित करना, तुलन पत्र/लाभ और हानि और अन्य का विश्लेषण शामिल किया जा सकता है।
2. कर्मचारियों के बीच सतर्कता की आदत को प्रारंभिक अवधि के दौरान ही रोपित किया जाना चाहिए और उसे समय-समय पर कौशल और ज्ञान को उन्नत करने के लिए महत्वपूर्ण इनपुट्स/प्रशिक्षणों के माध्यम से आगे बढ़ाना चाहिए।
3. एमआईएस में आवश्यकतानुसार रिपोर्ट/विवरणियों को तैयार करते हुए प्रणाली की अखंडता और पारदर्शिता सुनिश्चित करना ताकि किसी भी स्तर पर किए गए किसी भी विचलन को जाँच के माध्यम से सुगमता से ज्ञात किया जा सके। यह उन लोगों के लिए निवारक के रूप में काम करेगा जो लापरवाही दृष्टिकोण या शॉर्टकट का सहारा लेते हैं और "समय रहते संभलने से बड़ी आफत टलती है" के अनुरूप सरलता से उनकी निगरानी की जा सकेगी।
4. सत्कार करने/प्रोत्साहन देने की एक प्रणाली उन कर्मचारियों के लिए शुरू की जानी चाहिए जो सतर्क रहते हैं और जिनके सक्रिय योगदान से हमारे संगठन का वित्तीय या प्रतिष्ठा संबंधी हानि से बचाव हुआ हो। हम प्रति माह, तिमाही या छमाही जो भी उपयुक्त समझा जाए, में प्रत्येक मंडल/अंचल में "सतर्कता चैम्पियन" नामित करने की प्रणाली शुरू कर सकते है।

अंत में, मैं पुनः इस पर बल देना चाहूंगा कि जैसे-जैसे कि हम पारंपरिक बैंकिंग से आधुनिक, प्रौद्योगिकी संचालित बैंकिंग की ओर बढ़ रहे हैं, जो अपने आप में एक अनिवार्यता है, हमें अपने प्रतिष्ठित संगठन को वित्तीय और प्रतिष्ठा संबंधी हानि से बचाने के लिए निवारक सतर्कता के पहलुओं को मजबूत करना होगा। चूंकि बैंकिंग को ग्राहकों के लिए अधिकाधिक सुविधाजनक बनाया गया है, इसलिए समाज के असमाजिक तत्वों द्वारा इसके शोषण के खतरे भी आनुपातिक रूप से बढ़ रहे हैं। ऐसे वातावरण में, एक मजबूत, प्रेरित, समर्पित कार्यबल जिसके लिए सतर्कता एक अपवाद नहीं अपितु एक नियम हो उनको सूक्ष्म स्तर पर धोखाधड़ी /दुर्घटना को रोकने के लिए बहुत सहायक होगा। यदि जमीनी स्तर पर चीजों का ध्यान रखा जाता है, तो सूक्ष्म स्तर पर समग्र कार्यक्षेत्र का माहौल निश्चित रूप से सकारात्मक होगा क्योंकि कई छोटी चीजें लंबे समय तक उपेक्षित रहने से बड़ी दुर्घटना का कारक बनती हैं।

पीएनबी में 'ग्राम संपर्क अभियान' का आयोजन

भारत के दूसरे सबसे बड़े सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, पंजाब नैशनल बैंक (PNB) ने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी की जयंती के अवसर पर वित्तीय समावेशन एवं साक्षरता शिविर, 'ग्राम संपर्क अभियान' की शुरूआत कर महात्मा गांधी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री नरेंद्र सिंह तोमर, माननीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री, ग्रामीण विकास मंत्री और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री, भारत सरकार ने आधिकारिक तौर पर इस अभियान की शुरूआत की। इस अवसर पर श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, एमडी एवं सीईओ, कार्यपालक निदेशकगण और मुख्य महाप्रबंधकों सहित पीएनबी के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे।

यह अभियान चार प्रमुख विषयों नामतः डिजिटल, क्रेडिट, सामाजिक सुरक्षा और वित्तीय साक्षरता पर केंद्रित था जिससे विभिन्न गतिविधियों को बढ़ावा मिला और 'आत्मनिर्भर भारत' के मुख्य विषय को निर्दिष्ट किया। इस अभियान के आरंभ में, पीएनबी का 500 से अधिक शिविरों के आयोजन का लक्ष्य था और इस अभियान की पूरी अवधि के दौरान हर महीने 2 शिविरों/ग्रामीण शाखाओं के साथ 500 जिलों तक पहुंचने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था।

पंजाब नैशनल बैंक के संस्थापक लाला लाजपत राय जी की प्रतिमा पर पुष्पमाला अर्पित करते हुए श्री नरेंद्र सिंह तोमर जी, माननीय कृषि एवं किसान कल्याण, ग्रामीण विकास और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री, भारत सरकार।

पीएनबी में ग्राम संपर्क अभियान की शुरुआत करते हुए श्री नरेंद्र सिंह तोमर जी, माननीय कृषि एवं किसान कल्याण, ग्रामीण विकास और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री, भारत सरकार, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, कार्यपालक निदेशकगण डॉ. राजेश कुमार यदुवंशी तथा श्री विजय दुबे एवं अन्य उच्चाधिकारीगण।

डिजिटल अपनाएं अभियान

पंजाब नैशनल बैंक द्वारा "डिजिटल अपनाएं अभियान" की शुरुआत की गई। इस अभियान के तहत बैंक द्वारा पीएम केयर्स फंड में ₹ 40.14 लाख का योगदान किया गया।

इस अभियान की गति को बढ़ावा देने के लिए, 8 अक्टूबर, 2020 को पंजाब नैशनल बैंक की सभी शाखाओं में डिजिटल अपनाएं दिवस मनाया गया, प्रत्येक शाखा द्वारा व्यापारियों और वित्तीय समावेशन सेगमेंट के ग्राहकों सहित डिजिटल भुगतान मोड पर ग्राहकों को शामिल करने के दृष्टिकोण के साथ और ग्राहकों को वित्तीय लेनदेन करके अपने रुपे डेबिट कार्ड, यूपीआई और एईपीएसखातों को सक्रिय करने के लिए प्रोत्साहित किया गया ताकि वे डिजिटल अपनाने की ओर अग्रसर हो। पीएनबी अभियान के अंत तक प्रति चयनित वित्तीय लेनदेन पर पीएम केयर्स फंड को रु.5 का योगदान जारी रखेगा। इस अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा क्विज और प्रशिक्षण कार्यक्रमों जैसे विभिन्न कार्यक्रमों और गतिविधियों का आयोजन किया गया और इसे स्थानीय क्षेत्रीय मीडिया द्वारा भी कवर किया गया। इन अभियानों के बारे में जागरूकता का निर्माण करने के लिए ग्राहक बैठकें भी आयोजित की गईं जिनमें ग्राहकों को डिजिटल इंडिया बनाने में उनकी भूमिका के बारे में मार्गदर्शित किया गया।

श्री देवाशीष पांडा, सचिव, वित्तीय सेवाएँ विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार, को चेक सौंपते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव।

डिजिटल अपनाएं अभियान के दौरान आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित श्री देवाशीष पांडा, सचिव तथा श्री पंकज जैन, अतिरिक्त सचिव, वित्तीय सेवाएँ विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, कार्यपालक निदेशकगण डॉ. राजेश कुमार यदुवंशी व श्री विजय वुवे तथा अन्य उच्चाधिकारीगण।

निवारक सतर्कता

अशोक कुमार ओवर
मुख्य प्रबंधक
सतर्कता प्रभाग
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

किसी भी संगठन के लिए उसके विकास और स्थिरता को सुनिश्चित करने के लिए हितधारकों के विश्वास को बनाए रखना महत्वपूर्ण है लेकिन यह धन और वित्त से संबंधित संस्थानों के लिए विशेष रूप से सत्य है। बैंक जनता के धन के संरक्षक होते हैं और ग्राहक बैंकों के पास अपना धन और कीमती सामान रखते समय बैंकों में अपना विश्वास रखते हैं। इसलिए, कार्यबल की सत्यनिष्ठा और सम्पूर्ण सुरक्षित प्रणालियों और प्रक्रियाओं को लागू करना बैंकों में कॉर्पोरेट प्रशासन मानकों की पहचान है। बैंक द्वारा किए गए सुधारात्मक उपायों या दंडात्मक कार्रवाई के बावजूद किसी भी धोखाधड़ी या ग्राहकों के धन के दुरुपयोग की घटना घटित होने से ग्राहकों का विश्वास टूटता है और इसके परिणामस्वरूप बैंक के कारोबार में हानि होती है। इसमें "निवारक सतर्कता" की भूमिका निहित है, जो किसी भी दुर्घटना या उदाहरणों को पूर्व-रखने का प्रयास है, जो धोखाधड़ी या भ्रष्टाचार की घटना में बदल सकती है।

हाल ही में बैंकों द्वारा बड़े पैमाने पर धोखाधड़ी का सामना करना पड़ा है, जिसके बाद भी कमियों को दूर करने के लिए धोखाधड़ी करने वाले और अपराधियों के खिलाफ सख्त दंडात्मक कार्रवाई की गई थी। हालाँकि, बाद में की गई कार्रवाई और उठाए गए कदम बैंकों को हुई प्रतिष्ठा की हानि और परिणामी नुकसान को पूर्ववत नहीं कर सकते हैं और इससे बैंक अपना विश्वास खोते हैं। यह अधिक विवेकपूर्ण होता यदि प्रणाली और प्रक्रियाएं अधिक सुदृढ़ होती और किया जाए तो वह कड़ाई से क्रियान्वयन अपराधियों के बीच भय पैदा करता है कि किसी भी असंगत कार्रवाई का पता चल जाएगा। निवारक सतर्कता, प्रणालियों, प्रसंस्करण और प्रक्रियाओं का अध्ययन करने और किसी भी संभावित कमजोरियां जिससे धोखाधड़ी हो सकती है, की पहचान करने एवं सही दिशा में सुधारात्मक कदम उठाने के लिए किए गए उपायों का संपूर्ण विस्तार है।

एक सुदृढ़ निवारक सतर्कता तंत्र के कई लाभ हैं। बैंक तेजी से समझ रहे हैं कि धोखाधड़ी की घटना के घटित होने के बाद कर्मचारियों के खिलाफ किया गया दंडात्मक कार्य जैसे आर्थिक दंड या करियर प्रगति को रोकने से वांछित उद्देश्य की पूर्ति नहीं होती हैं। कर्मचारियों को हतोत्साहित किए जाने के अलावा, यह संगठन को हुए प्रतिष्ठा संबंधी और आर्थिक नुकसान की भरपाई नहीं कर सकता है। इसके बजाय यह ज्यादा विवेकपूर्ण है कि एक ऐसा वातावरण बनाने में समय और ऊर्जा का निवेश किया जाए जहां धोखाधड़ी न हो सके।

निवारक सतर्कता एक सतत प्रक्रिया है और यह संगठन में काम करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को उसके किसी भी पद पर होने के बावजूद प्रभावित करती है। यह विभिन्न हितधारकों के बीच सतर्कता और जागरूकता की भावना पैदा करने और बैंक के दैनिक कार्यों में प्रणालियों और प्रक्रियाओं के साथ व्यापक अनुपालन की संस्कृति का निर्माण करने का प्रयास करती है। फील्ड स्तरों पर कर्मचारियों का समर्थन और भागीदारी स्टाफ सदस्यों के बीच जागरूकता पैदा करके अनियमितताओं पर अंकुश लगाने के लिए जरूरी है क्योंकि एक अच्छे अनुपालन संस्कृति का पालन करना उनके स्वयं के हित में है। "रोकथाम इलाज से बेहतर है" यही हमारा उद्देश्य होना चाहिए।

निवारक सतर्कता तेजी से सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थानों में सबसे प्रभावी शासन तंत्र बन रही है। बैंकिंग नियामक और अन्य पर्यवेक्षी और नियंत्रक प्राधिकारी बैंकों में सतर्कता तंत्र को मजबूत करने के लिए विभिन्न उपायों का सुझाव दे रहे हैं। शीर्ष स्तर पर और संगठन में पदानुक्रम के विभिन्न स्तरों पर निवारक सतर्कता समितियों का गठन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। स्टाफ के लिए "सतर्कता जागरूकता सप्ताह" और विभिन्न भागीदारी कार्यक्रमों का आयोजन करना ऐसे उपाय हैं जो सत्यनिष्ठा और अनुपालन की भावना के निर्माण में कर्मचारियों की बढ़ती भागीदारी को प्राप्त करने के उद्देश्य से किए जाते हैं।

बैंकों के लेखापरीक्षा और निरीक्षण तंत्र से, प्रणालियों और प्रक्रियाओं का निरंतर अध्ययन करके उन्हें और अधिक मजबूत

बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की आशा की जाती है। उन्हें किए गए चूक के कारणों का विश्लेषण करने और आवश्यक जांच बिन्दुओं का विकास करने पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, जिन्हें यदि लागू किया जाए तो उन चूकों पर रोक लग सकती है। कई बार, यह भी देखा गया है कि निर्धारित प्रक्रियाओं का पालन या तो जागरूकता की कमी के कारण या ऐसी प्रक्रियाओं के अवलोकन में बाधाओं के कारण या तो पूर्णतया लापरवाही के कारण नहीं किया जाता है। चूक का कारण बनने वाली परिस्थितियों के गहन विश्लेषण के आधार पर प्रभावी सुधारात्मक कदम उठाए जाने चाहिए।

अनुपालन मानकों को पूरा करने या उच्च सत्यनिष्ठा प्रदर्शित करने वाले व्यक्तियों या इकाइयों को पुरस्कृत करना या उन्हें सम्मान देना, कर्मचारियों के बीच एक प्रतिस्पर्धात्मक भावना पैदा करेगा और संगठन में एक अनुपालन संस्कृति का निर्माण करेगा। अनुपालन को ताक पर रखकर प्राप्त किए गए व्यावसायिक लक्ष्यों की किसी भी उपलब्धि को हतोत्साहित किया जाना चाहिए। लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कोई भी शॉर्टकट या अनैतिक उपाय से उचित रूप से निपटा जाना चाहिए।

एक सुदृढ़ अनुपालन प्रक्रिया के माध्यम से कर्मचारियों के बीच मजबूत प्रक्रियाओं और अखंडता के उच्चतम मानकों के साथ युग्मित एक अच्छी अनुपालन संस्कृति का निर्माण, चूक के लिए बाद की किसी भी दंडात्मक कार्रवाई की आवश्यकता को कम करेगा। यह एक मजबूत और लाभप्रद संगठन के निर्माण के लिए कर्मचारियों की एक प्रेरित और समर्पित टीम तथा संतुष्ट ग्राहकों के समूह को विकसित करेगा।

"गलतियाँ कष्टदायक होती हैं जब वह घटित होती हैं, लेकिन बाद के वर्ष में ये गलतियां अनुभव कहलाती हैं जो सफलता की ओर ले जाती हैं।"

काली तख्ती

उसी कमरे के
काली तख्ती पर
खड़िया से
लिखता हुआ
मिल जाऊँगा
मैं तुम्हें

जिस कमरे में
वर्षों पूर्व
तुमको अंधेरे से
प्रकाश की ओर
जाने के सपने
दिखाये थे मैंने।

कोई चांद पर गया
कोई सीमा पर
शहीद हो गया
जाने कितने आए
जाने कितने गए
फिर भी मैं सभी को
उसी कमरे में मिला।

वक्त की आंधियाँ
कुछ ऐसी आई
टूट गई दीवारें
दब गई तख्तियाँ
मिट गई हस्तियाँ
अंधेरे में फिर, गुम
हो गई बस्तियाँ।

बूढ़ा बरगद खड़ा
रो रो कर कहता है सब
काली तख्ती से जहाँ
रोशनी मिलती थी यहाँ
इन लोह-कारखानों से
काला - जहरीला धुँआ
निकलती है अब।

उड़ गई सभी पंक्षियाँ
बिखर गई सभी बस्तियाँ
मैंने इसी कमरे से, तुमको
ज्ञान की रोशनी दी
उसी रोशनी में तुमने
मुझको ही जला दिया ।

स्वार्थ में आकर तुमने
ये क्या कर दिया
मानव होकर भी तुमने
मानवता का
दीपक बुझा दिया।

पछताओगे आखिरी वक्त में
फिर तुम
उस वक्त न दीवारें होगी
न होगा ये तख्ती
जिस पर तुम्हें पढ़ाता था
मानवता का पाठ।

सोचता हूँ
अक्सर मैं
मेरा अगला जन्म
इसी कमरे में हो
क्योंकि
इस तख्ती
और खड़िया से
मैंने
कई जिंदगियों को
आबाद किया है।

शशांक
शाखा प्रबन्धक
मेडावाक्कम, चेन्नई दक्षिण

सतर्कता-एक प्रयास

संजीव कुमार त्यागी
मुख्य प्रबन्धक
सतर्कता प्रभाग
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

सतर्कता का अर्थ है सावधान रहना। सतर्कता और कुछ नहीं, बल्कि होने वाली चीजों की सावधानीपूर्वक निगरानी है। यह निकट भविष्य में होने वाली अप्रिय घटनाओं के खिलाफ एक रोकथाम है। यह संभावित खतरे के लिए एक सावधान करने वाली घड़ी है। सही कहा जाता है कि "शुरुआत में ही बुराई को खत्म कर दो" और "रोकथाम इलाज से बेहतर है"। प्रत्येक व्यक्ति को हमेशा सतर्क रहना चाहिए चाहे वह घर हो या दफ्तर, यह किसी भी संगठन में रहते हुए अपने कीमती सामान और सामानों पर नजर रखने की मनुष्य की प्रवृत्ति रही है। यह शीर्ष प्रबंधन का प्रयास है कि वह अपने सुचारू कामकाज और बेहतरी के लिए संगठन के मामलों के प्रति सतर्क रहे।

एक कहावत है "ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है"। सच्चाई या ईमानदारी व्यक्ति का व्यक्तिगत धर्म-गुण है। इंसान कई चीजों से लालच करता है। किसी संगठन के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि उसके कर्मचारी ईमानदार, समर्पित और समय के पाबंद हों। यह एक संगठन में कर्मचारियों के बीच अपनेपन और सच्चाई की भावना को विकसित करने के लिए एक सतत प्रक्रिया है।

बैंक वित्तीय संस्थान हैं जो कि जनता और अन्य संस्थानों द्वारा जमा किए गए धन का लेनदेन करते हैं। इसलिए वे जनता के पैसे के ट्रस्टी हैं। पैसा किसी भी देश की अर्थव्यवस्था का जीवन और खून है। इसलिए, यह बैंकों का पहला और सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य है कि उनमें जनता का विश्वास बना रहे। साख या छवि बनाने में वर्षों लगते हैं लेकिन इसे बदनाम करने में एक पल लगता है।

इस चुनौतीपूर्ण/बदलती दुनिया में, आजकल बैंक जमाओं को स्वीकार करने और पैसे/जमा को उधार देने के अपने प्राथमिक कर्तव्यों के अलावा कई गतिविधियां कर रहे हैं। किसी भी संगठन का प्रमुख उद्देश्य व्यवसाय की वृद्धि है। ऋण देने में हमेशा जोखिम का एक तत्व होता है। जोखिम लेना बैंक के व्यवसाय का एक अभिन्न अंग है और चूक की संभावना कई अनिश्चित कारणों से होने के लिए बाध्य है।

सतर्कता समय की जरूरत बन जाती है। ईमानदार को बचाने और भ्रष्टाचारियों को दंडित करने के लिए, सुशासन एक संगठन के लिए अपने सुचारू कामकाज के लिए आवश्यक हो गया है। कई प्रयास किए गए हैं और कदम उठाए गए हैं, तकनीकी खराबी आदि के मामलों को दूर करने के लिए प्रणाली और प्रक्रियाएं विकसित की गई हैं। इसके अलावा, हमारे बैंक में सतर्कता प्रणाली को मजबूत करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जाने चाहिए:

1. सभी स्तरों पर हर कार्रवाई में स्पष्टता और पारदर्शिता।
2. समय-समय पर क्षेत्र से प्रतिक्रिया आमंत्रित करना
3. किसी भी विभाग/सीट में तैनाती से पहले कर्मचारियों को उचित प्रशिक्षण देना।
4. एसओपी (मानक संचालन प्रक्रिया) के साथ स्पष्ट और पारदर्शी दिशानिर्देश। दिशानिर्देशों के संबंध में कोई अस्पष्टता नहीं होनी चाहिए।
5. परिपत्र/दिशा-निर्देशों में सरल और संक्षिप्त भाषा का उपयोग किया जाना चाहिए, ताकि विभिन्न व्याख्या से बचा जा सके।
6. प्रणाली और प्रक्रियाएं सरल और समझने योग्य और स्पष्ट रूप से परिभाषित होनी चाहिए।
7. कर्मचारियों के बीच परिपत्र/दिशा-निर्देशों के बारे में जागरूकता बढ़ाने की आदत डालने हेतु किसी प्रेरणा/प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया जाना चाहिए।
8. पूर्व अनुमोदन और अनुमोदन के बाद की अनुवर्ती कार्रवाई के बीच स्पष्ट अंतर होना चाहिए क्योंकि गार्ड के बदलने पर अनुमोदन के बाद की अनुवर्ती कार्रवाई पूर्वस्थिति में आ जाती है और नया गार्ड इस बारे में ज्यादा चिंतित नहीं होता है।
9. ऋण स्वीकृति प्रक्रिया मानवीय इंटरफेस के न्यूनतम उपयोग के साथ आईटी संचालित होनी चाहिए।

निवारक सतर्कता में सुधार संबंधी सुझाव

पियाशो भौमिक,
मुख्य प्रबंधक
सतर्कता प्रभाग
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

बैंक में सतर्कता तंत्र का महत्व, विशेष रूप से एक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक में, संदेह से परे है। सतर्कता गतिविधियों के विभिन्न चरणों में से, निवारक सतर्कता किसी भी संगठन की सुरक्षा की पहली कड़ी है। निवारक सतर्कता की अवधारणा को "इलाज से बेहतर बचाव" की नींव पर विकसित किया गया है।

निवारक सतर्कता के सुधार पर सुझाव:-

मैंने पंजाब नैशनल बैंक में, बड़े कॉर्पोरेट ऋण, जोखिम प्रबंधन के साथ सामान्य बैंकिंग शाखा में भी काम किया है। मेरे अनुभव के आधार पर, हमारे बैंक में निवारक सतर्कता तंत्र के सुधार के संबंध में मेरे निम्नलिखित सुझाव हैं :

परिपत्रों / दिशानिर्देशों के माध्यम से स्टाफ को सहयोग प्रदान करना:-

हमारे कई परिपत्रों में ऐसे भी दिशानिर्देश हैं जो कभी-कभी अस्पष्ट लगते हैं। उदाहरण के लिए, "प्रासंगिक स्रोतों-सक्षम कार्यालयों से डाटा को सत्यापित किया जाए" जैसी पंक्तियां। इस प्रकार के दिशानिर्देशों को उसके स्त्रोत को स्पष्ट करते हुए, जैसे, डाटा को किस कार्यालय से और कैसे सुधारा जाए अर्थात वेबसाइट पता आदि बताकर सुधारा जा सकता है। शाखा के स्टाफ को अधिकांशतया अप्रशिक्षित पाया जाता है और इस प्रकार के विस्तृत दिशानिर्देश द्वारा शाखा के अनुभवहीन स्टाफ को दीर्घावधि तक दिशानिर्देशित करते रहेंगे, जिससे उनके द्वारा की जा रही गलतियों को दूर करने में सहायता मिलेगी।

सभी प्रमुख गतिविधियों के लिए विस्तृत मानक परिचालन प्रक्रिया का निर्धारण:-

सभी प्रमुख जोखिम संवेदनशील उद्योग सभी प्रमुख गतिविधियों के लिए विस्तृत मानक परिचालन प्रक्रिया (एसओपी) का पालन करते हैं। आपदाओं से बचने के लिए बैंकों के लिए भी मानक परिचालन प्रक्रियाओं का अनुपालन करना बहुत जरूरी है। हमें अपने बैंक की प्रमुख गतिविधियों जैसे खाता खोलना, खाता बंद करना, ऋण का प्रसंस्करण, वसूली आदि के लिए विस्तृत मानक परिचालन प्रक्रिया विकसित करनी चाहिए। हमारे पास पहले से ही किसी ऋणी को इरादतन चूककर्ता घोषित करने से संबंधित सरफेसी कार्रवाई के लिए इस तरह के विस्तृत एसओपी है।

स्थानांतरण से पूर्व ज्ञान का स्थानांतरण होना:-

पंजाब नैशनल बैंक में कार्यग्रहण करने से पूर्व, मैं प्रतिष्ठित प्राइवेट सेक्टर कम्पनियों में कार्य कर चुका हूँ। मैंने देखा है कि वे किसी की बदली या इस्तीफे से पूर्व "ज्ञान स्थानांतरण" नाम से प्रक्रिया की पालना करते हैं। हम इस अवधारणा को अपने बैंक में अपना सकते हैं जिसके अंतर्गत किसी कार्यालय में कार्यभार ग्रहण करने वाला अधिकारी कम से कम कुछ दिन (जैसे लगभग 3 दिन) उस सीट पर कार्यरत पदाधिकारी से कार्य समझने के लिए लगाए। यह अवधि अर्थात 3 दिन की अवधि ज्ञान के अंतर को पाटने में सहायक रहेगी और कमियों को सुधारने में भी सहायक होगी जोकि तैनाती के प्रारंभिक दिनों में स्थान, ग्राहकों आदि के ज्ञान में कमी के कारण होती है। अतिरिक्त लाभ के रूप में, यह कारोबार के विकास में भी सहायक रहेगी।

स्टाफ विवेक को कम करने के लिए नियम आधारित परिपत्र:-

हम इस तरह से परिपत्र-दिशानिर्देश बना सकते हैं जो कि फील्ड में (निचले स्तर पर) स्टाफ को अपना विवेक प्रयोग करने के कम अवसर प्रदान करें। उदाहरण के लिए, हम गलत व्याख्या की संभावना से बचने के लिए परिदृश्य विश्लेषण-उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं जो कर्मचारियों के मन में भ्रम को दूर करने में भी सहायता करता है।

एनालिटिक्स और बिग डाटा का उपयोग:-

आज वैश्लेषिकी का युग है और प्रत्येक उद्योग व्यापार को बढ़ाने और धोखाधड़ी वाले क्षेत्रों को कम करने के लिए वैश्लेषिकी का लाभ उठा रहा है। हमें शाखाओं में धोखाधड़ी/चूक के पैटर्न का पता लगाने के लिए वैश्लेषिकी का उपयोग करना चाहिए और परिचालन हानि को कम करने के लिए सीबीएस और अन्य प्रणालियों में चेक लगाने चाहिए। उदाहरण के लिए आईआरएमडी में मेरे कार्यकाल के दौरान स्थानांतरित/इस्तीफा दे चुके/सेवानिवृत्त अधिकारियों की आईडी के फर्जी उपयोग का पता लगाने के लिए हमने पीएनबी ट्रैक (ऋण जोखिम रेटिंग प्लेटफॉर्म) को एचआरएमएस के साथ जोड़ा था। हमने अधीनस्थ कर्मचारी की के माध्यम से बनाई गई रेटिंग/पुनरीक्षण जैसे उदाहरण भी देखे हैं। एचआरएमएस और पीएनबी ट्रैक के लिंक होने के साथ, हम ऐसे सभी मुद्दों पर एक जाँच बिन्दु बना सकते हैं।

सतर्कता प्रशासन एवं सुधार

अरविन्द यादव
मुख्य प्रबन्धक
सतर्कता प्रभाग
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

सतर्कता प्रशासन एक प्रबन्धनात्मक भूमिका निभाता है। जिसका मुख्य उद्देश्य प्रणालियों और प्रक्रियाओं में सुधार करके बेहतर निर्णय लेने के लिए प्रबंधन को सहायता प्रदान करना है।

सतर्कता का उद्देश्य भ्रष्टाचार/दुराचार की गुंजाइश को कम करके संगठन से संबंधित प्रत्येक लेनदेन से अधिकतम लाभ प्राप्त करना है।

लोगों में सतर्कता के प्रति हमेशा गलत दृष्टिकोण होता है क्योंकि वे सतर्कता को जांच, जिम्मेदारी तय करना इत्यादि मान लेते हैं। सतर्कता की भूमिका संगठन को आंतरिक खतरों से बचाने के लिए है जो बाहरी खतरों की तुलना में अधिक गंभीर हैं। किसी भी अन्य प्रबंधकीय कार्यों अर्थात् वित्त मानव संसाधन विपणन इत्यादि की तरह सतर्कता को यथोचित स्थान दिया जाना चाहिए।

किसी भी प्रक्रिया में इसके होने से पूर्व अनियमितताओं का पता लगाने से पहले सतर्कता की आवश्यकता होती है और कारण का पता लगाने या उसी पर अंकुश लगाने के लिए प्रभावी उपाय करने हेतु विश्लेषण किया जाता है ताकि अनियमितताओं को रोका जा सके।

सतर्कता प्रशासन में सुधार हेतु क्या किया जा सकता है? सामान्यतः बहुत थोड़े से कर्मचारी किसी भी संगठन के सतर्कता ढ़ांचे में काम करते हैं। यह टीम निरंतर प्रत्येक कर्मचारी पर नजर नहीं रख सकती है। एक बेहतर सतर्कता प्रशासन के लिए, प्रत्येक हितधारक को शामिल कर सहभागी सतर्कता रखना हमारी आवश्यकता है। प्रत्येक कर्मचारी को सतर्कता टीम की आंखों के रूप में कार्य करना चाहिए।

हम ऐसा कैसे कर सकते हैं? यह संगठन में ईमानदार संस्कृति का निर्माण, अधिक से अधिक पारदर्शिता प्रौद्योगिकी का लाभ लेते हुए निर्णय लेने की प्रक्रिया में हर कर्मचारी द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका के अनुसार उचित प्रशिक्षण देने के बाद निर्णय लेने वालों की स्पष्ट जवाबदेही तय करके किया जा सकता है।

सतर्कता से भारत की समृद्धिः सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष

(सतर्कता प्रभाग द्वारा आयोजित विषयक प्रतियोगिता-2020 में प्रथम पुरस्कार)

डॉ. स्वस्ति नाथ झा
राजभाषा अधिकारी
राजभाषा विभाग,
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

भारतीय राष्ट्रीय चिंतन-नभ का अंतः करण वेदवाक्य "**वयं राष्ट्रे जागृयाम**" अर्थात् हम राष्ट्र को हमेशा जागृत बनाए रखेंगे से दीपित है। आर्थिक संदर्भ में इसी वाक्य की आधुनिक व्युत्पत्ति "**हम राष्ट्र प्रहरी के रूप में सजग एवं सतर्क रहेंगे**"।

वस्तुतः जब चतुर्थ औद्योगिक क्रान्ति अपने शैशवावस्था से युवावस्था की ओर प्रवृत्त है और तकनीक का मानव के सहयोगी से सहचरी के रूप में शनैः-शनैः परावर्तन की प्रतीति स्वाभाविक है, इस दशा में प्रकृति अनुकूलित संधारणीयता की सम्भावना प्रबल होना आकाश-कुसुम सदृश नहीं है अपितु मानवीय सभ्यता हेतु सदियों से प्रतीक्षारत तपस्या के वरदान का अनावरण है।

इतिहासकारों के मत में यह विवाद रहित तथ्य है कि मध्य काल के अंत तक विश्व के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में भारत 25 प्रतिशत से अधिक शेयर के साथ सर्वाधिक समृद्ध राष्ट्रों में भी अग्रणी था। परंतु परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त होने तक भारत का उन्नत राष्ट्र का मुकुट छिन गया था। भारत की मिश्रित अर्थव्यवस्था, लाल फीताशाही एवं अन्य बंद अर्थव्यवस्था की तात्कालिक अप्रासंगिकता आदि के बाद उदारीकरण, वैश्वीकरण एवं निजीकरण (एलपीजी रिफॉर्म) को उभरती समस्याओं का समाधान माना गया। निश्चित रूप से यह कुछ सीमा तक सफल रहा और सफल होने की संभावनाओं में वृद्धि हो रही है। इन सुधारों का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम वित्तीय संस्थाएँ रही हैं और इनकी भूमिका दिन-प्रतिदिन विस्तृत एवं परिवर्तित होती जा रही है। आर्थिक लेन-देन का भी क्रमिक विस्तार हुआ है जिसके साथ कुछ पूर्वसावधानियों एवं पश्चात समाधानों की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। ऐसे में सतर्क रहना परमावाश्यक है।

पिछले दो वर्ष पूर्व तक भारत फ्रजाईल फाईव (Fragile Five) सामान्य शब्दों में अंत्यंत संवेदनशील अर्थव्यवस्था जिसको डगमगाना तुलानाकृत सरल था। वस्तुतः इस दौर को हमने कुछ छिटपुट घटनाओं को छोड़ दें तो हमारी सतर्कता की वजह से सफलता पूर्वक पार कर लिया है। हर एक संकल्पित कल्याणकारी राज्य का परम ध्येय प्रत्येक नागरिक को खुशहाल रखना होता है जिसके लिए राष्ट्र का समृद्ध होना आवश्यक है। क्योंकि खुशहाली की राह समृद्धि से होकर गुजरती है और समृद्ध होने के लिए सतर्क होना अनिवार्य है। इस निबंध में लेखक द्वारा समृद्धि के विविध आयामों को दर्शाते हुए, सतर्कता का विकसित देशों के आंकड़ों एवं सूचकांकों के माध्यम से अन्योन्याश्रय संबंध स्थापित करने के साथ, उसके विभिन्न पक्षों का अनावृत्ति सहित मार्ग में समागत बाधाएँ एवं चुनौतियों का निदर्शन प्रस्तुत करते हुए भावी परिदृश्य को भी सप्रमाण सुस्थापित किया गया है।

सतर्कता के विभिन्न पक्ष

जब हम वाहन चलाते हैं तो हम सचेत रहते हैं, यातायात नियमों और विनियमों का ईमानदारी से पालन करते हुए किसी भी संभावित दुर्घटना से बचते हैं। क्योंकि, हम जानते हैं कि निर्धारित नियमों और विनियमों के उल्लंघन पर ज्ञात नुकसान हैं। अन्य उदाहरण- जिस प्रकार किसी भी वस्तु को खरीदते समय, हम अवसर उत्पादन तिथि (मैन्युफैक्चरिंग) और समाप्ति तिथि (एक्सपायरी), एमआरपी, वेट आदि को देखते हैं। सामान्य शब्दों में, हम अपने जीवन के हर क्षेत्र में अपने दैनिक व्यवसाय में "सतर्क" रहते हैं।

सतर्कता का सामान्य रूप जब व्यक्ति हित से उठकर सामुदायिक हो जाता है तब इसका सांस्थानिक नियमन आवश्यक हो जाता है। तदनुरूप व्यक्ति और सक्षम अधिकारी - चाहे वह विभाग/संगठन या सांविधिक/प्रवर्तन प्राधिकरण हों, एक-दूसरे के पूरक होने के लिए एक साथ कार्य करते हैं।

सतर्कता प्रबंधन का एक अभिन्न अंग है। यह एक संगठन के प्रदर्शन में सुधार के लिए महत्वपूर्ण तंत्र प्रदान करती है। यह भ्रष्टाचार के लिए रास्ते पर अंकुश लगाने में प्रणालीगत सुधार में सहायता करती है। इस प्रकार सतर्कता से कर्मचारियों के साथ-साथ संगठन की दक्षता और प्रभावशीलता में सुधार करने में सहायता प्राप्त होती है। भारत में, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम आर्थिक और साथ ही देश के सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे करदाताओं के पैसे से निष्पादित होते हैं और इसलिए जनता के प्रति उत्तरदायी होते हैं।

सतर्कता के विविध प्रकार होते हैं। दंडात्मक सतर्कता, सुधारात्मक सतर्कता, जासूसी सतर्कता, भावीसूचक सतर्कता, निवारक सतर्कता और सक्रिय सतर्कता आदि विभिन्न सतर्कता तंत्र हैं जो समय-समय पर नियमों और प्रक्रियाओं को लागू करने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में उपयोग किए जाते हैं। इनमें से निवारक सतर्कता को अन्य सतर्कता से महत्त्वपूर्ण माना जाता है। निवारक सतर्कता का अर्थ है संगठनात्मक प्रक्रियाओं, नियमों और विनियमों का प्रभावी निगरानी के साथ अनुपालन करना। वस्तुतः इसका उद्देश्य घटना के घटित होने से पूर्व ही निवारण करना होता है। अतः सही अर्थों में निवारक सतर्कता का प्रवर्तन आवश्यक है। इसका कार्यान्वयन भी अपेक्षाकृत सरल एवं कम जोखिम वाला है। उदाहरण स्वरुप संस्था की कार्य-संस्कृति का अध्ययन, संवेदनात्मक एवं भ्रष्टाचार संभावित क्षेत्रों का अध्ययन, जटिल नियमों एवं प्रक्रियाओं का सरलीकरण, अधिकारियों के कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों का निर्धारण, संवेदनात्मक बिन्दुओं का निर्धारण, आकस्मिक निरीक्षण, कार्य की गुणवत्ता और गति में विफलताओं का पता लगाना तथा विवेकाधीन शक्तियों को कम करना आदि। दंडात्मक सतर्कता से अधिक महत्वपूर्ण है निवारक सतर्कता। संक्षेप में, यदि निवारक सतर्कता पक्ष पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता है, तो सतर्कता के अधिकतम मामले उत्पन्न नहीं होंगे।

समृद्ध राष्ट्र के विविध आयाम

समृद्धि एक समय सापेक्ष शब्द है। जिसका क्षेत्र कालानुक्रम से विस्तृत एवं परिष्कृत होता है। सदियों पूर्व जब राज्य की अवधारणा प्रबल थी तब राज्य की समृद्धि उसकी भौतिक एवं अभौतिक अकूत सम्पत्ति के आधार पर होती थी। उदाहरण स्वरूप भौतिक रूप में स्वर्ण, लाजवर्त आदि रत्न, भूमि, गोधन, लौह खनिज आदि प्राकृतिक संसाधन तथा अभौतिक रूप में सैन्य सामर्थ्य, कूटनीतिक विस्तार, सांस्कृतिक विशिष्टता आदि।

समय सापेक्ष रूप में ईसा पूर्व भारत में मगध का एक महाजनपद से शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में अभ्युदय में महत्त्वपूर्ण योगदान भू-राजनैतिक स्थिति यथा नदियों की सन्निकटता, सैन्य सज्जा हेतु लौह खनिज की प्रचुर उपलब्धता, उपजाऊ मिट्टी एवं सांस्कृतिक, कूटनीतिक विस्तार आदि की थी। वर्तमान सन्दर्भ में उपर्युक्त संसाधन अप्रासंगिक नहीं हैं परन्तु अपेक्षाकृत गौण अवश्य हुए हैं।

समयानुसार वैश्वीकरण के युग में समृद्धि की धारणाएं भिन्न होती हैं तथा सफलता हेतु राष्ट्रों की अपेक्षाएँ तथा प्राथमिकताएँ भिन्न होती हैं। यूएन हैबीटैट (UN Habitat) के अनुसार एक समृद्ध राष्ट्र के लिए निम्न आयामों का सशक्त होना अत्यावश्यक है। ये सभी पहलू एक दूसरे से सम्बद्ध और किसी न किसी रूप में परस्पर निर्भर हैं।

इसी प्रकार एक अन्य मानदण्ड के अनुसार एक समृद्ध राष्ट्र का निम्नोक्त अर्थों में प्रपूरित होना स्वतः संभाव्य है। ये सभी मानदण्ड क्रमिक रूप से परस्पर सम्बद्ध एवं तदनुरूप समग्रता के फलित रूप में अभिव्यक्त होते हैं। ये तत्त्व हैं- अर्थव्यवस्था, उद्यमिता और अवसर, सुशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य,बचाव एवं सुरक्षा, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, सामाजिक पूँजी। अतः एक आधुनिक परिभाषा के अनुसार समृद्ध राष्ट्र का इन कसौटियों पर उतरना तथा निहितार्थ परिवर्तनों के साथ कदम मिलाना निश्चित रूप से अनिवार्य है।

वैश्विक सूचकांक	रैंक 1	रैंक 2	रैंक 3	रैंक 4	रैंक 5
मानव विकास सूचकांक	नॉर्वे	स्विट्जरलैंड	आयरलैंड	जर्मनी	हांग कांग
भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक	न्यूजीलैंड	डेनमार्क	फिनलैंड	सिंगापुर	स्विट्जरलैंड
ईज ऑफ डूइंग बिजनेस	न्यूजीलैंड	सिंगापुर	हांग कांग	डेनमार्क	दक्षिण कोरिया
समृद्धि सूचकांक	डेनमार्क	नॉर्वे	स्विट्जरलैंड	फिनलैंड	नीदरलैंड
खुशहाली सूचकांक	फिनलैंड	डेनमार्क	नॉर्वे	आइसलैंड	नीदरलैंड

वैश्विक सूचकांक	वैश्विक समृद्धि	वैश्विक खुशहाली	ईज ऑफ डूइंग बिजनेस	भ्रष्टाचार धारणा	मानव विकास
भारत का स्थान	101	144	63	80	129

उक्त तालिका के माध्यम से भारत की स्थिति एवं अन्य देशों की स्थिति की तुलना की जा सकती है। विगत कई वर्षों से नियमित रूप से प्रायः ऐसा देखा गया है कि नॉर्डिक देशों (स्वीडन, नॉर्वे, फिनलैंड, डेनमार्क एवं आईसलैंड) तथा न्यूजीलैंड, स्विट्जरलैंड का प्रदर्शन विभिन्न सूचकांकों में प्रायः सबसे ऊपर होता है। अतः **उक्त तालिका में जिन देशों की स्थिति भ्रष्टाचार धारणा, मानव विकास आदि सूचकांकों में स्थिति अच्छी है, उन देशों की समृद्धि एवं खुशहाली की स्थिति भी तदनुरूप है।** किसी भी देश का समृद्ध होना एक क्रमिक विकास का रूपांतरित उत्कर्ष है। इनकी एक क्रमिक सीढी होती है, जिसके प्रत्येक पायदान का एक अनन्य महत्त्व होता है। इसके पायदान में उत्क्रमण या अधिक्रमण समृद्धि की विसंगति को दर्शाता है।

भारत एक भौगोलिक, सांस्कृतिक व आर्थिक रूप से विविधतापूर्ण उपमहाद्वीपीय देश है। यह इन विभिन्न विसंगतियों के बीच सामंजस्य स्थापित करता हुआ समृद्धि की ओर रथारूढ है। वस्तुतः **भारत एक मिश्रित अर्थव्यवस्था से समाजोन्मुखी संकल्पनायुक्त पूँजीवादी प्रवृत्ति की ओर अग्रसर है।** निश्चित रूप से विकास के इस आर्थिक मॉडल के लिए आर्थिक गतिविधियाँ अनन्य रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। इसमें सरकारी व गैर-सरकारी आर्थिक संस्थानों एवं उपक्रमों की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है। ऐसे में वित्तीय समावेशन जैसी बड़ी पहल जिसका भार सरकारी व गैर-सरकारी वित्तीय मध्यवर्ती संस्थाओं के मजबूत कन्धों पर है। इस प्रक्रिया के दौरान ऋण, जमा, निकासी आदि वित्तीय लेन-देन में वृद्धि स्वयं सम्भाव्य है।

समृद्धि की ओर भारत के बढ़ते कदम

वैश्विक पटल पर प्रथम सभ्यता के रूप में अभिहित भारत जैसे सान्दर्भिक देश का क्रमिता से मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र के सानुपातिकता से अग्रसर होना कोई विशेष चमत्कार नहीं है। वस्तुतः इस संरचनागत वैशिष्ट्य का नियंत्रण मानव-केन्द्रित ही है और प्रक्रियानुगत उन्नति में मानव का सदाचरण के रूप में आत्मानुशासन एवं तकनीक का नियमन के रूप में उत्तरदायित्व का द्विगुणन हो जाता है।

वस्तुतः भारत की प्रगति की दिशा विश्वगुरु के रूप में पुन स्थापित होने के साथ प्रमुख आर्थिक शक्ति बनने की ओर भी है। इसी दिशा में, भारत का लक्ष्य वर्ष 2024 तक 5 ट्रीलियन इकोनॉमी के साथ वैश्विक अर्थव्यवस्था का नेतृत्व करना है। भारत फ्रजाईल फाईव की श्रेणी से सफलता पूर्वक बाहर आ गया है और यह सतर्क भारत की सफल नीति एवं समग्र प्रयास का सुपरिणाम है। यह प्रयास द्योतित करता है कि आर्थिक जगत् में नेतृत्व का सुस्थापन सतर्कता के बिना असंभव है। सजगता के साथ सतर्कता को ध्यान में रखकर कई कदम उठाये गए जिनके सुपरिणाम कई सूचकांकों के माध्यम से प्रदर्शित हो रहे हैं।

विभिन्न सूचकांकों में भारत की रैंक की विगत वर्षों से तुलना

भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक		ईज ऑफ डूइंग बिजनेस		नवाचार (इनोवेशन) सूचकांक	
वर्ष	रैंक	वर्ष	रैंक	वर्ष	रैंक
2012	94	2015	142	2014	81
2019	80	2019	63	2020	48

भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक में धीमे परंतु क्रमिक सुधार परिलक्षित हो रहा है अर्थात् पारदर्शिता, उत्तरदायित्व एवं सत्यनिष्ठा आदि में सुधार होने से धीरे-धीरे भ्रष्टाचार के प्रति असहिष्णुता में वृद्धि हो रही है। ईज ऑफ डूइंग बिजनेस में अपेक्षानुरूप सुधार हुआ है जो व्यवस्थागत और संरचनागत परिवर्तन का प्रबल एवं सकारात्मक संकेतक है। नवाचार सूचकांक में आशातीत प्रदर्शन दृष्टिगोचर है। वस्तुतः उच्च मानकों के साथ ये पायदान निश्चित रूप से आदर्श नहीं हैं परन्तु अपेक्षाकृत समुन्नत अवश्य हैं और सतर्क, समृद्ध एवं सुखद भविष्य की ओर प्रवृत्त हैं। अतः भारत विविध आयामों से सतर्क रहने की दिशा में तीव्र कदमों के साथ आगे बढ रहा है जो निश्चित रूप से समृद्धिशाली राष्ट्र के लक्ष्य को पुरः स्थापित करेगा।

सतर्क भारतः बाधाएँ एवं चुनौतियाँ

आचार्य चाणक्य का कालजयी कथन **"जल में तैरती मछली कब पानी पी लेगी, यह जानना असंभव है। इसी तरह यह पता लगाना असंभव है कि सरकारी कर्मचारी, उपक्रमों के प्रभारी, गलत तरीके से पैसा कमाते हैं"** प्रत्येक गतिविधि जो स्वीकृत एवं निर्धारित मानक के अनुरूप नहीं है, भ्रष्टाचार की परिधि में आती है। भ्रष्टाचार शब्द में एक बृहत् एवं व्यापक अर्थ समाविष्ट है। दुग्ध विक्रेता द्वारा दूध में पानी मिलाकर बेचने जैसी सामान्य क्रियाकलाप से लेकर उच्चतम स्तर की धोखाधड़ी पर्यन्त भ्रष्टाचार है। व्यक्तिगत स्तर पर तथा पारिवारिक स्तर पर मूल्य में ह्रास परिलक्षित हो रहा है। तकनीकी को कार्यक्षमता में विस्तार तथा भ्रष्ट आचरण में अंकुश हेतु पारदर्शिता का साधन स्वीकार किया जाता है। जो एक सीमा तक यथार्थ भी है, परन्तु विगत कुछ वर्षों में तकनीकी आश्रयण में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है, जिसका भ्रष्टाचार के रूप में स्वार्थ सिद्धि हेतु नकारात्मक उपयोग हो रहा है। भ्रष्टाचार का मुख्य उद्देश्य प्रायः धन प्राप्ति होता है इसलिए आर्थिक जगत में इनकी पैठ अपेक्षाकृत अधिक है। उदाहरणस्वरूप सॉफ्टवेयर शक्ति युग में विभिन्न मालवेयर "वन्नाक्राय" (Wannacry) "रैनसम्वेयर" (Ransomware) बिट्कोइन (Bitcoin) आदि के द्वारा विभिन्न आर्थिक धोखाधड़ी जैसी गतिविधियों को अंजाम देना आदि। इसी प्रकार सोशल मीडिया के माध्यम से विभिन्न प्रकार के डाटा की चोरी, कई अनैतिक कम्पनियों द्वारा व्यक्तिगत डाटा का अनधिकृत रूप से विक्रय, डाटा स्किमिंग आदि। डाटा लोकलाईजेशन न होने से आंतरिक आर्थिक गतिविधियों की जानकारी अनुपयुक्त व्यक्तियों, संस्थाओं एवं देशों तक पहुँचती है, जिसकी समग्र हानि भयावह होती है।

आगे परिदृश्यः-

किसी भी बहुआयामी समस्या का समाधान भी बहुआयामी होना अनिवार्य है। इसके बिना लूपहोल्स बनाना आसान हो जाता है। भ्रष्टाचार पर अंकुश दोनों तरह से अर्थात मानवीय मूल्यों में वृद्धि तथा तकनीकी समाधान के बीच सामंजस से ही संभव है। अन्य शब्दों में, दोनों प्रकार की सतर्कता आवश्यक है। राष्ट्र चिन्तक अब्दुल कलाम जी का कथन **"यदि कोई भ्रष्टाचार मुक्त और सुन्दर अस्तित्वों का एक राष्ट्र होना है, तो मुझे लगता है कि तीन प्रमुख सदस्य हैं, जो किसी भी तरह से हल पिता, माता और गुरू हो सकते हैं।"** इसी प्रकार महात्मा गांधी द्वारा निर्दिष्ट सात पापों में से **"श्रम विहीन संपत्ति"** तथा **"नैतिकता विहीन व्यापार"** जैसे कथन और उनके अनुपालन व्यक्तिगत से सामूहिक एवं वैश्विक स्तर पर आवश्यक है। इसी क्रम में, निवारक सतर्कता हेतु तकनीकी समाधान जैसे- ई-विजिल, प्रगति, आदि ई-गवर्नेंस तथा Cert-in, Irtificial Intelligence, Quantum Theory, Data localization आदि अन्य पहल महत्त्वपूर्ण हैं। उक्त दोनों तथा वैश्विक स्तर पर एफएटीएफ (FATF) तथा बेसल मानदंडो (Basel Norms) के समायोजन आधारित सतर्कता संबंधी नियम-विनियम तथा उनकी अनुपालना से देश उत्तरोत्तर सतर्क होगा और समृद्धि की राह सुगम होती जाएगी।

औद्योगिक अभ्युन्नति के साथ ऐसी संस्कृति जिसमें ईमानदारी, पारदर्शिता और भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई को संस्कृति के मौलिक मूल्यों के रूप में पढ़ाया जाता हो, का अभ्युदय अहम सिद्ध होगा।

संविधान दिवस

संविधान दिवस के उपलक्ष्य में विडियो कॉनफ्रेंसिंग के माध्यम से भारतीय संविधान की प्रस्तावना पढ़ते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव तथा अन्य उच्चाधिकारीगण।

संविधान दिवस के उपलक्ष्य में भारतीय संविधान की प्रस्तावना पढ़ते हुए कार्यपालक निदेशकगण श्री संजय कुमार, श्री उद्धोष कुमार आजाद, मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री विजय कुमार त्यागी, मुख्य महाप्रबंधक श्री विवेक झा तथा महाप्रबंधक श्री राकेश गांधी।

बैंक द्वारा सीएसआर की विशेष पहल

सीएसआर गतिविधियों के तहत देश के प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, पंजाब नैशनल बैंक द्वारा भाऊराव देवरस सेवा न्यास को आपातकालीन वाहन दान किया गया। न्यास द्वारा वाहनों का उपयोग उन बीमार व्यक्तियों और उनके परिवारजनों की सहायता के लिए किया जाएगा, जो एम्स में इलाज के लिए दिल्ली आते हैं। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान के माननीय केंद्रीय मंत्री, डॉ. हर्षवर्धन तथा प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, पीएनबी के कर कमलों द्वारा ट्रस्ट को वाहन की चाबी सौंपी गई।

पीएनबी के योगदान की सराहना करते हुए, माननीय केंद्रीय मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने कहा कि, "पीएनबी" सरकार द्वारा समाज की सेवा के प्रयासों में हमेशा सहायक रहा है। वर्तमान समय में, यह वाहन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा और इससे बहुत से लोगों की सेवा की जा सकती है, जिन्हें बिना किसी विलंब के तत्काल देखभाल की आवश्यकता होती है। पीएनबी के कई कदम जैसे कि पीएम केयर फंड में दान और मास्क तथा सैनिटाइटर वितरित करने के राष्ट्रव्यापी सीएसआर अभियान का आयोजन सराहनीय है। मैं इस महामारी से लड़ने की दिशा में पीएनबी को उनके निरंतर योगदान हेतु बधाई देता हूं। मुझे विश्वास है कि सभी के सामूहिक प्रयासों से, हम इस स्थिति से भी निजात पा लेंगे"

इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने कहा कि, "लोगों का स्वास्थ्य एवं सुरक्षा हमारी शीर्ष प्राथमिकताओं में से एक है। पीएनबी बड़े पैमाने पर समुदाय का समर्थन करने में हमेशा अग्रणी रहा है। यह दान समाज को वापस देने के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को और मजबूत बनाता है। मुझे विश्वास है कि पीएनबी, भविष्य में भी एक जिम्मेदार एवं सशक्त संस्था के रूप में, राष्ट्र की प्रगति हेतु ऐसे अभियानों में अपना योगदान देता रहेगा।"

हाल ही में, पीएनबी ने कोविड-19 का सामना करने के लिए अपनी 10,000 से अधिक शाखाओं के माध्यम से देश के 662 जिलों में लगभग 10 लाख मास्क और सैनिटाइजर वितरित किए हैं। गालवान घाटी के शहीदों के सम्मान में, पीएनबी ने 74 वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर शहीद के परिवारों को भी सम्मानित किया।

बैंक ने मेधावी छात्रों को भी सम्मानित किया और 5 सितंबर शिक्षक दिवस के शुभ अवसर पर समाज के लिए शिक्षकों के बहुमूल्य योगदान के लिए दस हजार नामचीन शिक्षकों को सम्मानित किया।

इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित माननीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री डॉ. हर्षवर्धन तथा प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव तथा अन्य उच्चाधिकारीगण।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास के अधिकारियों को पीएनबी द्वारा प्रदत्त आपातकालीन वाहन की चाबी सौंपते हुए माननीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री डॉ. हर्षवर्धन, साथ में हैं प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव तथा अन्य उच्चाधिकारीगण।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास को दान किए गए वाहन का निरीक्षण करते हुए हुए माननीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री डॉ. हर्षवर्धन तथा प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव व अन्य उच्चाधिकारीगण।

शाखा जी टी के रोड के माध्यम से कोविड 19 के परीक्षण हेतु एक माह के लिए एसडीएम, उत्तरी दिल्ली को 5 वैन की प्रायोजन राशि का चेक सौंपते हुए श्री दीपक शर्मा, मंडल प्रमुख, उत्तरी दिल्ली मंडल।

मंडल कार्यालय, कोलकाता पूर्व द्वारा सर्तकता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत बारुईपुर थाना में मंडल प्रमुख, श्री राजेश भौमिक सेनिटाइजर मशीन तथा सेनिटाइजर भेंट करते हुए। इस अवसर पर साथ में उप-मंडल प्रमुख, श्री अंजन चट्टोपाध्याय भी उपस्थित रहे।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान सीएसआर गतिविधियों के तहत अंचल प्रमुख, भुवनेश्वर श्री अश्वनी कुमार, भुवनेश्वर पुलिस आयुक्त श्री सुधांशु सारंगी को हैंड सेनीटाइजर भेंट करते हुए।

भारत की समृद्धि में सतर्कता का महत्त्व

डॉ. आलोक कुमार सहाय
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
मंडल कार्यालय-पटना दक्षिण

वर्ष-2020 के सतर्कता सप्ताह का संदेश वाक्य था-सतर्क भारत-समृद्ध भारत। वास्तव में किसी भी राष्ट्र के सशक्तिकरण में इन दोनों ही शब्दों की भूमिका अहम है। देखा जाए तो दोनों ही शब्द परस्पर आबद्ध हैं। जिस देश का नागरिक अपने कर्तव्य एवं दायित्वों के प्रति सजग एवं सतर्क होगा वह देश निश्चित रूप से समृद्धि-पथ पर अग्रसर होगा। भारत को एक 'समृद्ध राष्ट्र' बनाने हेतु देश के प्रत्येक नागरिक को ईमानदारी के उच्च मानकों के प्रति कृत संकल्पित होकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करना होगा।

हम सभी ने अपने अध्ययन काल में महान राजनीतिज्ञ एवं अर्थशास्त्री चाणक्य से जुड़ा यह पाठ जरूर पढ़ा होगा। यह चाणक्य का आत्मबल एवं विश्वास था कि वे अपने शिष्य चन्द्रगुप्त को साथ लेकर नंद वंश जैसे शक्तिशाली साम्राज्य को उखाड़कर विशाल और समृद्ध मौर्य साम्राज्य की स्थापना कर पाने में सफल रहे। इसी साम्राज्य में वे महामात्य अर्थात प्रधानमंत्री बने। उन्हीं से जुड़ा यह प्रसंग है -

एक बार एक विदेशी यात्री चाणक्य की कुटिया में, उनसे मिलने आए। कुटिया के कोने में एक छोटा-सा दीपक जल रहा था। इसी दौरान सम्राट चन्द्रगुप्त भी कुछ आवश्यक शासकीय कार्य पर चर्चा करने हेतु उनसे मिलने आए। चन्द्रगुप्त और चाणक्य के बीच जब राज-काज की चर्चा शुरू हुई, तब चाणक्य ने जलते हुए दीपक को बुझाकर, एक दूसरा दीपक जलाया। चन्द्रगुप्त के जाने के बाद चाणक्य ने वह दीपक बुझाकर फिर से पहले वाला दीपक जलाया। उस यात्री ने कौतूहलवश दो अलग-अलग दीपकों के उपयोग करने की वजह पूछी। चाणक्य ने समझाया कि जिस दीपक में राजकोष के पैसे से तेल भरा जाता है उसका उपयोग वे केवल राज-काज के काम के समय करते हैं, बाकी समय वे अपने पैसे से खरीदे हुए तेल वाला दीपक ही जलाते हैं। उस विदेशी यात्री ने कहा कि जिस देश के शासकों में नैतिकता की जड़ें इतनी मजबूत हैं उसका विश्वगुरु होना स्वाभाविक है"।

एक राष्ट्र के प्रति सतर्कता, निष्ठा एवं ईमानदारी से पूर्ण इस प्रसंग से हम अपने देश के नागरिकों को ईमानदारी एवं निष्ठा का पाठ जरूर पढ़ा सकते हैं। यह सत्य है कि ईमानदारी, निष्ठा एवं सतर्कता के द्वारा ही समृद्धि का द्वार खुलता है। हमारे आख्यानों में अनेकों ऐसे उद्धरण मिलते हैं। जिन पर अमल करने की आवश्यकता है। संगठन या व्यक्ति की कार्य एवं दायित्व के प्रति सजगता ही उसकी समृद्धि की राह प्रशस्त करता है।

आधुनिक भारत के इतिहास में भी अनेकशः ऐसे प्रेरक उदाहरण मौजूद हैं। सरदार पटेल अपनी ईमानदारी, सतर्कता एवं निष्ठा के बल पर विपरीत परिस्थितियों में 567 देशी रियासतों को एक सूत्र में बांधने में सफल हो सके। आज भारत का जो रूप हम सभी के समक्ष उपस्थित है उसमें उन्हीं की सतर्क सोच का योगदान है। जय जवान-जय किसान के उद्घोषक-लालबहादुर शास्त्री, देशरत्न महात्मा गांधी संपूर्ण विश्व के समक्ष नैतिकता के आदर्श के रूप में उपस्थित हैं। चाहे राजनीति हो, समाज नीति हो या अर्थ नीति सभी में सत्यनिष्ठा और ईमानदारी की संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है।

यह सर्वमान्य तथ्य है कि यदि हमारी सच्ची निष्ठा-अपने परिवार, समाज, संगठन एवं राष्ट्र के प्रति होगी तो हमारा आचार-व्यवहार भी निष्ठापूर्ण होगा। निष्ठा, ईमानदारी, आचार-व्यवहार जैसे मूल्यों की नींव वास्तव में हमारे प्रारंभ के संस्कारों से पड़ती है। इसके लिए यह जरूरी है कि हम अपने बच्चों को राष्ट्र एवं समाज के प्रति निष्ठा निर्माण की उचित शिक्षा दें। यह तभी संभव होगा जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति

इसमें अपनी सहभागिता प्रदर्शित करें। अभिभावकगण प्रारंभ से ही बच्चों को अनुशासित, ईमानदारी से जीवन जीने के लिए प्रेरित करें। राष्ट्र स्तर पर नागरिकों में नैतिकता एवं ईमानदारी पूर्ण जीवन शैली विकसित हो इस हेतु शिक्षा संस्थानों को विशेष प्रयास करने होंगे। देश की अधिकांश समस्याओं का हल नैतिकतापूर्ण जीवन में छुपा हुआ है।

वास्तव में यदि हम अपने राष्ट्र के लिए सोचना चाहते हैं तो सर्वप्रथम हमें अपने संगठन, समाज व राष्ट्र के प्रति निष्ठा रखनी होगी। देश को दीमक की तरह खा रहे भ्रष्टाचार का निर्मूलन कैसे हो? इसके लिए गंभीर प्रयास करने होंगे। इसकी शुरुआत हम स्वयं से करें। इस हेतु हमें स्वयं की उन प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाना होगा जो हमें अपने चादर से ज्यादा पाँव फैलाने की ओर प्रवृत्त करती हैं। हम लोग येन-केन-प्रकारेण पैसों से, ऐशो-आराम के अगणित साधनों से घर भरकर क्या पा रहे हैं? इस दिशा में समग्र चिंतन जरुरी है।

सशक्त भारत के निर्माण के लिए भ्रष्टाचार का समूल नाश करना पहली शर्त है। क्योंकि भ्रष्टाचार उस दीमक की तरह है जो आर्थिक तंत्र को तो खोखला करता ही है, वह सामाजिक और नैतिक मूल्यों पर भी बुरा प्रभाव डालता है। भ्रष्टाचार की समाप्ति हेतु प्रत्येक व्यक्ति को एकजुट होकर लड़ाई लड़नी होगी। इस हेतु प्रारंभ से ही शिक्षण संस्थानों के साथ-साथ गांव-नगर स्तर के साथ ही व्यापार एवं वाणिज्य से जुड़ी संस्थाओं में सदाचार के दूरगामी लाभ और भ्रष्टाचार के कुप्रभाव के विषय में जागृति पैदा करना बेहद आवश्यक है। सरकार इस दिशा में प्रयास कर रही है, पर बिना समाज के सहयोग के यह असंभव है।

वर्तमान दौर में कोरोना के बचाव हेतु हम सभी अक्सर जिस चीज को ध्यान में रखते हैं वह है-सतर्कता। कहा जाता है -बचाव हेतु सतर्कता जरुरी है। संगठनों में भ्रष्टाचार निवारण के लिए सतर्कता बेहद जरुरी है। अक्सर हम सुनते हैं निवारक सतर्कता बेहद कारगर है। 'सतर्कता हटी-दुर्घटना घटी' यह तथ्य हर क्षेत्र में लागू है। भ्रष्टाचार की रोकथाम के लिए यह सबसे सार्थक नीति सिद्ध हो सकती है।

राष्ट्र एवं संगठन की प्रगति हेतु यह जरुरी है कि पारदर्शिता, जवाबदेही और निष्पक्षता के आधार पर ही सभी निर्णय लिए जाएं। इन मूल्यों पर आधारित निर्णय से सभी का विश्वास बढ़ता है। जो कार्य की प्रगति के साथ ही संगठन की प्रगति के लिए भी उचित होता है। समाज व संगठन के प्रति निष्ठा भी चरित्र निष्ठा का ही एक पक्ष है। व्यक्तिगत चिंतन दृष्टिकोण, गुण, कर्म स्वभाव की उत्कृष्टता ही चरित्र-निष्ठा मानी जाती है। यही दूसरों के साथ व्यवहार में समाज के प्रति निष्ठा मानी जाती है।

सतर्कता के व्यापक अर्थ में भी सत्यनिष्ठा, कार्य-निष्ठा और संस्थागत अनुशासन शामिल हैं। निष्ठा एवं सात्विक आचरण से ही एक सशक्त समाज, राष्ट्र का निर्माण होगा। राष्ट्र, समाज व संगठन की प्रगति के लिए ये सभी तत्त्व परमावश्यक हैं। इन तत्त्वों की स्थापना हेतु जनभागीदारी बेहद महत्वपूर्ण है। नागरिकों के सद्प्रयास एवं दृढ़ संकल्प से सतर्क एवं समृद्ध राष्ट्र का निर्माण संभव है।

पीएनबी प्रतिभा का वेब संस्करण

सभी स्टाफ सदस्यों एवं प्रिय पाठकों की सुविधा हेतु पीएनबी प्रतिभा का ऑन-लाइन संस्करण नॉलेज सेंटर पर उपलब्ध है। पीएनबी प्रतिभा तक निम्न नेविगेशन से पहुँच सकते हैं-

पीएनबी नॉलेज सेंटर → ई-सर्कुलर → मैगज़ीन → पीएनबी प्रतिभा

इस पत्रिका को अधिक बेहतर तथा उपयोगी बनाने के लिए आपके सुझावों का स्वागत है।

बैंकों में सतर्कता एवं अनुपालन की बढ़ती महत्ता

अपराजिता गुप्ता
प्रबंधक
मंडल कार्यालय, हल्द्वानी

बैंकों को अर्थव्यवस्था का मूल आधार माना जाता है। बैंक जनता से जमाराशि स्वीकार व ऋण प्रदान कर अर्थव्यवस्था में धन का सक्रिय संचलन करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। बैंकों के विफल होने से समस्त अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। इसका परिणाम वर्ष 2008 की मंदी से देखने को मिलता है जिसमें विशाल बैंकों के विफल होने से विश्व भर के राष्ट्रों की आर्थिक प्रणाली प्रभावित हुई। वर्तमान में बैंकों में धोखाधडी व आपराधिक तंत्रों में इजाफा हुआ है जिससे ग्राहकों व बैंकों को भीषण हानि हो रही है, साथ ही जनता में बैंकों के प्रति अविश्वास की भावना उत्पन्न हो रही है। जनता अत्यंत विश्वास के साथ बैंकों में अपनी पूंजी जमा करते हैं जिसे आवश्यकता होने पर वे निकाल सकते हैं। किंतु बैंकों की हानि से जनता के बैंकों के प्रति विश्वास को भी ठेस पहुँचती है जिससे जनता अपनी जमा-पूंजी बैंकों के अतिरिक्त अन्य विकल्पों एवं संस्थाओं में जमा करते हैं। इससे अर्थव्यवस्था में धन का संचलन अवरुद्ध होता है। इसी संदर्भ में बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं में सतर्कता व अनुपालन को अत्यंत महत्त्व दिया जा रहा है जिससे सामयिक रूप से धोखाधडी व आपराधिक तंत्रों का ज्ञान हो तथा उनका निवारण हो सके।

बैंकों में सतर्कता की आवश्यकता

बैंकों में सतर्कता की महत्ता बैंकों में व्याप्त भ्रष्टाचार की समस्या के कारण अनुभव हुई है जिसने बैंकिंग प्रणाली को अपंग एवं असुरक्षित बनाने का दुस्साहस किया है। भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार वित्त वर्ष 2019-20 में कुल 84,545 धोखाधड़ी के किस्से दर्ज किए गए, जिसमें रू 1,85,772.42 की राशि सम्मिलित थी। प्रति वर्ष यह आंकड़े दुगुने दर से बढ़ रहे हैं जो नीति-निर्माताओं के लिए चिंता का विषय है।

भारतीय संविदा अधिनियम की धारा 17 के तहत धोखे का अभिप्राय किसी पक्ष या उसके एजेंट द्वारा अन्य पक्ष या उसके एजेंट को छलने की प्रक्रिया है, किसी पक्ष द्वारा दुर्भावनापूर्ण इरादे से अन्य पक्ष से कोई जानकारी गोपनीय रखना, किसी कार्य को सम्पूर्ण न करने के इरादे के पश्चात् भी उसकी पूर्णता का वादा करना, ठगने के इरादे से कोई कार्य करना, अन्य कोई कार्य या चूक जिसे कानून ने धोखा घोषित किया है।

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा धोखे का तात्पर्य है किसी व्यक्ति द्वारा बैंकिंग लेनदेन या बही खातों के हिसाब में जानबूझकर कोई चूक या कार्य संबंधी गलती करना जिससे किसी व्यक्ति को, बैंक को मौद्रिक हानि के संग या उसके बिना गलत तरीके से लघु अवधि के लिए लाभ हो।

अनुपालन का महत्त्व

बैंकों में निगरानी की समस्या का समाधान करने तथा बैंकों में उच्च स्तरीय निगरानी प्रणाली स्थापित करने हेतु बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बेसल समिति अनुपालन जोखिम व अनुपालन प्रणाली पर दिशा-निर्देश जारी कर रही है। अनुपालन उच्च स्तर पर कार्यरत अधिकारियों द्वारा आरंभ होता है। अनुपालन का अभिप्राय पालन करने से है। अतः अनुपालन जोखिम की परिभाषा में विधि या विनियामक जोखिम, वित्तीय हानि या बैंकों का विधि, विनियामक या दिशा-निर्देशों के गैर-अनुपालन द्वारा हुई प्रतिष्ठा की हानि सम्मिलित है। अनुपालन के अंतर्गत सभी मानकों के अधीन रहकर कार्य करना सम्मिलित है।

धोखाधड़ी तथा अनुपालन में प्रत्यक्ष संबंध है। यदि सभी मानकों का अनुपालन सुनिश्चित किया जाए तो धोखाधड़ी के मामलों की भी रोकथाम होगी तथा बैंकिंग कार्य-कलापों में दक्षता आएगी।

अनुपालन सुनिश्चित करने में निदेशक मंडल की भूमिका

अनुपालन को संस्था की संस्कृति बनाने में उच्च प्रबंधकों तथा निदेशक मंडल की अहम भूमिका होती है। अनुपालन नीति

निदेशक मंडल द्वारा निर्मित की जाती है तथा उसे प्रत्येक कर्मचारी तक व्याप्त करने का दायित्व भी उनका होता है। नीति निर्माताओं द्वारा नीति गठित करने के पश्चात संस्था के वरिष्ठ प्रबंधकों को नीति का पालन सुनिश्चित करने का उत्तरदायी बनाया जा सकता है। अनुपालन की महत्ता को नजर रखते हुए अनेक संस्थाओं में अनुपालन को एक भिन्न विभाग बनाया गया है तथा विशेष रूप से अनुपालन अधिकारी का पद गठित किया गया है जिनका प्रमुख कार्य सभी मानदंडों का अनुपालन सुनिश्चित करना होगा। अनुपालन को भिन्न विभाग बनाने का उद्देश्य इसे सभी बाहरी व आंतरिक प्रभावों से स्वतंत्र रखना है। अनुपालन अधिकारियों को उच्च अधिकारियों को ही रिपोर्ट किया जाना चाहिए जिससे इस विभाग की स्वतंत्रता कायम रहे।

अनुपालन के विविध आयाम

अनुपालन का अर्थ पालन करने से है, अतः अनुपालन के अंतर्गत विभिन्न आयाम हैं जिनका पालन करना अनिवार्य है। प्रमुख आयाम निम्नवत हैं:

➢ विवेकपूर्ण एवं विनियामक अनुपालन

इसके अंतर्गत विभिन्न विनियामक संस्थाओं द्वारा जारी किए गए मानदंडो का पालन करना सम्मिलित है। बैंकों में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी आय निर्धारण, पूंजी पर्याप्तता, प्रावधानिकरण, प्रकटन, प्राथमिकता प्राप्त ऋण जैसे मानदंडो का अनुपालन करना अनिवार्य है। इसी प्रकार अनेक विनियामक संस्थाएँ हैं-भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI), बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (IRDA), पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण (PFRDA) आदि।

➢ ईमानदारी एवं बाजारी आचरण

इसके अंतर्गत गैर-कानूनी व आपराधिक तंत्रों की रोक हेतु निर्धारित मानदंडो का अनुपालन सम्मिलित है जिससे ईमानदारी व्याप्त हो। बैंकों में वित्तीय कार्रवाई कार्यबल (FATF) द्वारा निर्मित KYC/AML मानदंडो का अनुपालन अनिवार्य है। ऐसी अनेक संस्थाओं द्वारा विभिन्न मानदंड निर्धारित किए गए हैं-भारतीय बैंकिंग संहिता और मानक बोर्ड (BCSBI), भारतीय बैंक संघ (IBA), भारतीय नियत आय मुद्रा बाजार और व्युत्पन्नी संघ (FIMMDA) इत्यादि।

KYC/AML मानदंडो के गैर-अनुपालन से बैंकों को न केवल परिचालन हानि होती है अपितु भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जुर्माना लगाया जाता है जिससे बैंकों को वित्तीय हानि भी होती है।

➢ विधि अनुपालन

इसके अंतर्गत बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949, भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934, विदेशी मुद्रा प्रबंध अधिनियम, 1999 में निर्धारित मानदंडो का अनुपालन सम्मिलित है।

➢ आंतरिक अनुपालन

बाहरी संस्थाओं के साथ-साथ आंतरिक स्तर पर भी निदेशक मंडल द्वारा अनेक मानदंड निर्धारित किए जाते हैं जिनका अनुपालन संस्था की वित्तीय व परिचालन उन्नति के लिए महत्त्वपूर्ण होता है। आंतरिक अनुपालन को भी बाहरी संस्था के अनुपालन जैसा ही महत्त्व दिया जाना चहिए। संस्थाओं में अनुपालन अधिकारी का पद आंतरिक अनुपालन के महत्त्व को दर्शाता है।

उपसंहार

वर्तमान समय में सतर्कता तथा अनुपालन को प्रत्येक कर्मचारी की रग-रग में व्याप्त करना अनिवार्य हो गया है। प्रत्येक वर्ष सतर्कता सप्ताह मनाया जाता है। वर्ष 2020 के सतर्कता सप्ताह का विषय "सतर्क भरत, समृद्ध भारत" था। सतर्कता तथा समृद्धि में भी प्रत्यक्ष संबंध है। जब जब भ्रष्टाचार व धोखाधड़ी का स्तर बढ़ा है, समृद्धि व धारणीय विकास को भीषण आघात पहुंचा है। भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक भ्रष्टाचार को आंकने का अनूठा सूचक है। वर्ष 2019 के भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक के अनुसार कुल 180 राष्ट्रों में भारत का 80वां स्थान है। सतर्कता स्थापित करने में भारत को अभी लम्बा सफर तय करना है। विश्व आर्थिक मंच (World Economic Forum) के अनुसार भ्रष्टाचार से राष्ट्र जीडीपी को 5% तक हानि होती है। भारत जैसी अर्थव्यवस्था में इस हानि का मूल्य रू 921 बिलियन अनुमानित है। भ्रष्टाचार, रिश्वत जैसे नकारात्मक कारकों से न केवल वित्तीय हानि होती है अपितु धन के अपयोजन से देश में उपलब्ध अनेक मौलिक सुविधाएं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य व अनेक विकासशील कार्यों के लिए उपलब्ध धन का भंडार संकुचित होता है। इससे देश की समृद्धि प्रभावित होती है। अतः सतर्कता का अनुपालन किया जाना ही बैंकों तथा वित्तीय संस्थाओं की समृद्धि का मूल-मंत्र है।

विश्वासः करें या नहीं?

पूर्णिमा शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा
अंचल कार्यालय, जयपुर

जयपुर शहर के झोटवाड़ा क्षेत्र में पंजाब नैशनल बैंक के एटीएम से 17 लाख रूपए गायब मिले। एटीएम चोरी का मामला सामने आया और वही रिपोर्ट भी किया गया। झोटवाड़ा पुलिस थाने के स्टाफ ने आकर जांच-पड़ताल की। एटीएम का मुआयना किया और पाया कि एटीएम का लॉक नहीं तोड़ा गया है। चोरी करने वाला बिना एटीएम लॉक तोड़े कैसे इतनी बड़ी राशि निकाल पाया! अब यही सवाल था। पुलिस ने निष्कर्ष निकाला कि एटीएम मशीन का ताला और डिजिटल लॉक खोलकर लाखों रुपये की चोरी की थी। स्पष्ट हो गया कि कोई विश्वासपात्र, जिसे लॉक खोलने का अनुभव है, उसके द्वारा इस काम या कहें कि चोरी की वारदात को अंजाम दिया गया है।

सीसीटीवी फुटेज से पता लगा 31 जुलाई, 2020 को देर रात, पीएनबी के झोटवाड़ा ऑनसाईट एटीएम में बुरका पहने एक युवक ने एटीएम मशीन का लॉक और डिजिटल लॉक खोलने के बाद पैसे निकाले और भाग निकला। एटीएम में चोरी के बाद, झोटवाड़ा पुलिस स्टेशन के साथ मिलकर, डीएसटी पश्चिम के कर्मचारियों ने एटीएम केबिन के भीतर लगे सीसीटीवी डिजिटल कैमरा की फुटेज के आधार पर अपराधी को खोजने की कोशिश शुरू की। जांच के समय पुलिस को बैंक के एक स्टाफ सदस्य पर संदेह हुआ।

अंततः, पुलिस ने बैंक के ही स्टाफ सदस्य को एटीएम मशीन का लॉक और डिजिटल लॉक खोलकर 17 लाख रुपये से अधिक की धनराशि चोरी करने के आरोप में गिरफ्तार किया।

जांच के दौरान, पुलिस ने शाखा के कर्मचारियों पर नजर रखी और संदेह के आधार पर, उन्होंने शाखा के चपरासी को पकड़ा और उससे पूछताछ की। पुलिस ने आरोपी के पास से 17 लाख रुपये बरामद किए। आरोपी झोटवाड़ा शाखा में पिछले कई महीनों से तैनात था। इस दौरान उसने बैंक के अन्य कर्मचारियों का विश्वास प्राप्त किया। जिसके बाद वह उस टीम के साथ जाने लगा, जो एटीएम मशीन के भीतर पैसा रखती थी। लॉक और डिजिटल लॉक खोलते उसने कई बार टीम को देखा था।

धीरे-धीरे लालच में फंसकर उनसे चोरी की साजिश रची और मशीन का ताला और डिजिटल लॉक खोलकर चोरी की। योजना के अनुसार, आरोपी बाइक से रेलवे स्टेशन पहुंचा और वहां पार्किंग क्षेत्र के भीतर बाइक खड़ी करके पैदल एटीएम तक पहुंचा। उसने बुर्का पहनकर वारदात को अंजाम दिया।

घटना को देखें तो बैंक के भीतर स्टाफ की चोरी में भागीदारी के बारे में पता लगने के बाद, बैंक की सुरक्षा पर एक बड़ा प्रश्नचिह्न लग जाता है।

बैंक द्वारा सुरक्षा के लिए न जाने कितने प्रकार के उपाय अपनाए जा रहे हैं तथा सुरक्षा अधिकारियों द्वारा समय-समय पर उन मानकों की जाँच भी की जाती है। हालांकि यह चोरी स्टाफ सदस्य द्वारा की गई पर बैंक के मानकों के अनुसार लगे सीसीटीवी कैमरा की वजह से ये गुत्थी आसानी से सुलझा भी दी गई।

तो अब प्रश्न यह उठता है कि बैंक में सहकर्मियों पर विश्वास करें या नहीं?

है ना असमंजस! विश्वास करें, क्यूंकि उसके बिना न व्यक्तिगत जीवन का निर्वाह है और न ही कार्यालयी जीवन का। पर विश्वास उस सीमा रेखा के परे न करें जिसके आगे आपको या बैंक हित को हानि पहुंचे। जिस प्रकार हम पड़ोसी को घर की चाबी नहीं सौंपते, ठीक उसी प्रकार अपने बैंकिंग पासवर्ड भी किसी को नहीं सौंपे जाने चाहिए। कभी-कभी जिस व्यक्ति के पासवर्ड का प्रयोग कर फ्रॉड या धोखाधड़ी को अंजाम दिया जाता है, उसे पता ही नहीं होता। पर जांच के दायरे में डिजिटल प्रमाणों के चलते वही व्यक्ति आता है।

जितना आवश्यक है ईमानदार होना, उतना ही आवश्यक है सतर्क होना। चूंकि हम एक वित्तीय संस्थान में कार्यरत हैं, हम बैंक में रखे ग्राहकों की धनराशि के संरक्षक भी हैं और वही हमारे लाभ का स्त्रोत भी है। अतः हमें सदैव सतर्क रहना चाहिए। अपने आसपास में कार्यरत स्टाफ के व्यवहार पर संदेह होने पर उसे उच्चाधिकारियों की जानकारी में लाना चाहिए। कितने मामले हैं, जिनमें जरा सी सावधानी न रखने पर करोड़ों के फ्रॉड हो जाते हैं, और जरा सी सावधानी रखने पर करोड़ों के फ्रॉड बच भी जाते हैं।

प्रतिवर्ष हम सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन करते हैं, हम सभी सतर्कता की प्रतिज्ञा भी लेते हैं। पर हमें यह समझना होगा कि सतर्कता जागरूकता सप्ताह का उद्देश्य मात्र सतर्कता की प्रतिज्ञा लेने तक सीमित नहीं है। प्रतिवर्ष बढ़ते विजिलेंस के मामलों से हमें यह सीखना चाहिए कि हमें वास्तव में सतर्क रहना भी है और दूसरों को करना भी है।

किसी ने सही कहा है, सावधानी ही सुरक्षा है! **सावधानी हटी और दुर्घटना घटी।**

कोरोना-संकट

आया तो यूँ बहुत पहले
वुहान में था कोसों दूर
तब तक मुलाकात न थी
पर खबरों में सुगबुगाहट थी

चलते चलते मीलों चला
देश-विदेश हर जगह मिला
अचानक से एक शब्द मिला
लॉकडाउन में पूरा देश हिला

रफ्तार कभी थमती न थी
पर ट्रेन के रास्ते भी बंद हुए
लोग घरों में कैद हुए
निराशा-हताशा में डूब चले

शवों की हुजूम खत्म न हुई
जमीन के इंच भी दफन को महंगे हुए
मौत पर शवों से लिपटने वाले
अपनों के मौत पे फिर खामोश हुए

छूना और गले मिलना तो
एक गज की दूरी पे सिमट चला
कल के सपने जीने वाले
हम आज में ही सहम गए

घंटे और समय के चक्कर
बड़ी मुसीबत से तब लगने लगे
2020 का दौर उस वक्त
हर पल इतिहास था रचने लगा

सभ्यता और विज्ञान का आईना
एक दम धुन्धला सा लगा
पर हम भी विवेक में अव्वल
उस भगवान के बनाये इन्सान जो थे

डॉक्टर और सफाई कर्मी,
बैंक और पुलिसकर्मी
हम सब ने अपने भगवान को ढूँढा
मानवता की रक्षा में जीवन की निरंतरता में
हिम्मत और साहस लिए एक बड़ा सैलाब चला

कितनों ने दुनिया छोड़ी
ताकि और का घर-संसार रहे
इस भावना ने ही तो दुनिया की
कितनी समस्याओं और
बाधाओं के निदान किये
हम हैं हमारी सभ्यता है, युगों तक
सदियों तक आने वाली करोड़ों पीढ़ियों तक

क्योंकि हम इंसान हैं, हमसे करूणा है
सेवा है, दया का मान है
भगवान प्रत्यक्ष न होकर भी
हममें है करूणा बनकर,
परोपकार का बीज बनकर

संसार है, क्यूंकि हम साथ है
एक गज क्या कोसों दूर होकर भी
कोरोना का कोई संकट
ऐसे ही रह जायेगा,
बीते कल की बात बनकर

शशांक उपाध्याय
सह-प्रबंधक,
दरबा रोड शाखा,
कोलकाता पूर्व

सतर्कता और भारत

"एक स्वप्न देखा था कल रात
सतर्क भारत हो समृद्ध विचार
न हो भ्रष्टाचार न हो कोई अभिशाप
सोने की चिड़िया बने फिर से यह भारत आज"

केन्द्रीय सतर्कता आयोग ने इस बार सतर्कता को 'सतर्क भारत, समृद्ध भारत' थीम के साथ आयोजित करने का फैसला लिया गया है। 'सतर्क भारत, समृद्ध भारत' का उद्देश्य नागरिकों को भ्रष्टाचार से होने वाले खतरों के बारे में जागरूक करना तथा भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में जानकारी देना है। एक समृद्ध भारत का निर्माण तभी संभव है, जब हमारा भारत देश भ्रष्टाचार मुक्त हो। सरदार पटेल जी का जन्म 31 अक्टूबर को हुआ था, उन्होंने भारत की एकता बनाए रखने तथा भ्रष्टाचार से मुक्ति के लिए लोगों को जागरूक करने में बड़ा योगदान दिया, इसलिए अक्टूबर के अंतिम सप्ताह को सतर्कता सप्ताह के रूप में मनाया जाता है।

'भ्रष्टाचार' शब्द 'भ्रष्ट' और 'आचार' शब्द से मिलकर बना है। भ्रष्टाचार का अर्थ यह है कि अनैतिक एवं समुचित कार्य करना। भ्रष्टाचार एक ऐसी बीमारी है, जो हमारे सुन्दर भारत देश को भीतर से बुरी तरह प्रभावित कर समाज तथा देश के विकास में बाधा पैदा कर रही है। भ्रष्टाचार की जड़ें राजनीति, शिक्षा, उद्योग, प्रशासन आदि के क्षेत्र में इतनी फैल चुकी हैं कि इससे मुक्ति मिलना बहुत कठिन लग रहा है। जिन्हें देखकर ऐसा लगता है कि मानो।

"जंगल छोड़ भेड़िए शहरों में आने लगे
सुन्दर लिबासों में शरीफों को लुभाने लगे
ज़मीर बेचने का व्यापार चल पड़ा है
लालच में हर कोई मचल पड़ा है"

भ्रष्टाचार का मुख्य कारण है, असंतोष, लालसा। व्यक्ति को सब कुछ जल्दी से पाने की ईच्छा, अमीर बनने की लालसा उसे भ्रष्टाचार की ओर आकर्षित करती है। भ्रष्टाचार के कारण ही व्यक्ति में भय, चिंता आदि समस्याएं उत्पन्न होकर मनुष्य सुख छोड़ अत्यधिक दुखी हो जाता है। अधिक धन की लालसा से ना तो वह चैन से रह पाता है, ना ही चैन से सो पाता है। हम भारत को विकसित देश बनाने की कामना लिए बैठे हैं, तब

"सतर्कता जीवन का है मुख्य आधार
भारत को बना सकता है जो सम्पूर्ण ईमानदार"

मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जोकि सोचने, समझने की क्षमता लिए रहता है, वह अपना अच्छा, बुरा सोच सकता है तथा कई तरह के अधिकार उसे दिए गए हैं जिनका वह उपयोग कर सकता है। भारत एक लोकतान्त्रिक देश है, जहाँ प्रत्येक नागरिक को सभी प्रकार की गतिविधियों से संबंधित सूचनाएं जानने का अधिकार है किन्तु वर्तमान समय में कुछ लोग अपने लालच के लिए आज भी भारत की जड़ों को खोखला कर रहे हैं, वे जहाँ खाते हैं, रहते हैं, जिस हवा में सांस लेते हैं उसी मातृभूमि को बदले में भ्रष्टाचार, आतंकवाद, काला धन इत्यादि बुराईयों को दे रहे हैं।

भारत में निरंतर फैल रही ये बुराईयां अपना शिकंजा कसती जा रही हैं, जिसका एक मात्र निवारण सतर्कता ही है। सतर्कता का अर्थ होता है, विशेष रूप से कर्मियों और सामान्य रूप से संस्थानों की दक्षता एवं प्रभावशीलता की प्राप्ति के लिए स्वच्छ तथा त्वरित प्रसाशनिक कार्रवाई सुनिश्चित करना, क्योंकि सतर्कता के अभाव से आर्थिक हानि, अपव्यय एवं आर्थिक पतन के कारण उत्पन्न हो सकते हैं। भारत में भ्रष्टाचार इत्यादि पर ध्यान केन्द्रित करने हेतु सरकार द्वारा संथानम समिति की अनुशंसा पर केन्द्रीय सतर्कता आयोग का गठन किया गया है जोकि केन्द्रीय सरकार के अंतर्गत सभी सतर्कता गतिविधियों की निगरानी करता है।

सतर्क और जागरूक रहना किसी भी इन्सान, समाज और देश के विकास के लिए बहुत ही सहायक होता है। जो समाज और देश के विकास के लिए बहुत ही आवश्यक है। जो समाज और राष्ट्र जागरूक और सतर्क नहीं होता उसे बड़ी ही तकलीफे उठानी पड़ती हैं। जिसका एक उदहारण आप अपने देश के रूप में ले सकते हैं जो असतर्कता में सैंकड़ों सालों तक गुलाम रहा और आजादी के लिए एक बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। अतः देश की समृद्धि हेतु देश का सतर्क होना अति आवश्यक है।

"एक कदम मैं चलूं, एक कदम तू चल
जाति, धर्म, पंथ को भूलकर
एक कदम चल कर देश सतर्कता के उसूल पर"

इस वर्ष "सतर्कता जागरूकता सप्ताह" के अंतर्गत "सतर्क भारत, समृद्ध भारत" अभियान चलाया गया जिसमें लोगों को जागरूक कर भ्रष्टाचार से मुक्ति के प्रयासों पर जोर दिया गया। इस अभियान का प्रमुख उद्देश्य है-

- योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा करना
- प्रशासन में पारदर्शिता एवं जवाबदेही सुनिश्चित करना
- देश के नागरिकों को भ्रष्टाचार से लड़ने हेतु जागरूक करना
- लोक प्रशासन में ईमानदारी सुनिश्चित करना
- शासन में प्रणालीगत सुधार हेतु सतर्कता कार्य की योजना बनाना
- भ्रष्टाचार के प्रति आम आदमी विशेषकर युवाओं में जागरूकता पैदा करना

सतर्क भारत – समृद्ध भारत अभियान के उद्देश्य

सतर्क भारत, समृद्ध भारत अभियान की आवश्यकता इसलिए है, क्योंकि इस प्रकार के अभियान के माध्यम से जागरूकता और सतर्कता फैलाने के प्रयास किए जाते हैं, हजारों-लाखों की संख्या में लोग शामिल होते हैं। निरक्षर लोगों को समझाने में आसानी होती है, क्योंकि सतर्कता व जागरूकता उनके ही लोकल लोगों के द्वारा फैलाई जा रही होती है। साथ ही रेडियो एवं टेलिविजन के माध्यम से उन्हें जागरूक करने के हर संभव प्रयास किए जाते हैं। पैम्पलेट्स तथा बैनर के माध्यम से शिक्षित एवं अशिक्षित दोनों प्रकार के लोगों को जरुरी जानकारी दी जाती है। ऐसे कार्यक्रमों को समाज के ऐसे भागों में पहुंचाकर जागरूकता फैलाई जाती है, जो उनके व्यक्तिगत अभावों के कारण समाज से कट चुके हैं।

द्वेष, हिंसा को मिटाकर हमें
एक नयी ज्योति को जलाकर हमें।
सतर्कता को अपनाकर हमें
भारत को समृद्ध करना है हमें।।

आज भारत सतर्कता एवं समृद्धि की ओर अपने कदम बढ़ा रहा है, आज भारत अपने आत्मनिर्भर बनने के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए राष्ट्रव्यापी आत्मविश्वास एवं दृढ संकल्प के साथ पूर्णतया सतर्क और तैयार हैद्य भारत की प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता, वैचारिक उन्नतिशिलता व संवेदनशीलता तथा अध्यात्मिक पवित्रता व निर्मलता इसे समृद्ध बनाती है। पर्यावरण सरंक्षण, स्वच्छता, स्वास्थ्य और आध्यात्मिकता, वैज्ञानिक पद्धति से खेती की पूरी निष्ठां और सतर्कता से नित्त नए बढ़ते कदम, इसे कृषि जनित नई उंचाईयों की और ले जा सकते हैं। दुनिया में सर्वाधिक युवा शक्ति वाले हमारे देश के जाबांज सैनिकों की शुर वीरता और सतर्कता के चलते हमारी सीमाएं सदा सुरक्षित हैं। हर आम आदमी की सुख सुविधा को लेकर भी भारत पूरी तरह से सतर्क है, मुस्तैद हो रहा है। गाँव को शहर से और शहर को महानगरों से जल, थल एवं वायु मार्गों से जोड़ने का बेजोड़ काम किया जा रहा है। गरीबों, श्रमिकों, किसानों, हर तबके के पास सूचना-प्रौद्योगिकी की पहुँच से उनको सक्षम बनाने के लिए बनाई गई समूची योजनाएं सुविधापूर्वक आसानी से व सार्थकतापूर्वक लागू हुई हैं, जिससे आत्मनिर्भरता बढ़ी है, ज्ञान-विज्ञान, पर्यावरण सुरक्षा आदि सभी क्षेत्रों में समय रहते सतर्कता के चलते सशक्त, सम्पन्न व समृद्ध भारत की परिकल्पना साकार हो रही है।

"सतर्कता कोई रूप नहीं, यह तो हमारा अधिकार है
हम माटी के पुतले नहीं, समृद्धि हमारी पहचान है"
"अपने हक के प्रति सतर्क रहेगा भारत
अपने अधिकारों के प्रति भी सतर्क रहेगा भारत।
और वह दिन दूर नहीं
जब पूरी तरह से समृद्ध बनेगा भारत।।"

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि किसी भी देश को समृद्ध एवं जागरूक बनाने के पीछे किसी एक व्यक्ति का हाथ नहीं होता है। समृद्ध राष्ट्र बनाने के पीछे महत्वपूर्ण योगदान वहां की जनता का होता है हमारा देश पूरे विश्व में एक प्रसिद्ध देश है। भारत को आजाद हुए काफी समय हो चुका है लेकिन आज भी भारत में गरीबी, अपराध, भुखमरी खत्म न होकर दिन-प्रतिदिन बढती जा रही है। इसमें मुख्य हाथ भ्रष्टाचार का ही होता है। यदि देश को आजादी के बाद किसी ने तंग किया है तो वो है भ्रष्टाचार। कुछ दुराचारी लोग अपने स्वार्थ के लिए देश को खोखला किए जा रहे हैं। इसका सर्वाधिक प्रभाव गरीब वर्ग पर पड़ता है, क्योंकि

अमीर लोग तो रिश्वत लेकर अपने कार्य करा लेते हैं। परन्तु आम आदमी इतने पैसे कहाँ से लाए।

यदि हमें अपने देश को भ्रष्टाचार से मुक्त करना है तो हम सभी को सतर्कता अपनानी होगी, क्योंकि अक्सर यह देखा गया है कि जो समाज या देश जागरूक और सतर्क नहीं होता उसे बहुत सी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। भारत को समृद्ध बनाने के लिए हमें मिलजुल कर प्रयास करने होंगे। सतर्कता तथा जागरूकता की शुरुआत हमें खुद से ही करनी होगी तभी जाकर हमारा भारत सतर्क एवं समृद्ध रहेगा।

सतर्कता निवारण ही एकमात्र उपाय
भारत को जो पूर्णतः समृद्ध बनाए।
एक पथ पर चलना सिखाए
दूसरी ओर सर्वश्रेष्ठ बनाए।।

आज भारत एक ताकतवर देश बनता जा रहा है, यहाँ कि समृद्ध होती अर्थव्यवस्था के साथ-साथ भ्रष्टाचार के खतरे में भी वृद्धि करती है। भ्रष्टाचार देश की आर्थिक, राजनितिक और सामाजिक विकास की ज्ञात बाधाओं में सबसे बड़ी बाधा मानी जाती है। यह सर्वविदित है कि सतर्क होना इसके निराकरण का मूल है।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह तभी मनाना सफल है
जब हर भारतीय अपने अधिकारों के प्रति प्रबल है।
गरीब हो या अमीर सभी का अधिकार कुशल है
तभी यह समृद्ध भारत का सपना पूरा सफल है।।

यदि हम बात करें कि कैसे हम सतर्क रह सकते हैं। एवं इसका समृद्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है तब पाएंगे कि सर्वप्रथम हमें स्वयं के स्तर पर सतर्क होने की आवश्यकता है। इससे हम जीवन के सभी क्षेत्रों में ईमानदारी और पारदर्शी रीति से आचरण कर पाएंगें आपका यह आचरण आपको सतर्क बनाता है तथा अपना सकारात्मक प्रभाव आपके कार्यक्षेत्र में छोड़ता है। देश को समृद्ध बनाता है।

सामाजिक व परिवार स्तर पर बात करें तो समाज एवं परिवार के कार्य का मुख्य उद्देश्य जनहित और समानता होना चाहिए इसका अनुपालन समाज/परिवार/संस्थान को सतर्क एवं समृद्ध बनाता है एवं एक अच्छे कार्य वातावरण एवं कर्मठता का निर्माण होता है। गुरूद्वारे की लंगर व्यवस्था जनहित और समानता के प्रति सतर्कता का अच्छा उदहारण है। जो समाज को मानसिक समृद्धि की ओर अग्रसित करता है।

देश के स्तर पर ज्ञान, विज्ञान, पर्यावरण, अर्थव्यवस्था नागरिकों की सुरक्षा आदि के प्रति सतर्क होना देश की दशा और दिशा को ही परिवर्तित कर देती है। अभी कुछ समय पहले भारतीय जांबाज पायलट श्री अभिनन्दन जी अपना पराक्रम दिखाते हुए दुश्मन की सीमा में प्रवेश कर गये थे। सतर्क प्रतिक्रिया, कर्मठ व्यवस्था तथा संस्थानों के कार्य वातावरण ने देश के जांबाज के मान-समान की रक्षा की। जिससे देश के सामरिक एवं वैश्विक समृद्धि में सतर्कता का अमूल्य योगदान हुआ ।

"भारत रंग नहीं आतंकवाद का
ना ही यह रंग है भ्रष्टाचार का
यह तो रंग है सतर्कता का
समृद्धि जिसका आधार है।"

आज आवश्यकता है हमें इतिहास के कुछ पृष्ठों को पलटकर देखने की, इतिहास गवाह है जब-जब भारत में बुराई रूपी रावण आया है तब-तब राम ने अवतार लेकर उसका सर्वनाश किया है, आज उसी रावण का रूप भ्रष्टाचार, घूसखोरी, कालाबाजारी, जमाखोरी इत्यादि ने ले लिया है अतः इसका समाधान हर नागरिक द्वारा राम का अवतार लेकर उसका वध करने से होगा।

सर्वप्रथम आवश्यक है कि हर व्यक्ति अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाए, कुछ गलत होते देखकर उसका विरोध करें क्योंकि भारत एक ऐसा देश है जहाँ जनता का जनता के लिए, जनता द्वारा शासन किया जाता है। अतः वास्तविक शक्ति तो हर एक नागरिक में विद्यमान है, साथ ही हमें अपनी वैचारिक परिवर्तन करने की विशेष आवश्यकता है क्योंकि अगर विचारों को शुद्ध कर दिया गया तो कोई ताकत नहीं जो हमें लालच का भागीदार बना सके, क्योंकि कहा भी गया है जैसा बोया जाता है वैसा ही भविष्य में काटा जाता है।

हर व्यक्ति यह संकल्प लें कि वह न गलत करेगा न गलत होने देगा, अपने अधिकारों के प्रति सतर्क रहेगा जब तक हर इंसान अपने अधिकारों, अपने हक के लिए निडर होकर सामने नहीं आएगा तब तक भारत भ्रष्टाचार के शिकंजे से बाहर नहीं निकल पाएगा। आज मुझे बुजुर्गों द्वारा कही गयी बात याद आती है, कि "जीवन भले ही कम जिया जाए किन्तु जो भी जिया जाए सम्मान से ही जिया जाए" अतः आवश्यक है कि व्यक्ति अपने हक के लिए खुद सामने आए। सामान्य नागरिकों को बहुत सारे अधिकार दिए गए हैं जैसे - सूचना का अधिकार, उपभोक्ता संरक्षण का अधिकार इत्यादि। सबसे अहम् बात यह है कि व्यक्ति अपने विचारों को खुद शुद्ध करे, पारदर्शी करे तो कोई भी व्यक्ति भ्रष्टाचार रूपी रावण इस समाज में जन्म ले सकता है इसलिए हमें मिलजुल कर प्रयास करने की जरूरत है। सतर्कता तथा जागरूकता की शुरुआत हमें खुद से ही करनी होगी तभी जाकर हमारा देश "सतर्क देश एवं समृद्ध देश बनेगा" भ्रष्टाचार मुक्त भारत का सपना यदि देखना है और पूरा करना है, तो इसमें हर नागरिक का योगदान महत्वपूर्ण है, तभी भारत कोहिनूर की भांति सर्वश्रेष्ठ पद पर चमकता रहेगा। अतः जब हक के लिए और बुराईयों के खिलाफ आवाज उठाएगा देश तभी तो आगे बढ़ेगा देश।

"बुराईयों से नहीं डरना है,
सतर्क हमें रहना है।
भ्रष्टाचार को खत्म करना है,
सतर्क-समृद्ध भारत करना है।"

सचिन कुमार गोयल
प्रबन्धक
मंडल कार्यालय, अलवर

अनुरोध

पीएनबी स्टाफ जर्नल/प्रतिभा के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं रचनाओं के बारे में यदि आप अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवगत कराएंगे तो हम इसके लिए आपके आभारी होंगे। निःसंदेह इससे पत्रिका के आगामी अंकों को और सुन्दर तथा सुरुचिपूर्ण बनाने में हमें सहायता मिलेगी। आपके बहुमूल्य सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

पत्रिका में सभी स्टाफ सदस्यों, उनके परिवारजनों तथा सेवानिवृत स्टाफ सदस्यों की रचनाएँ भी स्वीकार्य हैं। आप सभी के सहयोग से हम इस पत्रिका को एक पारिवारिक पत्रिका बनाने की ओर अग्रसर रहेंगे।

अंचल कार्यालयों में नियुक्त पीएनबी स्टाफ जर्नल के प्रतिनिधियों से अनुरोध है कि वे अपने संबंधित मंडल कार्यालयों में नियुक्त अधिकारियों से पत्रिका में प्रकाशन योग्य सामग्री एकत्रित करके ई-मेल pnbstaffjournal@pnb.co.in पर या सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, द्वारका, नई दिल्ली को भिजवाना सुनिश्चित करें।

पीएनबी प्रतिभा के आगामी दो अंक कृषि एवं वित्तीय समावेशन विशेषांक (जनवरी-मार्च, 2021) व मानव संसाधन विशेषांक (अप्रैल-जून, 2021) के रूप में प्रकाशित किए जाएंगे।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा दिल्ली बैंक नराकास के साथ विचार-विमर्श बैठक।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप-समिति द्वारा दिनांक 17.11.2020 को पंजाब नैशनल बैंक के संयोजन में स्थापित देश की प्रतिष्ठित नराकासों में से एक दिल्ली बैंक नराकास के अध्यक्ष तथा इसके 10 सदस्य कार्यालयों के साथ राजभाषायी निरीक्षण संबधी विचार-विमर्श बैठक का आयोजन, नई दिल्ली में किया गया।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण के समन्वय का कार्य पंजाब नैशनल बैंक को सौंपा गया था, जिसे पंजाब नैशनल बैंक द्वारा सफलतापूर्वक पूर्ण किया गया।

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उपसमिति के निरीक्षण के दौरान माननीय संसदीय समिति के निम्नलिखित सदस्य उपस्थित रहे:-

क्र. स.	समिति के सदस्यों के नाम	पदनाम
1	श्री भर्तृहरि महताब	अध्यक्ष, (संसद सदस्य, लोक सभा)
2	प्रो. राम गोपाल यादव	सदस्य (संसद सदस्य, राज्य सभा)
3	श्री श्रीरंग आप्पा बारणे	सदस्य (संसद सदस्य, लोक सभा)
4	श्री प्रदीप टम्टा	सदस्य (संसद सदस्य, राज्य सभा)
5	डॉ. सुमीत जैरथ	सचिव राजभाषा, आईएएस
6	श्री गोपी चन्द्र छावनिया	सचिव (समिति)
7	डॉ. सत्येन्द्र सिंह	वरि. अनुसंधान अधिकारी
8	श्रीमती एकता सहरावत	अवर सचिव
9	श्री कमल स्वरूप	अनुसंधान अधिकारी
10	श्री मुकेश शर्मा	समिति रिपोर्टर
11	श्री अब्दुल मोहीब	समिति सहायक
12	श्री कुमार पाल शर्मा	उप निदेशक, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 (दिल्ली)

क्र.सं.	दिल्ली बैंक नराकास (संयोजक-पंजाब नैशनल बैंक) एवं निरीक्षित सदस्य कार्यालय		
1	श्री राम कुमार	अध्यक्ष - दिल्ली बैंक नराकास एवं मुख्य महाप्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक	
2	श्रीमती मनीषा शर्मा	सदस्य सचिव -दिल्ली बैंक नराकास एवं सहायक महाप्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक	
क्र. स.	निरीक्षित कार्यालय का नाम	उपस्थित उच्चाधिकारी (सर्वश्री/सुश्री)	पदनाम
1	भारतीय रिजर्व बैंक, नई दिल्ली (RBI)	श्री अजय कुमार	क्षेत्रीय निदेशक (RD)
2	राष्ट्रीय आवास बैंक (NHB)	श्री शारदा कुमार होता	प्रबंध निदेशक (MD)
3	आईआईएफसीएल, नई दिल्ली (IIFCL)	श्री पद्मनाभन राजा जयशंकर	प्रबंध निदेशक (MD)
4	आईएफसीआई लिमिटेड (IFCI Ltd.)	श्री सुनील कुमार बंसल	उप प्रबंध निदेशक (DMD)
5	भारतीय निर्यात-आयात बैंक (EXIM BANK)	श्री तरुण शर्मा	मुख्य महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख (CGM)
6	भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (SIDBI)	डॉ. शुभ्रांशु शेखर आचार्य	महाप्रबंधक (GM)
7	राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (NABARD)	श्री विवेक कृष्ण सिन्हा	महाप्रबंधक/प्रभारी अधिकारी (GM)
8	बैंक ऑफ बड़ौदा (BOB)	श्रीमती सम्पिता सचदेव	महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख (GM)
9	इण्डियन ओवरसीज बैंक (IOB)	श्री श्याम सुंदर नारंग	उप महाप्रबंधक (DGM)
10	इंडियन बैंक (INDAIN BANK)	श्री राकेश कुमार अग्रवाल	अंचल प्रबंधक एवं उप महाप्रबंधक DGM)

दिल्ली बैंक नराकास के अध्यक्ष एवं उक्त 10 सदस्य कार्यालयों के साथ निरीक्षण संबंधी विचार-विमर्श बैठक का आयोजन सफल रहा एवं माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उपसमिति द्वारा निरीक्षण के दौरान अध्यक्षीय प्रश्नावली तथा उक्त कार्यालयों की निरीक्षण प्रश्नावली के विभिन्न मदों पर चर्चा की गई। माननीय समिति के अध्यक्ष महोदय द्वारा कहा गया कि राजभाषा के सफल कार्यान्वयन में नराकास की महत्वपूर्ण भूमिका है तथा राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ाने के लिए नराकास के मंच से और अधिक नवोन्मेषी कार्य किए जाएं।

अंचल प्रबन्धक सम्मेलन

प्रधान कार्यालय, द्वारका, नई दिल्ली द्वारा आयोजित अंचल प्रबंधक सम्मेलन के दौरान उपस्थित प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, कार्यपालक निदेशकगण श्री विजय दुबे, श्री संजय कुमार तथा श्री आशीष कुमार आजाद।

प्रधान कार्यालय, द्वारका, नई दिल्ली द्वारा आयोजित अंचल प्रबंधक सम्मेलन के दौरान अंचल प्रबन्धकों को सम्बोधित करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव।

अंचल प्रबन्धक सम्मेलन

सतर्क भारत से ही बनेगा समृद्ध भारत

"स्वर्ग अभी सब से ऊपर है। वहां एक न्यायाधीश बैठता है जहां कोई राजा भ्रष्ट नहीं हो सकता-विलियम शेक्सपियर"

भारत एक सुन्दर देश है जो अपनी विभिन्न संस्कृतियों और परम्पराओं के लिए जाना जाता है। यह अपनी ऐतिहासिक विरासत और स्मारकों के लिए प्रसिद्ध है। भारत के नागरिक बहुत विनम्र हैं और प्रकृति से घुलते-मिलते हैं। जब हमारा देश भारत ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन था, प्रत्येक नागरिक के जीवन का उद्देश्य भारत को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराना था। तब उनके पास सोचने के लिए और कुछ नहीं था। आज स्वतंत्र भारत का परिदृश्य कुछ और है।

सतर्कता का अर्थ:- सतर्कता का अर्थ जैसा की ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में परिभाषित है - **"निगरानी"**। मोटे तौर पर इसका मतलब है - **"सावधान रहना"**। यह सावधानी घबराहट, नुकसान या किसी भी अवांछित परिस्थिति के खिलाफ हो सकती है। सतर्कता हमेशा सतर्क रहने और खुद के आसपास होने वाली दुर्घटनाओं से निपटने के लिए तैयार करती है। लोगों में सतर्कता के प्रति हमेशा गलत दृष्टिकोण होता है क्योंकि वे सतर्कता को जांच, जिम्मेदारी तय करना आदि मानते हैं। सतर्कता जांच नहीं है, बल्कि यह रोकथाम है। किसी के गलत करने पर उसको दण्डित करना परन्तु उसको ना रोकना, एक हैंडपंप के माध्यम से पानी को पंप करने के समान है, जो रिसावों को रोके बिना पानी, ऊर्जा और समय का अपव्यय करता है। सतर्कता की अवधारणा भ्रष्टाचार और कदाचार के कृत्यों को रोकना है। हम हर साल अक्टूबर के अंतिम सप्ताह को "सरदार वल्लभभाई पटेल" के जन्मदिन पर "सतर्कता जागरूकता सप्ताह" के रूप में मनाते हैं, जिसका उद्देश्य भ्रष्टाचार के प्रभावों के बारे में जागरूकता फैलाना है और जो लोग निरक्षर हैं उन्हें अपने अधिकारों के बारे में जागरूक करना है।

सतर्कता का उद्देश्य :- बाहरी खतरों से सुरक्षा के लिए एक देश सैन्यबलों के माध्यम से खुद को बचाता है। **"सतर्कता का उद्देश्य देश को आंतरिक खतरों से बचाना है जो बाहरी खतरों से अधिक गंभीर है"**। किसी देश को समृद्ध बनाने का उद्देश्य तब प्राप्त किया जा सकता है जब प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्य/गतिविधि के क्षेत्र में सतर्कता के मूल सिद्धांतों का पालन करे। जिसके लिए आवश्यक है:-

- प्रभावी प्रबंधन के लिए सहायता के रूप में कार्य करना।
- सभी गतिविधियों में पारदर्शिता और कार्य की बाधा मुक्त प्रगति सुनिश्चित करना।
- भारत के सभी नागरिकों का मनोबल बढ़ाना।
- चेतना रूपी सतर्कता के माध्यम से भारत के नागरिकों के बीच अखंडता को बढ़ावा देना।
- गलत इरादे और अच्छे विश्वास के साथ की गई गलतियों के बीच अन्तर करना।
- दंडात्मक उपायों द्वारा लोक सेवकों के साथ दुर्व्यवहार से निपटने के लिए भ्रष्टाचार को समाप्त करना।
- देश की जनता के लिए उपलब्ध मानवाधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाना।
- नियमों, कानूनों और प्रक्रियाओं का अनुपालन करने वाली देश की रणनीति के अनुसार प्रदर्शन सुनिश्चित करना और इस प्रकार अपनी आर्थिक उपलब्धियों के संबंध में देश का अधिकतम हित सुनिश्चित करना।

देश की समृद्धि में बाधा डालने वाले कारकों से सतर्कता की जरूरत:-

धोखाधड़ी :- राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो और भारतीय रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, बैंक धोखाधड़ी और जालसाजी जैसे सामान्य आर्थिक अपराध बढ़ रहे हैं। भारतीय बैंकों के अलावा, किसी भी अन्य क्षेत्र ने इतने अधिक आर्थिक अपराधों से होने वाले नुकसान का प्रदर्शन नहीं किया है। बैंक धोखाधड़ी

में वृद्धि चिंताजनक है, लेकिन यह ध्यान देने योग्य है कि हाल के वर्षों में धोखाधड़ी का पता लगाने पर अधिक ध्यान भारत में बैंक धोखाधड़ी की उच्च रिपोर्टिंग के लिए भी जिम्मेदार हो सकता है। नकली मुद्रा का बड़े पैमाने पर प्रसार अर्थव्यवस्था के साथ-साथ किसी भी देश की राष्ट्रीय सुरक्षा को कमजोर कर सकता है। यह लगभग सभी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में कुपोषण से उपजा है, जो धोखाधड़ी के मूल्य का 90% और धोखाधड़ी की संख्या का 55% है। आर्थिक धोखाधड़ी खतरनाक है क्योंकि उनकी क्षति तात्कालिक नुकसान या पीड़ितों से कहीं आगे तक बढ़ सकती है। आर्थिक अपराध वित्तीय स्थिरता को बाधित करते हैं और यहां तक कि राष्ट्र की समृद्धि को भी खतरे में डालते हैं।

सतर्कता की आवश्यकता:- धोखाधड़ी के खतरे से लड़ने के लिए बैंक की ओर से त्वरित और सक्रिय कार्रवाई की आवश्यकता है। बैंकों को धोखाधड़ी का पता लगाने की तारीख से तीन सप्ताह के भीतर उन्हें आपूर्ति की गई एक्सबीएलआर प्रणाली में एफएमआर एप्लिकेशन का इलेक्ट्रॉनिक रूप से उपयोग करते हुए, आरबीआई को व्यक्तिगत धोखाधड़ी के मामलों में धोखाधड़ी की निगरानी वापसी (एफएमआर) प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। भारतीय रिजर्व बैंक ने रोकथाम, सतर्कता जागरूकता, धोखाधड़ी का शीघ्र पता लगाने और रिपोर्टिंग के तंत्र को रखा है। ये निर्देश बैंकों को जांच एजेंसियों को रिपोर्ट करने जैसी समय पर परिणामी कार्रवाई करने के लिए, जल्दी धोखाधड़ी का पता लगाने और रिपोर्ट करने में सक्षम बनाने के उद्देश्य से जारी किए जाते हैं ताकि धोखेबाज को जल्द से जल्द पकड़ा जाए, कर्मचारियों की जवाबदेही की जल्दी जांच की जाए और प्रभावी धोखाधड़ी प्रबन्धन किया जाए। भारतीय रिजर्व बैंक ने ऋण धोखाधड़ी और रेड फ्लैग्ड किए गए खातों से निपटने के लिए एक रूपरेखा जारी की है। उपर्युक्त प्रक्रिया बैंकों में एक अच्छे क्रेडिट पोर्टफोलियो का निर्माण करेगा और एक स्वस्थ बैंकिंग प्रणाली का नेतृत्व करेगा जो अर्थव्यवस्था की वृद्धि और समृद्धि के लिए एक स्तम्भ होगा।

मिलीभगत :- दो या दो से अधिक दलों के बीच एक गुप्त समझौता, अपने कानूनी अधिकारों से अन्य लोगों को धोखा देने, गुमराह करने या धोखा देने से खुली प्रतिस्पर्धा को सीमित करने के लिए, या कानून द्वारा निषिद्ध उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए आमतौर पर अनुचित लाभ प्राप्त करना मिलीभगत का उदाहरण है। भारत में, कैंसर के इलाज की चाह रखने वाले लगभग आधे मरीज अपने निदान या उपचार से अनजान हैं। जब वह चिकित्सा कराने आते हैं, तो अधिकांश रोगी एक करीबी रिश्तेदार के साथ होते हैं, जिसमें अक्सर विभिन्न रूपों की मिलीभगत का उच्च प्रसार होता है। भारत के प्रतिस्पर्धा आयोग के अनुसार, भारत की समृद्धि में मिलीभगत के कारण उत्पन्न बाधाएं निम्नलिखित हैं :-

- शीर्ष पांच भारतीय टायर निर्माता, जो ऑटोमोटिव टायर निर्माताओं के संघ के साथ बाजार के 95% को नियंत्रित करते हैं, उनका कीमतों को ठीक करने के लिए कथित तौर पर टकराव।
- घरेलू जूट उद्योग द्वारा गुटबंदी।
- बाजार में मूल्य निर्धारण और बिक्री की शर्तों को पूरा करने के लिए बड़े पॉलिएस्टर निर्माताओं की एक साथ मिलीभगत।

सतर्कता की आवश्यकता:- बेईमानी और धन का गबन सरकारी वकील या सतर्कता/भ्रष्टाचार विरोधी एजेंसियों के क्षेत्र में आता है जबकि मिलीभगत या भ्रम फैलाना कानून के दायरे में आता है। आज मिलीभगत और प्रतिस्पर्धा दोनों से निपटने के लिए समन्वित प्रवर्तन की आवश्यकता है। यह इस कारण से है कि सीसीआई को केंद्रीय सतर्कता आयोग और राज्यों में सतर्कता आयोगों के साथ सहयोग के क्षेत्रों का पता लगाने की आवश्यकता है। जब हम इन पंक्तियों पर सोचते हैं और सहयोग के क्षेत्र को आगे बढ़ाने के लिए काम करते हैं, तो हम तत्काल भविष्य में सतर्कता और सार्वजनिक खरीद की जिम्मेदारी के साथ उन लोगों को शिक्षित और संवेदनशील बनाने की दृष्टि से गहन प्रतिस्पर्धा की वकालत कर सकते हैं। भारत के प्रतियोगिता आयोग को केंद्रीय और राज्य सतर्कता आयोग के साथ सार्थक तरीके से जुड़ने से बहुत लाभ होगा जो दोनों एजेंसियों में से प्रत्येक को अपनी जिम्मेदारी का बेहतर तरीके से निर्वाहन करने में मदद करेगा।

भ्रष्टाचार :- भारत में भ्रष्टाचार एक ऐसा मुद्दा है जो केंद्र, राज्य और स्थानीय सरकार की अर्थव्यवस्था को कई तरह से

प्रभावित करता है। भारत में भ्रष्टाचार के मुख्य कारणों में अत्यधिक विनिमय, जटिल कर और लाइसेंस प्रणाली, अपारदर्शी नौकरशाही और विवेकाधीन शक्तियों के साथ कई सरकारी विभाग, कुछ वस्तुओं और सेवा वितरण पर सरकारी नियंत्रित संस्थानों का एकाधिकार, पारदर्शी कानूनों और प्रक्रियाओं की कमी शामिल है। इसने न केवल अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाइयों पर पहुंचने से रोक दिया है, बल्कि बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार ने देश के विकास को प्रभावित किया है। भ्रष्टाचार का सबसे बड़ा योगदान पात्रता कार्यक्रम और भारत सरकार द्वारा लागू सामाजिक व्यय योजनाएं हैं। उदाहरणों में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम और राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन शामिल हैं। भ्रष्टाचार के अन्य क्षेत्रों में भारत का ट्रैकिंग उद्योग शामिल है, जो कई विनियामक को सालाना अरबों रुपए का भुगतान करने के लिए मजबूर है। हम अपने कार्यों के प्रभावों से अवगत नहीं हैं, जो हमारे देश की सामाजिक और आर्थिक समृद्धि को तबाह करते हैं।

"पाप कर्म में नहीं, प्रतिक्रिया में है - स्वामी चिन्मयानंद"

सतर्कता की आवश्यकता:- भ्रष्टाचार से बचने के लिए सतर्कता के उपकरण का उपयोग किया जाता है। सतर्कता ऐसे प्रहरी तैयार करती है जो शासन के प्रमुख क्षेत्रों में लालच को प्रवेश करने से रोकता है और इसके दायरे को कम करता है। सतर्कता में संगठन, इसकी नीतियों और इसके लोगों का अध्ययन शामिल है; और साथ ही प्रभावी उपायों को लागू करना भी, ताकि ये भ्रष्टाचार की चपेट में ना आ जाएं। सिविल सेवकों और उनके ग्राहकों के बीच बढ़े हुए संचार के माध्यम से भ्रष्टाचार को कम किया जा सकता है। जनहित याचिका एक मार्ग है जिसका उपयोग अदालतों से संपर्क करने के लिए किया जा सकता है और इस तरह से प्रशासन की नीतियों में बदलाव करने या भ्रष्टाचार की जांच के लिए कार्रवाई शुरू की जा सकती है। नागरिक केंद्रीय सतर्कता आयोग और लोकायुक्त जैसे एजेंसियों से संपर्क कर सकते हैं। उन्नति के साथ और दिन प्रतिदिन के जीवन और यहां तक कि सरकारी कार्यों में सूचना प्रद्यौगिकी का उपयोग, सूचना का तेजी से प्रसंस्करण न केवल भ्रष्टाचार के दायरे को कम करता

है, बल्कि नागरिकों की सेवा की गुणवत्ता में भी सुधार करता है। जनता की राय को आकार देने में इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सकता है। यदि हम चाहते हैं कि भारत समृद्ध हो, जिसमें सभी नागरिक अपने अधिकारों और जीवन की अच्छी गुणवत्ता का आनंद ले पाएं, तो भ्रष्टाचार से लड़ना सबसे महत्वपूर्ण जरुरत है। इस जरूरत का जवाब देना सरकार और नागरिक दोनों की जिम्मेदारी है।

उपसंहार :- अंतिम शब्दों में, सतर्कता का उद्देश्य कार्य की प्रगति का त्याग किए बिना भ्रष्टाचार को रोकना और देश की समृद्धि के उद्देश्य को प्राप्त करना है, जो बदले में प्रत्येक नागरिक के लिए मूल्यवान है। इसका उदेश्य प्रणाली में सुधार से अधिक पारदर्शिता लाना, आधुनिक तकनीक का उपयोग करके सिस्टम में खामियों को दूर करना एवं ईमानदारी से संस्कृति को प्रोत्साहित करना है। एक मजबूत सतर्कता प्रणाली जो भ्रष्टाचार को खत्म करने में सक्षम है, विकास की कुंजी है। ऊपर दिए गए बिंदु हमें अपने राष्ट्र को भ्रष्टाचार से मुक्त बनाने के लिए प्रेरित करते हैं ताकि हम समृद्ध हो सकें और समृद्धि का फल हमारे देश के प्रत्येक नागरिक के द्वारा साझा किया जा सके। आज प्रत्येक नागरिक को अपने अधिकारों के लिए सतर्क रहना होगा, तभी भारत समृद्ध भारत बन सकेगा क्योंकि सतर्कता सही इरादे वाले और ईमानदार लोगों के लिए एक दोस्त है।

"किसी चीज पर विश्वास करना, पर उसे नहीं अपनाना, बेईमानी है - महात्मा गांधी"।

रिया अग्रवाल
क्लर्क
शाखा कार्यालय, कानपुर

राजभाषा गतिविधियाँ

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से दिनांक 22 अगस्त से 14 सितम्बर 2020 तक ऑनलाइन प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसमें केंद्र सरकार के कार्यालयों तथा सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के राजभाषा अधिकारियों ने सहभागिता की। हमारे बैंक से प्रथम 10 जांचकर्ताओं की श्रेणी में श्री महेंद्र सिंह, वरिष्ठ प्रबन्धक ने 7वां स्थान प्राप्त किया तथा अनुवादकों की श्रेणी में सुश्री मधु कुमारी, प्रबंधक राजभाषा ने 16वां स्थान प्राप्त किया। इस उपलब्धि हेतु प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए श्री बी. एस. मान, मुख्य महाप्रबंधक-राजभाषा, श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा एवं श्री बलवेय कुमार मल्होत्रा, मुख्य प्रबंधक-राजभाषा। श्री महेन्द्र सिंह को डॉ. सुमीत जैरथ सचिव-राजभाषा, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा भी प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

मंडल कार्यालय फाजिल्का में हिन्दी कार्यशाला के आयोजन के दौरान उपस्थित मंडल प्रमुख श्री नरेश कुमार नागपाल तथा अन्य स्टाफ सदस्यगण।

नराकास पलवल की छमाही बैठक के दौरान उपस्थित मंडल प्रमुख, फरीदाबाद हरविन्द्र यादव, श्री बी. वी. बंसल अध्यक्ष पलवल नराकास, सदस्य सचिव, पलवल नराकास डॉ. साकेत सहाय।

सतर्कता प्रभाग, प्रधान कार्यालय द्वारा सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर डॉ. स्वस्ति नाथ झा, राजभाषा अधिकारी को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री विक्रर सिंह मान, साथ में हैं प्रभागीय प्रमुख राजभाषा (सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा) श्रीमती मनीषा शर्मा तथा मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा) श्री बलवेय कुमार मल्होत्रा।

प्रबंधकीय उत्कर्ष में सतर्कता का योगदान

पायल
प्रबन्धक
मंडल कार्यालय, फाजिल्का

जागरूकता को जीवन में उतारें, जागरूकता से जीवन संवारें

बैंकों में प्रबंधन प्रणाली के तीन स्तर होते हैं, अ) कनिष्ठ प्रबंधन ब) मध्यम प्रबंधन और स) वरिष्ठ प्रबंधन आदि प्रत्येक स्तर का एक दूसरे स्तर के साथ अत्यंत आत्मिक संबंध होता है। इसे हम दूसरे शब्दों में इस प्रकार भी कह सकते हैं कि वरिष्ठ प्रबंधन अथवा कार्यपालक वर्गों का प्रथम सोपान ''कनिष्ठ प्रबंधन'' वर्ग होता है। यदि कार्यप्रणाली के संदर्भ में विचार किया जाए तो प्रत्येक स्तर की कार्यप्रणाली में प्रायः निश्चित रूप से श्रृंखलाबद्ध परिवर्तन देखा जाता है। प्रबन्धन प्रणाली के यह तीनों स्तर परिवर्तनशील होते हैं, जैसा कि पहले कहा गया है कि ''कनिष्ठ प्रबंधन'' यह प्रबंधन प्रणाली का प्रथम सोपान है, द्वितीय सोपान है ''मध्यम प्रबंधन'' और अंतिम है ''वरिष्ठ प्रबंधन''।

प्रबंधन चाहे बैंकिंग या वित्तीय अथवा किसी भी क्षेत्र का हो, उस प्रबंधन में पाँच कार्य महत्वपूर्ण होते है, जिसमें 1) नियोजन 2) नेतृत्व 3) संगठन और समन्वयन 4) नियंत्रण और 5) अन्य आदि। बैंकिंग प्रबंधन प्रणाली के उपर्युक्त तीनों स्तरों में यह पाँच कार्य अनिवार्य रूप से पाये जाते हैं और बैंकिंग संगठन ही नहीं किसी भी संगठन की कार्यप्रणाली को सक्षम बनाने के लिए सतर्कता की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

प्रबंधन के सिद्धांत

सिद्धांत के अलावा प्रबंधन की परिकल्पना नहीं की जा सकती। संगठन का उत्कर्ष तभी संभव है, जब प्रबंधन के सिद्धांत का कड़ाई से अनुपालन किया जाता है। पाश्चात्य विचारक ग्यूलिक और अर्विक ने प्रबंधन के प्रशासन को ''विज्ञान'' माना है और निम्नगत सिद्धांत प्रस्तुत किये हैः-

अ) संगठन की रचना में योग्य कर्मचारियों की नियुक्ति करना।

आ) वरिष्ठतम प्रबंधन को संगठन की पूर्णसत्ता प्रदान करना।

इ) आदेश की एकरूपता का पूरा-पूरा अनुपालन करना।

ई) विशिष्ट और सामान्य कर्मचारियों का सही आधार पर विभागीकरण करना।

उ) अपवाद के सिद्धांत का हर स्तर पर उपयोग करना।

ऊ) उत्तरदायित्व और अधिकार शक्ति में एकरूपता बनाये रखना।

क) प्रत्येक अधिकारी के नियंत्रण की सीमा तय करना।

उपर्युक्त सिद्धांत प्रबंधकीय उत्कर्षता के आवश्यक तत्व साबित होते हैं हम इस लेख के माध्यम से प्रबंधकीय उत्कर्षता में सतर्कता की भूमिका पर कुछ मौलिक चिंतन प्रस्तुत कर रहें हैं।

सतर्कता क्या है?

सतर्कता एक ऐसा तत्व है, जो हमें सावधान रहने की ओर संकेत करता है। युग चाहे प्राचीन हो या आधुनिक। सतर्कता का महत्व उतना ही रहेगा। सतर्कता के संदर्भ में आज-कल एक तर्क सामने आ रहा है कि, ''हमें कम्प्यूटरीकरण के जमाने में इतने सतर्क रहने की क्या आवश्यकता है।'' जैसे आज बैंकिंग व्यवसाय में सूचना प्रौद्योगिकी ने दस्तक दी है और हमारे प्रबंधन प्रणाली के समक्ष सतर्कता की भूमिका को सक्षम बनाया है। जब सन 1994 में भारत में पहली बार ''एटीएम प्रणाली'' की शुरुआत हुई तब ग्राहकों द्वारा इस तकनीकी के बारे में कई सवाल उठाये गये कि, ''क्या यह तकनीकी वास्तव में सफल होगी''और यह तकनीकी एक ऐसे मोड़ पर पहुंच गई है कि आज हम किसी बैंक के एटीएम से आसानी के साथ पैसों की लेन-देन कर सकते हैं। ''सतर्कता'' का तात्पर्य भ्रष्टाचार एवं धोखाधड़ी से सावधानी बरतने से है। बैंकिंग ही नहीं किसी भी संगठन में ''सतर्कता'' का अनुपालन करना आज के समय की मांग है। आज बैंकिंग संगठन में सतर्कता का अनुपालन करना केवल ''सतर्कता अधिकारी का काम नहीं है, बल्कि अधीनस्थ वर्ग के कर्मचारी से लेकर माननीय अध्यक्ष एवं प्रबंध महोदय, निदेशक महोदय का भी है।

सतर्कता में निम्नगत तत्वों का होना अनिवार्य है,

➢ **जानकारी ज्ञान**

इस तत्व से यह तात्पर्य है कि बैंकिंग अथवा वित्तीय कारोबार ग्राहकों की वित्तीय आवश्यकताओं से संबंधित है। अतः बैंकर्स को बैंकों की विभिन्न योजनाओं की जानकारी एवं उनका सतर्कता से अनुपालन करने की जानकारी होनी चाहिए। इतना ही नहीं शाखा प्रबंधक द्वारा समय-समय पर (केवाईसी) "अपने ग्राहक को जानो" के मानदण्डों का समय-समय पर अनुपालन किया जाना चाहिए। केवाईसी के मानदण्डों के विषय में कुछ संदेह हो तो ग्राहक से आवश्यक दस्तावेजों की अनुवर्ती कार्यवाही की जानी चाहिए।

➢ **सचेतता अथवा सावधानी**

आज के प्रतिस्पर्धी युग में प्रत्येक बैंक कारोबार बढ़ाने की होड़ में बैंक द्वारा जारी की गई अथवा भारत सरकार की निर्धारित नीति का अनुपालन करने में पीछे रह जाते हैं। ऐसे माहौल में सतर्कता के विषयों की सावधानी रखना आवश्यक हो गया है। शाखा स्तर पर ग्राहकों के लेन-देन के प्रति सतर्कता बरतनी चाहिए। वित्तीय क्षेत्र में अथवा बैंकिंग जगत में समसामयिक बदलावों के प्रति सचेत होना अनिवार्य है। प्रायः देखने में आ रहा है कि कुछ संगठन जाली दस्तावेज प्रस्तुत करते हुए बैंकों से ऋण सुविधाएं प्राप्त रहें हैं। हमें ऐसे संगठनों के प्रति सावधान रहना चाहिए और उसकी जानकारी प्रत्येक शाखा में दी जानी चाहिए।

➢ **निरीक्षण क्षमता**

निरीक्षणकर्ता को वित्तीय और बैंकिंग सुविधाओं के प्रति बहुश्रुत होकर निरीक्षण क्षमता के द्वारा सम्बन्धित अधिकारी को धोखाधड़ी से सतर्क अथवा सावधान करने की क्षमता रखनी चाहिए।

➢ **सूझबूझ**

इस शब्द का प्रयोग व्यावहारिक अर्थ में सावधान रहने से किया जाता है। हमें हमारे प्रबंधकीय उत्कर्ष के लिए सूझबूझ की आवश्यकता होती है, लेकिन सूझबूझ क्या है? क्या यह उक्त तीनों तत्वों से अलग है। सूझबूझ का भाव हमारे आंतरिक मानसिकता से है। निरंतर निरीक्षमता को विकसित करता है।

➢ **दूरदर्शिता**

सतर्कीय अंगों में यह अत्यंत अनिवार्य तत्व है। दूरदर्शिता का उपयोग सतर्कता के परिप्रेक्ष्य संगठन को धोखाधड़ी से बचाने के लिए तो अवश्य किया जाता है, लेकिन यह हमारे रोजमर्रा जीवन में हमेशा काम में आता है। "दूरदर्शिता" के साथ हमारे उन्नति के तत्व जुड़े हैं। हमें जीवन में कौन-सी शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए? क्या इससे हमारा उज्जवल भविष्य बन जाएगा? क्या इसी शिक्षा से समाज में हमें अच्छा स्थान प्राप्त हो सकेगा? आदि प्रश्नों की दूरदर्शिता ही हमें उन्नति के शिखर पर पहुंचाने में सहायक होती है।

यही बातें संगठन पर भी लागू होती हैं। हमें संगठन के उत्कर्ष के लिए कौन - से प्रयास करने होंगे? क्या हमारा संगठन प्रतिस्पर्धिता के युग में भी अपने नाम को लेकर ग्राहकों के मन में स्थान प्राप्त कर सकता है ? आदि सभी तत्वों की दूरदर्शिता ही हमें हमारे विनाश से बचाती है। यदि हम दूरदर्शी नहीं होते हैं, तो क्या होगा। वो कहते हैं, ना "पल में प्रलय होगा, बहुरि करोगे कब।"

सतर्कता का उद्देश्य

हम यदि सामाजिक विषयों पर बात करते हैं तो आज की जनता एक जागरूक जनता है। आज का समाज बैंकिंग की अपनी आवश्यकताओं के प्रति काफी जागरूक नजर आ रहा है। बैंकिंग का सम्बन्ध वित्तीय अथवा आर्थिक आवश्यकताओं से साथ जुड़ा हुआ है। आज के इस विज्ञापनवादी जमाने में वित्तीय आवश्यकताओं और ग्राहकों का गहरा सरोकार बनता जा रहा है जिसका परिणाम सम्माननीय ग्राहक की जागरूकता को बढ़ाने में सहायता हो रही है।

हमें बैंकिंग संगठन में "सतर्कता और प्रबंधकीय उत्कर्ष पर विचार करने से पहले कुछ ऐसे आयामों पर विचार करना अनिवार्य है, जो वित्तीय आवश्यकता और ग्राहकों से सरोकार बनाते है।

बैंकिंग लोकपाल कार्यालय में ग्राहकों की शिकायतों के प्रमाण में वृद्धि देखी जा रही है सूचना प्रौद्योगिकी के माहौल में प्रशासन

के क्षेत्र में "ई प्रशासन नामक अवधारणा ने अलख जगाई है, दूसरी ओर बैंकिंग या वित्तीय क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के परिप्रेक्ष्य और ग्राहकों की बढ़ती जरूरतों ने एटीएम, आई-बैंकिंग और मोबाईल बैंकिंग आदि उत्पादों को लोकप्रिय बनाया है।

किसी भी संगठन को अपने कार्यक्षेत्र को ऊंचा उठाने और कार्यप्रणाली को बढ़ाने के लिए कुशल संचलन (Operations) की आवश्यकता होती है। संगठन का ढाँचा कुशल मानव संसाधन से होता है। हमें सतर्कता बरतने के लिए केन्द्रीय सतर्कता आयोग, माननीय लोकपाल, भारतीय रिजर्व बैंक अथवा सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको के मुख्य सतर्कता अधिकारियों के दिशा-निर्देशों का इंतजार न करने के बजाए सतर्कता के अनुपालन के प्रति अपने मन से तैयार होने की आवश्यकता है।

हमारे देश में कानून बनाने के लिए कागजाती कार्यवाही अनेक होती है, लेकिन अनुपालन अत्यंत कम मात्रा में पाया जाता है। यही स्थिति हमारे उत्कर्ष में हानि पहुंचाती है। हमारे कार्यक्षेत्र को घटाती है तथा हमारे विकास में बाधा बन जाती है। थोड़ा सा विचार करते हैं, बैंकिंग संगठन के विभागों में सतर्कता के महत्व पर -----

बैंकिंग प्रशासन और सतर्कता

भारत में सतर्कता के अनुपालनार्थ सरकार ने अपने ज्ञापन दिनांकः 24.07.1964 के अनुक्रम में दिनांकः 11 फरवरी 1964 को सतर्कता आयोग का गठन किया है। इस आयोग के द्वारा समय-समय पर सतर्कता के अनुपालन में विभिन्न आदेश जारी किये जाते हैं। आयोग ने अपनी नीति निर्धारित की है। सार्वजनिक क्षेत्र के सभी बैंकों ने अपने सतर्कता विभाग गठित किये हैं। बैंकों में सतर्कता विभाग द्वारा अनियमित तत्वों का समय-समय पर निरीक्षण किया जाता है।

सतर्कता प्रबंधन

वर्तमान में समाज में भ्रष्टाचार और धोखाधड़ी के दौर से आम आदमी को गुजरना पड़ रहा है, जो राष्ट्र के विकास में बाधक है। ठीक उसी प्रकार यह तत्व संगठन के लिए भी उतने ही बाधक हैं। हमें यदि संगठन के उत्कर्ष पर विचार करना होगा। तब संगठन में सतर्कता का प्रबंधन करना अनिवार्य है। सतर्कता प्रबंधन में मुख्यतः निम्नगत तत्वों पर विचार किया जाता है।

➢ प्रशिक्षण

सतर्कता के अनुपालन के लिए निरंतर प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। प्रशिक्षण की वजह से कामकाज में गति प्राप्त होती है। संगठन के समसामयिक घटनाओं की जानकारी प्रशिक्षण के द्वारा दी जाती है। अनियमित तत्वों का अध्ययन और उसका प्रशिक्षण देने पर कर्मचारियों द्वारा संगठन का उत्कर्ष होता है। वर्तमान में किसी भी सेवा में प्रशिक्षण को अनिवार्य कर दिया है, जिसके फलस्वरूप सभी कर्मचारियों का तरीका या कामकाज की विधि में एकरूपता पायी जाती है, जिससे प्रशासन को अधिक पारदर्शी बनाने में सहायता मिलती है। बैंकिंग संगठन ग्राहकों से संबंधित होने के कारण ग्राहकों की रूचि को ध्यान में रखते हुए बैंकिंग उत्पाद बनाये जाते हैं, उसी प्रकार उसके कार्यान्वयन के लिए कर्मचारियों को प्रशिक्षण भी दिया जाता है। संगठन के उत्कर्ष में प्रशिक्षण की आवश्यकता स्वाभाविकता के कारण होती है।

➢ रोकथाम

आप इसे दूसरे शब्दों में "नियंत्रण" भी कह सकते हैं। रोकथाम दो प्रकार की होती है, किसी घटना की जानकारी होने पर समय पर उस पर रोक लगाना और घटित घटना का अनुसंधान करना।

प्रबंधकीय उत्कर्ष में सतर्कता का योगदान

संगठन के उत्कर्ष के लिए कुशल प्रबंधन राष्ट्र के विकास के लिए अनिवार्य शर्त है। भ्रष्टाचार और संगठन में निरंतर होने वाली धोखाधड़ी संगठन की निष्क्रिय कार्यप्रणाली का परिणाम है। अकुशल प्रबंधन किसी संगठन की अगुवाई करने में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। हैदराबाद की सूचना प्रौद्योगिकी की कंपनी "सत्यम कम्प्यूटर" का उदाहरण हमारे सामने है। वर्तमान में कुशल प्रबंधन के अभाव में कई सारे सहकारी बैंकों में धोखाधड़ी होने के कारण सहकारी बैंकिंग संगठन डूब रहे हैं।

यह सारी त्रुटियां है प्रबंधन की, अकुशल नेतृत्व की, नियोजन के अभाव की। अतः सदैव सतर्क रहने और अनियमित तत्वों की जानकारी रखने से हमारे प्रबंधन का विकास होगा एवं हमारा संगठन भी सशक्त होगा।

अंत में

प्रबंधकीय उत्कर्ष तभी संभव हैं, जब हम सभी भ्रष्टाचार और धोखाधड़ी से निपटने में केवल कामयाब ही नहीं होते, अपितु उस पर रोक लगाने में सफल बन जाते है। प्रतिवर्ष भारत सरकार के कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्रों के बैंकों में सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाने के लिए केन्द्रीय सतर्कता आयोग द्वारा दिशा-निर्देश जारी किये हैं। इन दिशा-निर्देशों को केवल उत्सव की तरह मनाने के बजाए, मन से इस का अनुपालन करने में ही संगठन की उत्कर्षिता है।

केन्द्रीय सतर्कता आयोग 27 अक्टूबर से 2 नवंबर, 2020 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का अनुपालन कर रहा है। सतर्कता जागरूकता सप्ताह प्रत्येक वर्ष उस सप्ताह के दौरान मनाया जाता है जिसमें सरदार वल्लभभाई पटेल (31 अक्टूबर) का जन्मदिन आता है। नागरिक भागीदारी के माध्यम से सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी तथा सत्यनिष्ठा को बढ़ावा देने के लिए , यह जागरूकता सप्ताह हमारी प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है।

वर्ष 2020 में, सतर्कता जागरूकता सप्ताह 27 अक्टूबर से 2 नवंबर, 2020 तक "सतर्क भारत, समृद्ध भारत" विषय के साथ मनाया गया।

आयोग का मानना है कि राष्ट्र की प्रगति में भ्रष्टाचार एक मुख्य बाधा है। समाज के सभी वर्गों को हमारे राष्ट्रीय जीवन में ईमानदारी बनाए रखने के लिए सतर्क रहने की आवश्यकता है।

आयोग चाहता है कि सभी संगठन आंतरिक कार्यकलापों पर ध्यान केंद्रित करें, जिन्हें इस वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह के भाग के रूप में अभियान विधि में लिया जाना है। इसमें, आंतरिक प्रक्रियाओं में सुधार, कार्यों का समयबद्ध निपटान और प्रौद्योगिकी सशक्तिकरण तथा सर्वांगी सुधार शामिल हैं। आयोग सभी प्रक्रियाओं को पारदर्शी बनाने पर बल देता है, जिसमें आउटसोर्स कर्मचारियों का भुगतान, मकान आबंटन, भू-अभिलेख सहित संपत्तियों का अद्यतन और डिजिटलीकरण, पुराने फर्नीचर का निराकरण और निर्धारित प्रक्रियाओं/वर्तमान नियमों का पालन करते हुए पुराने रिकॉर्ड को नष्ट करना शामिल है।

संगठनों को सलाह दी गई हैं कि वे अपने संगठनों के भीतर सर्वांगी सुधारों की पहचान करें और उन्हें कार्यान्वित करें। इसके पश्चात अपने संगठन की वेबसाइट पर लोक क्षेत्र में इसे अपलोड करें। सर्वांगी सुधारों और सुशासन के उपायों के व्यापक प्रसार को सुनिश्चित करने के लिए इसे केन्द्रीय सतर्कता आयोग को भेज सकते हैं।

निवारक सतर्कता को बैंकों के परिवीक्षाधीन अधिकारियों और वैज्ञानिक जैसे कुछ अन्य संवर्गों के बुनियादी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के लिए प्रशिक्षण पाठ्यचर्या में शामिल किया गया है। ईमानदारी तथा पारदर्शिता के प्रति सरकारी कर्मचारियों के व्यवहार और उनकी सोच में परिवर्तन लाने के लिए उत्कृष्ट संस्थानों और ग्राम भ्रमण आदि को जोड़ा गया है।

सभी कर्मचारियों से अनुरोध है कि वे आयोग द्वारा परिचालित सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा लें। सभी व्यक्ति, जिनके साथ संगठन संबंध है जैसे विक्रेता, आपूर्तिकर्ता, ठेकेदार आदि से भी प्रतिज्ञा लेने का अनुरोध किया जाता है। आयोग ने केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों/संगठनों से अनुरोध किया है कि वे अपने संगठन में विषय से संबंधित कार्यकलापों के संचालन के साथ-साथ जनता/नागरिकों के लिए भी विशिष्ट कार्यकलापों का संचालन करें :

- कर्मचारियों/उपभोक्ता अनुकूल जानकारी के प्रसार के लिए संगठनात्मक वेबसाइट का उपयोग करें और शिकायतों के निवारण के लिए उपलब्ध उपायों को सुलभ कराएँ।
- संगठन, भ्रष्टाचार विरोधी संदेश के प्रसार के लिए विभिन्न विशिष्ट कार्यकलाप आयोजित करें और समृद्ध भारत के लिए महत्वपूर्ण सतर्क भारत की आवश्यकता पर बल दें। ऑनलाइन विधि का व्यापक रूप से प्रयोग करें।
- जागरूकता का प्रसार करने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, अधिक संख्या में एसएमएस/ ई-मेल, व्हाट्सएप, इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया आदि का व्यापक उपयोग करें।

सतर्कता से समृद्धि की ओर

सुन्दर विदानी
वरिष्ठ प्रबंधक
शाखा कार्यालय, भोपाल

सतर्क रहना हर नुकसान से बचाव का रास्ता है। सतर्कता हम सभी को आगाह करने का माध्यम है। हम हर खतरे व हर रिस्क से बचे रहते हैं। एक देश, एक विधान, एक निशान। यही है सतर्कता भारत की तथा समृध्दि भारत की।

"तहज़ीब सतर्क रहकर मिलने की रख सितारों से,
अक्ल ख़ुदा ने बड़ी दी है, तुझे सबकी हिफ़ाज़त के लिए ।।

सतर्कता जागरूकता के साथ-साथ हमें स्वयं के व्यवहार तथा चरित्र में बदलाव लाकर समाज को भी पूरी शिद्दत के साथ इस मिशन में लाना होगा। इस मुहिम के साथ-साथ कई प्रकार की अन्य गतिविधियाँ जैसे-शपथ लेना, क्विज प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, सेमीनार, वर्कशॉप आदि वाहनों पर बैनर, एस. एम. एस. भेजना, समाज को दान, स्कूलों कॉलेजों का अवलोकन, मास्क सेनाटाईजर बांटना आदि भी ज़रूरी हैं।

भारत विश्व का सिरमौर :-

हमारा देश हर क्षेत्र में पूरे विश्व के देशों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हर समस्या को हल कर रहा है। बात व्यवहार की हो अथवा व्यापार की हम किसी भी देश की नीति व रीति को अपने विवेक से हल करते हैं। हमारी विदेश नीति सार्थक है तथा हमारी अंदरूनी आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक अवस्था पर इसका प्रभाव न के बराकर रखने में हम सजग हैं। हमारी सतर्कता ही हमारी विदेश नीति की समृध्दि का उच्च प्रमाण होकर भारत को विश्व में हर क्षेत्र का सिरमौर बनाती है। हमें इस बात का सदैव गर्व रहता है कि हम अपने देश की भाषा का व्यापक असर दिखाने में विश्व को अचंभित करते हैं व अपना व्यापार बढ़ाते हैं।

भारत की आत्मा व शरीर :-

रिश्ते बरकरार रखने की सिर्फ एक ही शर्त है "भावना देखें संभावना नहीं"। किसी का सरल स्वभाव उसकी कमजोरी नहीं वरन उसके संस्कार होते हैं। आत्मा व शरीर में भाव की भूख होनी चाहिये। सतर्कता तथा जागरूकता हमेशा आत्मा व शरीर का साथ साथ होना बताया गया है। हमें सतर्क रहना है व सभी को जागरूक भी रखना है।

भारत हमारा सर्वधर्म, सर्वजातीय, सर्व सद्भाव वाला देश है। हमें सतर्कता, जागरूकता का प्रचार-प्रसार करना है। आत्मा से ईमान होता है। ईमान से सबाब हासिल होता है।

ईमानदारी आत्मा का विश्लेषण है। आत्मा में दंभ, अहम्, धन की गरिमा, आचार विलोपन, सदाचार विलोपन नामक कोई अवगुण न हों।

भारत देश को स्वच्छ, निर्मल, निर्गुण व्यवहार ही आगे ले जा सकता हैं। हमें अपने देश की आत्मा व शरीर का विशेष ख्याल रखना होगा।

भारत का उत्थान तथा सर्वांगीण विकास :-

हमें भारत में हमेशा सतर्कता की आवश्यकता होती है। पानी की तरह अपना स्वभाव रखना है। हमें हर परिस्थिति में उत्थान करना है तथा उससे सर्वांगीण विकास कर समृध्द बनना है किसी भी स्थिति में पानी जैसा स्वभाव रखकर उसमें ढल जाना है।

भारत की अवनति में भ्रष्टाचार मुख्य मुद्दा है। भारत का सर्वांगीण विकास राजनीति पर भी निर्भर करता है। राजनीति अपने सिध्दांतों पर चले। हमारा भारत सहज तथा सरल रूप से सर्वांगीण विकास करे यह अति आवश्यक है। हमें भारत का उत्थान विश्व पटल पर करना है। हमारी राजभाषा ने भी विजय पताका फहराई है। सतर्कता हमेशा इनके मूल में है।

भारत में सतर्कता की अधिक आवश्यकता :-

भारत में सतर्कता हमेशा रखनी होगी क्योंकि यह देश हमारा अपना है। सतर्कता जीवन में शहद जैसा पदार्थ है, जिसको सौ साल बाद भी इस्तेमाल किया जा सकता है। हमारी बोली भी वैसी ही होनी चाहिये जिससे सबके दिलों पर हमेशा राज किया जा सकता है।

हमें अलग अलग धर्म, जाति, खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा तथा संस्कृति से सामना करना होता है। इसलिये हर कार्य में हमें सतर्कता निश्चित रूप से रखनी होगी।

हमें अपने देश की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा भौगोलिक स्थिति की विश्व के बाकी देशों से तुलना करके इस नतीजे पर पहुँचना है कि सतर्कता अति आवश्यक है। अगर सतर्क रहते हैं तो हमें जागरूकता भी फैलानी है, जिससे हमारा मिशन पूर्ण रूप से सफल होगा व भ्रष्टाचार का उन्मूलन प्रभावी तरीके से हो सके।

भारत में सतर्कता के प्रति सजगता कैसी है :-

"आंधियाँ हसरत से अपना सर पटकती रहीं,
बच गए तो पेड़ जिसमें हुनर झुकने का था।"

सतर्क रहकर झुकना सीखना है। कितनी भी आंधियाँ जीवन में आयें, हमें घबराना नहीं है। हमारे देश में सभी तरफ सतर्कता की अति आवश्यकता है। हम देश की आर्थिक धुरी की तरफ इशारा करके देखें तो पायेंगे कि हम काफी हद तक सतर्कता जागरूकता फैला चुके हैं तथा अभी काफी हद तक इसमें सभी को जोड़ने की गुंजाईश है। भारत में सतर्कता की आवश्यकता बनी हुई है। हमारे देश में विभिन्नता में एकता बनी हुई है। सारा देश अनेकता में एकता की मिसाल है। सजगता की आवश्यकता हमेशा बनी हुई है। भारत बहुत विशाल देश है। सतर्कता जागरूकता भारत की विशेषता है। हमें सतर्कता के साथ-साथ समाज में जागरूकता फैलाना व समाज कल्याण के कार्य भी करने है।

सतर्कता के बिन कैसा जीवन व्यवहार :-

हम भारतवासी हर पल हर गतिविधि के प्रति सतर्क रहते हैं। अपनी ईमानदारी, सच्चाई "करनी व कथनी" एक सी रखना, बीते हुये कल व आने वाले कल का भेद रखकर कोई व्यवहार न करना, निश्छल भाव से अपना व्यापार-व्यवसाय करना, अपनी पुरानी संस्कृति को ध्यान में रखना, बड़ों की इज्जत व छोटों को प्यार वाली कथनी को करनी में बदलना, पूरे परिवार, समाज, राष्ट्र की हर छोटी छोटी कहानी पर सोच समझकर फैसला करना आदि हमारी सतर्कता है। हमारा व्यवहार जीवन की नैया को पार लगाने हेतु बड़ा ही चिंतित तथा चिंतन से भरा होता है। सतर्कता के बिना भारत देश में जीवन व्यवहार संभव नहीं है।

भारत निश्चय समृद्धि की ओर :-

कहते हैं त्याग के बिना कुछ भी पाना संभव नहीं है क्योंकि एक सांस लेने को भी एक सांस छोड़ना जरूरी है। भारत को समृद्ध बनाना हमारा धर्म है तथा भारत हमारी आन, बान तथा शान है। हमेशा सतर्क रहकर नेक कार्य करना है, जिससे दुआ खुद ही बोल पड़ेगी। भारत में अनेकता में एकता, विभिन्न भाषायें, भिन्न भिन्न प्रदेश तथा रहन सहन हमें अपनी संस्कृति को मजबूत करना सिखाता है।

सतर्क भारत ही वास्तव में समृद्ध भारत :-

भारत हमारा प्यारा देश है। विश्व में इसकी विजय पताका जारी रखने का दायित्व हर भारतवासी का है। हमें इस बात की पुरजोर कोशिश करनी है कि हमारे क्षेत्र में सारी बैंक शाखायें, सरकारी व निजी क्षेत्र के ऑफिस, कम्पनियाँ, संस्थायें, संगठन, सेवा क्षेत्र तथा आम जनता, फेरी वाले, हमारी कमांड क्षेत्र का हर युवक, अधेड़ व बुजुर्ग तथा महिला इस सतर्कता अभियान से जरूर जुड़ें तथा इनको हर गतिविधि की जानकारी देकर हमें नोडल अधिकारी तथा नोडल ऑफिस बनाकर इस महायज्ञ में आहूति देना है। आत्मीयता, उमंग व विश्वास के साथ काम करना है। खिलता चेहरा हर कार्य की सच्चाई व विजय का प्रतीक होकर मिशन पूरा कराने में भरपूर सहायक होता है।

सतर्कता जागरूकता एक मिशन ही तो है। सबको चेताना है कि कानून की हर बात में मदद करें। रिश्वत की बुराई से परहेज करें। सभी कार्य निष्ठा, ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता से करें। जनता की भलाई के कार्य करें। ईमानदारी व सच्चाई का उदाहरण बनें। भ्रष्टाचार की किसी भी जानकारी अथवा शिकायत की जाँच उपयुक्त एजेंसी से कराने का मशवरा भी दें। यही भारत की समृद्धि है।

सतर्कता अति-आवश्यक व अति-व्यवहारिक :-

सतर्कता के बिना यह कहावत चरितार्थ होती है - "तमाम उम्र छलनी में पानी भरते रहे, अपनी समझ में बहुत बड़ा काम करते रहे।"

हम सतर्क नहीं मतलब हम लापरवाह हैं। जीवन में जिम्मेदारी नहीं मतलब किसी भी तरह का बंधन नहीं। यदि हम जिम्मेदार हैं तो कोई भी कार्य सटीक तरीके से करने हेतु मानसिक रूप से तैयार होते हैं। यह अति-आवश्यक है। हम कहीं भी किसी भी तरह लगन से काम करें तो बेहतर परिणाम प्राप्त होगा। व्यवहार में तथा सभी तरह के खयालों में हमें ईमानदारी को मद्देनजर रखकर अति-आवश्यक तथा अति-व्यवहारिक बनाना आवश्यक है।

सतर्कता पग पग पर वांछनीय :-

भूल होना प्रकृति है। उसे मान लेना संस्कृति है तथा उसे सुधार लेना प्रगति है। कोई इतना भी गरीब नहीं कि आने वाला वक्त न बदल सके। सतर्कता व जागरूकता हमेशा ही खास होते हैं। सतर्कता हमारे देश के लिए जैसे राजा, समाज के लिए गुरू, परिवार के लिए पिता, घर के लिए स्त्री, जीवन के लिए दोस्त जैसी होती है। इसके बगैर यदि एक पग भी आगे बढ़े तो हमें पछताना ही पड़ेगा, फिर समृद्धि का प्रश्न ही नहीं उठता।

सतर्कता से समृद्धि की ओर :-

शांति के समान कोई तप नहीं, संतोष से श्रेष्ठ कोई सुख नहीं, तृष्णा से बढ़कर कोई रोग नहीं तथा दया से बढ़कर कोई धर्म नहीं। सतर्कता एक कड़वा पौधा है पर इसके फल हमेशा मीठे होते हैं। हम अपनी नीयत से अपने कर्म का फल प्राप्त करते हैं। हमारा फल हमारी समृद्धि है। सतर्क रहें, कर्म करें तो हमेशा समृद्धि की ओर अग्रसर होते हैं। हमें किसी नुकसान, हानि तथा डर की बात नहीं होती व किसी प्रकार का कोई रिस्क नहीं होता। हम अपना हर काम सफलता से करते हैं व समृद्धि की ओर अग्रसर होते हैं।

सतर्कता की शपथ लेना ही सही मार्ग :-

जो इंसान सतर्कता से धीरज रख सकता है वह अपनी इच्छानुसार सब कुछ पा सकता है। दिल और ज़मीर में खूबसूरती को वास कराना होगा। सतर्कता की शपथ लेने का मतलब ही अपने आपको सच के साथ साथ चलने का इरादा करना है तब ही वक्त हमारे साथ-साथ चलने को मजबूर होगा। सतर्कता से हाथों की लकीरें तो नहीं बदल सकती परन्तु अपना नसीब बरबस ही सुधारा जा सकता है।

मूल मुद्दा भ्रष्टाचार उन्मूलन है :-

हमारा व्यवहार हमेशा हमारे ज्ञान से अधिक अच्छा साबित होना चाहिये। जीवन की विषम परिस्थितियों में ज्ञान हार सकता है परन्तु व्यवहार से हमेशा जीत होने की संभावना रहती है। यही व्यवहार सतर्कता का है जिससे भ्रष्टाचार उन्मूलन का मुख्य मुद्दा हल हो सकता है।

"किसी पेड़ के कटने का कोई किस्सा न होता यदि कुल्हाड़ी के पीछे लकड़ी का हिस्सा न होता।"

भ्रष्टाचार उन्मूलन में हम खुद को ही आगे रखें व लकड़ी का हिस्सा बनें। भ्रष्टाचार का पेड़ अपने आप कटने लगेगा। चरित्र एक वृक्ष है और प्रतिष्ठा, यश व सम्मान ही उसकी छाया होती है।

ईमानदारी व सत्यनिष्ठा के मानक :-

हम अपने जीवन में हमेशा अच्छा दोस्त, अच्छी किताब तथा अच्छी सोच रखें जो हमें गुमराह नहीं होने देते। यही सलाह अपने कमांड क्षेत्र के लोगों को भी दें।

तालाब एक ही है, उसी तालाब में हंस मोती चुनता है और बगुला मछली। सोच-सोच का फर्क है। हमें अपनी सोच बदलनी होगी व सबको ऐसा व्यवहार करने की प्रेरणा देना होगी।

कानून व्यवहार ही उच्चतम मापदण्ड :-

हमारा कानून हमारा रक्षक है। कानून से न्याय व्यवस्था, अनुशासन, शांति तथा हौसला मिलता है। सतर्कता कानून की आत्मा है तथा हम देशवासी कानून की जान हैं। यह बारिश के पानी जैसा होता है "कोई रंग नहीं होता बारिश के पानी का फिर भी फिज़ा को रंगीन बना देता है।" सतर्कता का यही मापदण्ड कानून के हिसाब से व्यवहार है। अगर कोई इसमें स्वयं के लालच को देखता है तो कानून के साथ मजाक करता है। हमेशा कानून के साथ रहें।

पारदर्शिता का व्यवहार ही उत्तम व्यवहार तथा यही हमारी संस्कृति होना चाहिये :-

जीवन में पारदर्शिता का होना आवश्यक है। ज़िन्दगी में पारदर्शिता सफेद रंग जैसी होती है। सफेद में कोई भी रंग मिलाओ तो नया रंग बन जाता है। पर दुनियाँ के सारे रंग मिलकर भी सफेद रंग नहीं बना सकते।

उपसंहार :-

एक संगठन के रूप में बैंक की अपनी जिम्मेदारी है। भ्रष्टाचार मिटाना तो आवश्यक है ही साथ में सत्यता, पारदर्शिता तथा अच्छे व्यवहार के अति उत्तम मापदण्ड न केवल अपनाने होंगे वरन उनका सबको व्यवहारिक रूप से पालन कराना भी आवश्यक है। हमें यही शपथ लेने का समयोपरि व्यवहार निभाना आवश्यक है।

हम रिश्वत न लें व न लेने दें। साफ स्वच्छ आचरण का पालन करें। सभी नियम, कायदे व कानून का पालन सुनिश्चित करें। हमारा कार्य ईमानदारी का पर्याय बने।

सभी शिकायतों का त्वरित निपटान करें तथा इस हेतु उपयुक्त सिस्टम बनायें।

हर गलत आचरण तथा धोखाधड़ी की रोकथाम सतर्क होकर करना है इसके लिये व्हिसिल ब्लोअर (Whistle Blower) का मैकेनीजिम अपनाना चाहिये।

अन्त में हमें इस बात का ध्यान ज़रूर रखना है कि समाज के अधिकारों व हितों का पूरी तरह से पालन हो। अन्त में सतर्कता पर यह कहावत सार रूप में पेश है।

"ताप में तपें स्वयं ही स्वर्ण से गलें सदा ।
"सूर्य रहें मगर सरल दीप से जलें सदा ।"

भ्रष्टाचार–एक गलत धारणा

राज किशोर
वरिष्ठ प्रबंधक
सतर्कता प्रभाग
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

यह अब एक आम शब्द है, लेकिन हम में से अधिकांश ने गलत समझा। एक सामान्य धारणा हमारे बीच, भ्रष्टाचार के बारे में यह है कि एक सरकारी अधिकारी कुछ अवैध काम करता है या बदले में नकद या थोड़े लाभ पाने के लिए अनुचित पक्ष लेता है। एक और धारणा है कि आम तौर पर भ्रष्टाचार 'दूसरों द्वारा नहीं' और मेरे' द्वारा किया जाता है या मैं दूसरों के संबंध में कम भ्रष्ट हूं या जैसे ही अन्य इस बुराई को छोड़ देते हैं, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं इसका पालन करने वाला पहला व्यक्ति बनूंगा।

परंतु, मेरी राय में किसी के विचार, भाषण या कार्य में कोई हेरफेर भ्रष्टाचार है। प्राचीन पुस्तकों के माध्यम से हजारों बार पुनः प्रसारित किया गया है, जो भी हम सोचते हैं, वही बोला जाना चाहिए और जो हम बोलते हैं वही कार्य किया जाना चाहिए। इन तीन गतिविधियों अर्थात् हमारे विचार, भाषण और कार्य में सुसंगतता होनी चाहिए।

इन तीन गतिविधियों के बीच कोई भी विचलन भ्रष्टाचार है।

समाधान – प्रौद्योगिकी को बढ़ावा

भ्रष्टाचार का सिर्फ एक समाधान है, सत्यनिष्ठा। जो सिखाई नहीं जाती वो आपके अपने सिद्धान्त पर आधारित है। अपने आप को मजबूत करने के लिए अपने सिद्धान्तो को मजबूत करना होगा। लालच को त्यागना होगा, संतोष का जीवन अपनाना होगा।

जैसा कि महात्मा गांधी जी ने कहा है "Earth has enough resources for our need but not for our greed" अर्थात "पृथ्वी के पास हमारी जरूरत के लिए पर्याप्त संसाधन हैं, लेकिन हमारे लालच के लिए नहीं"।

परन्तु क्या कुछ ऐसा है जिससे प्रक्रियाओं को आसान और पारदर्शी बनाया जा सके जिससे भ्रष्टाचार की गुंजाइश कम से कम हो सके।

जी हाँ, ऐसा एक रास्ता है, और वो है, प्रौद्योगिकी (टेक्नोलॉजी) को बढ़ावा।

हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम सिस्टम संचालित (सिस्टम ड्रिवेन) प्रक्रियाओं की ओर सभी प्रक्रियाओं को खींच सकें ताकि मैनुअल भावनाओं, लालच, अपेक्षाओं का न्यूनतम हस्तक्षेप हो।

इस प्रक्रिया में, विभिन्न संगठन हर चीज के लिए बहुत सारे पोर्टल बना रहे हैं, यह विभिन्न प्रकार के अनुप्रयोगों के निपटान के लिए या समय पर भुगतान के लिए या परिसंपत्तियों की खरीद के लिए हो सकता है।

हमारे बैंक में भी समयानुसार बदलाव आये। जहाँ बड़े बड़े लेजर के जरिये खातो का लेखा जोखा रखा जाता था, आजकल सिर्फ एक क्लिक मात्र से सब हिसाब हो रहे हैं। जहाँ किसी ब्रांच में 39 लोगो का स्टाफ होता था काम सँभालने के लिए वही प्रौद्योगिकी की मदद से सिर्फ 5 से 7 का स्टाफ है। और गलती की गुंजाईश भी नहीं, खासकर वो गलतियाँ जो जानबूझ कर की जाती थी।

इसके अलावा बहुत से ऐसे पोर्टल बनाये गए जिस से प्रक्रियाएं आसन, पारदर्शी हुई, और मानवीय हस्तक्षेप कम एवं समय पर कार्य करने में मदद मिली, जैसे :-

व्यापार संबंधी

1. सेंट्रलाइज्ड लोन अप्रेजल एंड प्रोसेसिंग सिस्टम
2. ऑनलाइन अकाउंट ओपनिंग
3. ऑनलाइन लीड जनरेशन फॉर POS / भारत QR

ऑपरेशन संबंधी

1. ऑनलाइन बिल ट्रैकिंग सिस्टम
2. ऑनलाइन ओ. टी. एस पोर्टल
3. एंटरप्राइज वाइड फ्रॉड रिस्क मैनेजमेंट सिस्टम

कंट्रोल संबंधी

1. प्रिवेंटिव विजिलेंस
2. ऑनलाइन ट्रैकिंग एंड मॉनिटरिंग आफ स्टाफ एकाउंटेबिलिटी केसेस
3. ऑफ साईट ऑडिट

ये केवल सांकेतिक हैं, संपूर्ण नहीं।

अंत में निष्कर्ष यही निकलता है कि प्रौद्योगिकी व्यवस्थित और पारदर्शी रूप से काम करने में सक्षम है और व्यवस्थित पथ से भ्रष्ट प्रथाओं से बचा जा सकता है, अतः हमें प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना चाहिए।

बैंकिंग में अनुपालन के लाभ

रविंद्र मंडले
वरिष्ठ प्रबन्धक
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

वर्तमान समय में बैंकिंग में तेजी से परिवर्तन आ रहे हैं। डिजिटल बैंकिंग के विकास से बैंकिंग का दायरा भी बड़ा है। बदलते परिदृश्य में बैंकिंग में भी आमूलचूल परिवर्तन होना स्वभाविक है। बदलते समय के साथ-साथ नई चुनौतियां भी सामने आयी हैं। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण है अनुपालन जो किसी भी क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है तथा इसका समग्र रूप से अनुपालन सुनिश्चित करना आज के समय में सबसे प्रमुख चुनौतियों में से एक है। आज के डिजिटल समय में ऑनलाईन लेनदेन में बढ़ोतरी हो रही है इसके साथ धोखाधड़ी के मामले भी बढ़ते जा रहे हैं। इन धोखाधड़ीयों से बचने के लिए नियामकों द्वारा निर्धारित सभी मानदंडों का अनुपालन किया जाना आवश्यक चाहिए। साईबर सुरक्षा संबंधी मार्गनिर्देशों का अनुपालन भी उतना ही महत्वपूर्ण है। बैंकों को अपने ग्राहकों का विश्वास बनाए रखने एवं अपनी गुडविल बनाए रखने के लिए सर्वव्यापी अनुपालन संस्कृति को अपना कर कार्यान्वयन सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है। बैंक जैसी वित्तीय संस्था में अनुपालन का उत्तरदायित्व उच्च प्रबन्धन का ही नहीं अपितु यह समस्त स्टाफ सदस्यों की साझा जिम्मेदारी हैं।

किसी भी कार्य को करते समय उस कार्य से संबंधित मानक संचालन प्रकिया का अनुपालन किया जाना अनिवार्य है तभी हम उस कार्य के साथ न्याय कर सकते हैं। बैंक में भी प्रत्येक कार्य के कार्यन्वयन के लिए समय-समय पर मानक संचालन प्रक्रिया एवं परिपत्र जारी किए जाते हैं। इन मानक संचालन प्रक्रियाओं एवं परिपत्रों तथा आचार संहिताओं के अनुसार ही बैंक में कार्यनिष्पादन किया जाना अपेक्षित है। बैंकिंग नियामकों अर्थात भारतीय रिजर्व बैंक, वित्त मंत्रालय द्वारा भी समय समय पर विभिन्न निर्देश जारी किए जाते हैं इन निर्देशों के अनुपालन का दायित्व भारत में कार्यरत सभी बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं का है। सभी नियामकों द्वारा जारी निर्देशों की अनुपालना सुनिश्चित करने हेतु बैंक में एक सर्वव्यापी अनुपालन संस्कृति का होना अतिआवश्यक है।

आए दिन हमें सुनने को मिलता हैं कि केवाईसी का अनुपालन न करने के कारण विभिन्न बैंकों कों पर भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा आर्थिक जुर्माना लगाया गया, बैंकों को ऋण वितरण में रोक लगा दी गई, पीसीए में डाल दिया गया, शाखा विस्तार में रोक लगा दी गई, बैंकिंग लाईसेंस जब्त कर लिया गया। यह सभी बेहतर अनुपालन संस्कृति न होने का परिणाम है। मानक संचालन प्रक्रियों, निर्देशों तथा परिपत्रों के अनुपालन से बैंकों को कई लाभ होते हैं अर्थात धोखाधड़ी, परिचालन घाटा, नियामकों द्वारा प्रभारित दंड, शिकायत, अनावश्यक मुकदमेबाजी, बैंकों को वितीय घाटा आदि से बचाया जा सकता है। हमारे बैंक में बेहतर अनुपालन संस्कृति स्थापित है तथा बैंक में अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए प्रधान कार्यालय में अनुपालन प्रभाग कार्यरत है तथा फील्ड में अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए अंचल स्तर पर अंचल अनुपालन अधिकारी तथा मंडल स्तर पर मंडल अनुपालन अधिकारी की तैनाती भी की गई है।

अनुपालन के लाभः

बैंकिंग के बदलते परिवेश में सभी बैंकों तथा वित्तीय संस्थाओं द्वारा आधुनिक अनुपालन संस्कृति को अपनाया जा रहा है। जिसे अपनाने से निम्नलिखित लाभ बैंकों तथा वित्तीय संस्थाओं को होते हैः

- विविध नियामकों के साथ बेहतर समन्वय बना रहता है।
- ग्राहकों एवं सभी हितधारकों के बीच प्रतिष्ठा एवं साख बनी रहती है।

- विविध जोखिमों में कमी आती है।
- स्टाफ सदस्यों के आत्मविश्वास में बढ़ोतरी होती है।
- स्टाफ सदस्यों की प्रतिबद्धता सुनिश्चित होती है।
- कार्य में सभी स्तर पर पारदर्शिता बनी रहती है।
- ग्राहक शिकायतें तथा अनावश्यक मुकदमेबाजी से बचा जा सकता है।

बैंकों को इस प्रवृति से बचने की आवश्यकता है कि अनुपालन खर्चीला होता है बल्कि उन्हें इस बात को समझना चाहिए कि उचित आचरण से हमारी प्रतिष्ठा बनी रहती है और हम अर्थदंड से भी बचते हैं। इस प्रकार बैंको को अप्रत्यक्ष रूप से आय प्राप्त होती है। अंग्रेजी में एक कहावत है 'A Penny Saved is a Penny Earned' अर्थात पैसा बचाना ही पैसा कमाना हैं। इस कहावत को हमें समझना होगा क्योंकि कमजोर अनुपालन संस्कृति से बैंकों को भारी कीमत चुकानी पडती है। वैश्विक रूप से देखें तो, वित्तीय संकट की शुरूआत से लेकर 2020 तक बैंकों पर जुर्माना और आर्थिक दंड की राशि 400 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुच गई है। हांगकांग की एक वितीय सेवा परामर्शदाता कम्पनी विचनलान एंड एसोसिएट्स ने अनुमान लगाया कि 2008 के वित्तीय संकट के बाद से खराब व्यवहार के कारण शीर्ष 50 वैश्विक बैंकों को होने वाले मुनाफे में 850 बिलियन डॉलर का नुकसान हुआ जो राईट-ऑफ, ट्रेडिंग लॉस, जुर्माना और उच्च अनुपालन लागत के कारण हुआ था। जून 2018 से जुलाई 2019 के बीच 76 ऐसे मौके आए हैं जब भारतीय रिजर्व बैंक ने भारत में कार्यरत विभिन्न वाणिज्यक बैंकों पर मौद्रिक दंड लगाया है जिसकी कुल राशि रूपये 122.9 करोड़ रूपये है। इससे यह भी अनुमान निकला जा सकता है कि अनुपालन पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ नहीं किया जा रहा है अभी भी कार्यप्रणाली में विसंगतियां मौजूद है जिन्हें दूर किया जाना सम्पूर्ण बैंकिंग उद्योग के लिए आवश्यक है।

निष्कर्ष:

उपरोक्त विवेचना से यही निष्कर्ष निकला जा सकता है कि बैंक में बेहतर अनुपालन संस्कृति का होना समय की मांग है क्योंकि अनुपालन संस्कृति न होने से बैंक की साख और लाभप्रदता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसलिए अनुपालन पर विशेष ध्यान दिया जाना अतिआवश्यक है। बैंकों में सशक्त कॉर्पोरेट अधिशासन और स्वस्थ्य अनुपालन संस्कृति स्थापित होने से बैंकों को तरह-तरह के लाभ प्राप्त होते है जिसकी चर्चा उपरोक्त पैराग्राफ में की गई है। बैंक में समय-समय पर आन्तरिक एवं बाहरी लेखापरीक्षा होती है। इन लेखापरीक्षा के परिणामों द्वारा बैंक के कार्यों को आंका जाता है एवं इसी से बैंक की साख, लाभप्रदता तथा आस्ति गुणवत्ता का पता चलता है।

वर्तमान समय में सभी ने अनुपालन की भूमिका पर व्यापक रूप से ध्यान देना शुरू कर दिया है क्योंकि सभी ने व्यापक रूप से यह स्वीकार किया है कि अनुपालन पर पर्याप्त ध्यान देने की आवश्यकता है और यह समय की मांग भी है। विनियामकों, पर्यवेक्षकों और अंतरराष्ट्रिय मानक तैयार करने वाली सभी संस्थाओं द्वारा इस बात पर ज्यादा से ज्यादा ध्यान केन्द्रित किया जाने लगा है कि सभी नियमों और विनियमों को लागू करना एवं इनका कार्यान्वयन सुनिश्चित करना तब तक एक निरर्थक कवायद साबित होती रहेगी जब तक विनियमित संस्थाए इनमे अंतर्निहित मूल भावना को समझकर तथा पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ इनका अनुपालन सुनिश्चित नहीं करेंगे।

बैंक में प्रत्येक स्तर पर सतर्कता एवं पारदर्शिता को अपनाना होगा तथा इससे सबंधित सभी निर्देशों को आसान भाषा में सभी स्टाफ सदस्यों तक पहूँचाना होगा। सभी बैंकों को चाहिए सभी अद्यतन दिशानिर्देश एवं हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषा में उपलब्ध कराएं। अपनी भाषा में सभी दिशानिर्देश उपलब्ध होंगे तो इन्हें आत्मसात करना एवं इन्हें अपनाना बहुत ही सरल हो जायेगा।

सभी बैंकों द्वारा समय-समय पर अनुपालन सबंधी कार्यशाला आयोजित की जानी चाहिए एवं सभी स्टाफ सदस्यों को अद्यतन कार्यप्रणाली, निर्देशों से अवगत कराना चाहिए तथा प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। जब तक समस्त स्टाफ सदस्य अद्यतन निर्देश एवं कार्यप्रणाली को समझ नहीं पायेंगे तब तक अनुपालन की उम्मीद रखना निरर्थक है।

बैंकों में अनुपालन प्रणाली

प्रिया बैनर्जी
वरिष्ठ प्रबन्धक-अनुपालन
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

अनुपालन प्रणाली के अनुसार बैंकों को एक प्रभावी अनुपालन संस्कृति, स्वतंत्र कॉर्पोरेट अनुपालन कार्यप्रणाली और बैंक स्तर और सामूहिक स्तर पर एक मजबूत अनुपालन जोखिम प्रबंधन योजना की आवश्यकता होती है। प्रत्येक बैंक में इस तरह एक नामित मुख्य अनुपालन अधिकारी (CCO) की अध्यक्षता में एक स्वतंत्र अनुपालन कार्यप्रणाली का होना अत्यंत आवश्यक है।

अनुपालन जोखिम को कभी-कभी सत्यनिष्ठा जोखिम के रूप में भी पेश किया जाता है क्योंकि बैंक की प्रतिष्ठा सत्यनिष्ठा और निष्पक्ष व्यवहार के सिद्धांतों के अनुपालन के साथ जुड़ी हुई है। बैंकिंग पर्यवेक्षकों को सुनिश्चित करना चाहिए कि बैंक स्टाफ सदस्यों द्वारा प्रभावी अनुपालन नीतियों और प्रक्रियाओं का पालन किया जा रहा है तथा कानूनों, नियमों और मानकों के उल्लंघन का पता चलने पर प्रबंधन द्वारा उचित सुधारात्मक कार्रवाई की जा रही है।

आधुनिक समय की अनुपालन अवधारणा ने राष्ट्र भर में सामुदायिक बैंकों में पारंपरिक तरीकों को बदल दिया है। इसके लिए, बैंक अनुपालन अधिकारियों की नई पीढ़ी और अनुपालन जिम्मेदारियां काफी केंद्रीकृत हो गई हैं, जिसमें अधिकांश शक्तियां बैंक मुख्यालय में तैनात वरिष्ठ कार्यपालक को दी गई हैं। इस लेख के माध्यम से वर्तमान समय में बैंक के अनुपालन अधिकारियों की भूमिका का विस्तृत वर्णन किया गया है।

कॉरपोरेट घोटालों की एक लहर के बाद, विनियमों ने सार्वजनिक कंपनियों और बैंकों दोनों के लिए नए लेखापरीक्षण और शासन नियमों को जन्म दिया है। अतः विशेषज्ञ बैंक अनुपालन अधिकारियों की आवश्यकता अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

एक बैंक अनुपालन अधिकारी की जिम्मेदारियां:

सामान्यतः एक बैंक अनुपालन अधिकारी को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बैंक के ऋण, लेखांकन और निवेश के तरीके राज्य और संघीय विनियमों का पालन करते हैं।

आज बैंकों ने अपनी आवश्यकताओं के अनुसार बैंक अनुपालन अधिकारियों की जिम्मेदारियों को निर्धारित किया है। तथापि, बैंक अनुपालन अधिकारियों के लिए सामान्य जिम्मेदारियां निम्नानुसार हैं:

- अनुपालन मामलों और जांच के संबंध में बैंक और नियामक एजेंसियों के बीच संपर्क अधिकारी के रूप में कार्य करना।
- नियमित संदिग्ध गतिविधि रिपोर्ट तैयार करना एवं उसका मूल्यांकन करना।
- जोखिम का मूल्यांकन करने के लिए नए बैंकिंग उत्पादों और सेवाओं का अध्ययन करना।
- प्रस्तावित और लंबित विनियामक परिवर्तनों के बारे में वरिष्ठ प्रबंधन को सूचित करना और सलाह देना।
- विनियमों को अद्यतन करना और उनका बैंक कर्मचारियों के बीच प्रसार करना।
- आचार संहिता से संबंधित मामले, बैंक गोपनीयता अधिनियम (बीएसए), एंटी मनी-लॉन्ड्रिंग (एएमएल) विनियमों और आतंकवाद-वित्तपोषण गतिविधियों से संबंधित मामलों का निपटारा करना।
- एंटी मनी लॉन्ड्रिंग प्रयासों के लिए प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना। बैंक गोपनीयता विनियमों, निष्पक्ष क्रेडिट अधिनियमों और एंटी-मनी लॉन्ड्रिंग कानूनों के बारे में कार्य ज्ञान रखना।

- सुनिश्चित करें कि बैंक की नीतियां और प्रक्रियाएं बंधक ऋण, उपभोक्ता ऋण और ग्राहक जमाओं से जुड़े सभी नियमों और विनियमों के अनुरूप हैं।
- बैंकिंग नियमों और विनियमों के बारे में प्रश्न और नियमविहिन क्षेत्रों को खोजना और यह सुनिश्चित करना कि संस्थान द्वारा सभी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित किया जा रहा है।
- राज्य या संघीय शासकीय निकायों द्वारा पारित किए जाने पर नए नियमों और विनियमों को लागू करना और प्रबंधित करना।
- जनहित और उपभोक्ता संरक्षण कानूनों को समझना और लागू करवाना।
- अनुपालन मुद्दों पर जोखिम प्रबंधन विभाग को सलाह देना।
- यह सुनिश्चित करने के लिए बैंक के मुख्य परिचालन अधिकारी का सहयोग करें कि सभी नीतियों और प्रक्रियाओं का सटीक और बिना किसी लापरवाही के पालन किया जा रहा है।
- नव नियुक्त कर्मचारियों और अन्य बैंकिंग कर्मचारियों को नियमित रूप से प्रशिक्षण प्रदान करना, विशेषकर जब किसी राज्य या संघीय कानूनों में कोई परिवर्तन होता है।
- संस्था के भीतर संभव गैर-अनुपालन होने पर उसकी जांच करना।
- आवश्यकता होने पर बाहरी ऑडिटर्स को समर्थन और सहायता प्रदान करना।

बैंक अनुपालन अधिकारी आमतौर पर सरकारी नियमों के साथ क्षेत्र या राष्ट्रव्यापी कार्यक्रमों, नीतियों, प्रक्रियाओं और योजनाओं के अनुपालन के लिए जिम्मेदार होते हैं। उनका कार्य नई और भविष्य की अनुपालन आवश्यकताओं के बारे में वरिष्ठ प्रबंधन और परिचालन कर्मचारियों के साथ समन्वय करना होता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि अनुपालन कार्य बैंक को अनुपालन जोखिम को प्रबंधित करने में मदद करना है, जिसे कानूनी या नियामक प्रतिबंधों के जोखिम, वित्तीय हानि या बैंक को प्रतिष्ठा के नुकसान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो सभी लागू कानूनों, विनियमों, आचार संहिता और अच्छे अचरण के मानकों (एक साथ, "कानून, नियम और मानक") को पूरा करने में विफलता के परिणामस्वरूप हो सकता है।

बैंक

ठहराव आया है, संपन्नता आयी है,
थोड़ा सब्र आया है तो थोड़ी विनम्रता भी आयी है।
तुझसे मिलने के पश्चात मेरे बैंक,

जीवन में मेरे एक परिवर्तन आया है,
एक जागरूकता आयी है,
एक किनारा आया है,
एक लहर आयी है।

यूँ तो नहीं था मैं अधूरा पर तुझमें मिलने के बाद,
लगा जैसे हो गया हूं पूरा,
जिंदगी में मेरे एक खुशियों की बहार आयी है,
थोड़ा सब्र आया है तो थोड़ी विनम्रता भी आयी है।

तुझ पर करते होंगे हम सौ बात,
बनाते होंगे हजार मीम,
सुनाते होंगे खट्टे अनुभव और गाते
होंगे वही पुराने गीत,

पर सच तो ये है कि तूने अपनाया है,
तभी हमनें अपना जीवनसाथी पाया है,
वरना बिजनेस जितने भी कर लें,
लड़की के पिताजी की नजर में,
सरकारी बैंकर ही एक सुरक्षित साया है,

आज झुक कर प्रणाम करता हूँ मैं तुझे क्योंकि,
तूने मेरा हमेशा साथ निभाया है,
तूने मेरा हमेशा साथ निभाया है।।

कुमार गौरव
अधिकारी
शाखा कार्यालय, पणजी

अनुपालन का महत्व

अजित दास
अधिकारी-आईटी
अनुपालन विभाग
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

अनुपालन को कानून, नियमों, विनियमों और स्वैच्छिक आचार संहिता के पालन की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यद्यपि इनमें से अधिकांश बाहरी आवश्यकताओं से उत्पन्न होते हैं, परन्तु संगठन के अपने आंतरिक नियमों, नीतियों और प्रक्रियाओं का पालन करते हुए, नैतिक प्रथाओं के अनुसार कार्य करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। एक मजबूत अनुपालन संस्कृति को उचित व्यवहार कोडों का पालन सुनिश्चित करना चाहिए, हितों के टकराव का प्रबंधन करना चाहिए और कुशल ग्राहक सेवा प्रदान करने के उद्देश्य से ग्राहकों के साथ उचित व्यवहार करना चाहिए। इस प्रकार, अनुपालन कानूनी बाध्यता से परे होगा और सत्यनिष्ठा और नैतिक आचरण के व्यापक मानकों को अंगीकार करेगा।

बैंकों को अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने और ग्राहकों, निवेशकों और नियामकों का विश्वास जीतने के लिए एक अच्छी अनुपालन संस्कृति का प्रदर्शन बहुत जरुरी है। खराब आचरण और अविश्वास से बचने के लिए ऐसी संस्कृति का बैंकों में होना अनिवार्य है।

एक अच्छी अनुपालन संस्कृति बैंकों को कई प्रकार से लाभ दे सकती है जैसे:-

i) न्यूनतम संगठनात्मक और व्यक्तिगत जोखिम;

ii) कम प्रतिष्ठात्मक जोखिम;

iii) जॉब करते समय कर्मचारियों के बीच कम हिचक और अधिकतम आत्मविश्वास;

iv) प्रतिभा को आकर्षित और बनाए रखने में सहायक होती है और कर्मचारी जुड़ाव सुनिश्चित करती है;

v) बेहतर पारदर्शिता जो बेहतर निर्णय लेने में सक्षम बनाती है।;

vi) नियामकों और अन्य हितधारकों के साथ बेहतर संबंध तथा

vii) निवेशकों के बीच वर्धित मूल्यांकन।

बैंकिंग अनुपालन के लिए बेंचमार्क पांच साल पहले की तुलना में बहुत अधिक हो गया है। अनेक नए नियम बनाए गए हैं। व्यापक नई कानूनी आवश्यकता जिन्हें पूरा किया जाना है, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संचालित होने वाली वित्तीय सेवा कंपनियों के लिए एक विशेष चुनौती बन गई है। महत्वपूर्ण बात यह है कि, नियम हमेशा एक देश से दूसरे देश में समन्वित नहीं होते हैं। इतना ही नहीं, अंतर्राष्ट्रीय बैंक उन ग्राहकों के साथ लेन-देन व्यवहार करते हैं जो सीमाओं के पार भी व्यापार करते हैं, और इसी तरह अवसर नियमों और विनियमों की असंगठित श्रेणी से निपटना पड़ता है। अन्य जटिल तथ्य यह है कि मीडिया और इंटरनेट प्लेटफॉर्म पर रिपोर्टिंग में बड़े स्तर पर पारदर्शिता बढ़ी है: कानून के उल्लंघन और अन्य आधिकारिक आवश्यकताएं पहले की तुलना में अधिक तेजी से प्रकाश में आती हैं और वे काफी व्यापक और अधिक अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों तक पहुंचती हैं।

बैंकों में अनुपालन संस्कृति में सुधार की बहुत आवश्यकता है। बैंकों के पर्यवेक्षक के रूप में, रिजर्व बैंक सुदृढ़ कॉर्पोरेट गवर्नेंस और अनुपालन संस्कृति को बहुत महत्व देता है, क्योंकि यह बैंक की सुरक्षित और सुदृढ़ कार्यप्रणाली के लिए एक आवश्यक तत्व है और यदि इसका प्रभावी ढंग से पालन नहीं किया जाता है तो यह बैंक के जोखिम प्रोफाइल पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। अच्छी तरह से शासित बैंक एक कुशल और लागत प्रभावी पर्यवेक्षी प्रक्रिया में योगदान करते हैं, क्योंकि उनमें पर्यवेक्षी हस्तक्षेप की आवश्यकता कम होती है। ऐसी सुदृढ़ संस्कृति उन संगठनों के निर्माण में मदद करेगी जो सुदृढ़, लचीले, अनुशासित हैं और निरंतर वृद्धि और ग्राहक का विश्वास पाते हैं। यह अनेक पर्यवेक्षी कार्रवाईयों और अनुवर्ती प्रतिष्ठा जोखिम का पूर्व-संकेत भी करेगा, जो कि उल्लंघन के मामले का पता लगने के बाद होगा।

एक अच्छी अनुपालन संस्कृति पर्यवेक्षक को बैंक की आंतरिक प्रक्रियाओं पर अधिक भरोसा करने में सहायक होगी। इस संबंध में, पर्यवेक्षी अनुभव प्रत्येक बैंक के भीतर उचित स्तर के

अधिकार, जिम्मेदारी, जवाबदेही, जांच और संतुलन के महत्व को रेखांकित करता है, जिसमें निदेशक मंडल, वरिष्ठ प्रबंधन और जोखिम, अनुपालन और आंतरिक लेखापरीक्षा के माध्यम से आश्वासन कार्य शामिल हैं।

अनुपालन बनाम जुर्माना:-

अनुपालन, जुर्माना लगाने के व्युत्क्रमानुपाती है और सीधे तौर पर हितधारकों के विश्वास के समानुपाती है। जितना बेहतर अनुपालन होगा उतना कम जुर्माना होगा। शीर्ष प्रबंधन ने अंचल अनुपालन अधिकारियों और मंडल अनुपालन अधिकारियों की नियुक्ति के माध्यम से अनुपालन कार्य को बढ़ावा दिया है। 1 वर्ष से कम की अवधि में, मंडल अनुपालन अधिकारियों ने अनुपालन प्रभाग के साथ समन्वय में विशेषकर कोविड-19 महामारी के दौरान फील्ड में कार्यरत अधिकारियों को समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान करके अपनी उपस्थिति दर्ज की है।

हमने फील्ड स्तर पर मंडल अनुपालन अधिकारियों की सक्रियता और सतर्कता देखी है और उनकी सतर्कता ने बैंक की प्रतिष्ठा की रक्षा करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस प्रकार समय की मांग है 24X7 अनुपालन निगरानी और बैंक के भीतर अनुपालन संस्कृति को विकसित करना चाहिए। प्रत्येक प्रक्रिया और कार्यप्रणाली इस तरह से अनुपालित प्रमाण होनी चाहिए ताकि बैंक के भीतर किसी भी स्तर पर गैर-अनुपालन को तुरंत पकड़ लिया जाए और उसमें तुरंत सुधार किया जा सके। अनुपालन प्रभाग ने विभिन्न स्तरों पर गैर-अनुपालन की घटनाओं को नियंत्रित करने के लिए अधिक प्रभावी निगरानी करने के लिए अनुपालन कार्यों के मॉडल को फिर से परिभाषित किया है। यह नियामक आवश्यकताओं/दिशानिर्देशों के अनुसार जोखिम प्रबंधन और विभिन्न व्यावसायिक इकाइयों की आंतरिक नियंत्रण प्रणालियों की पर्याप्तता और प्रभावशीलता को प्राप्त करने में मदद करेगा। यह निश्चित रूप से 24X7 अनुपालन निगरानी रखने और हमारे बैंक को सबसे अधिक अनुपालनात्मक बनाने में मदद करेगा।

जीवन की सच्चाई

समय चला
पर कैसे चला
पता ही नहीं चला

जिंदगी की आपाधापी में
कब निकली उम्र हमारी यारो
पता ही नहीं चला

कंधे पर चढ़ने वाले बच्चे
कब कंधे तक आ गए
पता ही नहीं चला

किराए के घर से शुरू हुआ सफर अपना
कब अपने घर तक आ गए
पता ही नहीं चला

साईकिल के पैडल मारते हुए, हाँफते थे
उस वक्त कब से हम कारों में घूमने
लगे पता ही नहीं चला

कभी थे जिम्मेदारी हम माँ-बाप की
कब बच्चों के लिए जिम्मेदार हुए हम
पता ही नहीं चला

जिन काले घने बालों पर,
इतराते थे कभी हम
कब सफेद होना शुरू हो गए
पता ही नहीं चला

दर-दर भटकते थे नौकरी की खातिर
कब रिटायर हुए, समय का
पता ही नहीं चला

बच्चों के लिए कमाने-बचाने में, इतने
मशगूल हुए हम
कब बच्चे हमसे दूर हो गए
पता ही नहीं चला

भरे पूरे परिवार से सीना चौड़ा रखते थे
हम, अपने भाई-बहनों पर गुमान था
कब उनका साथ छूट गया, कब परिवार
हम दो पर सिमट गया
पता ही नहीं चला

अब सोच रहे थे अपने लिए भी कुछ करें
पर शरीर ने कब साथ देना बंद कर दिया
पता ही नहीं चला

हरिन्द्र पाल सिंह चावला
सहायक महाप्रबंधक
आंचलिक शस्त्र प्रभाग,
अंचल कार्यालय-भुवनेश्वर

अनुपालन जोखिम

अश्विनी कुशवाह
प्रबन्धक-अनुपालन
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

अनुपालन क्या है?

अनुपालन का अर्थ यह सुनिश्चित करना है कि किसी भी कारोबारी द्वारा बाहरी नियमों और आंतरिक नियंत्रणों का पालन सुनिश्चित किया जा रहा है। वित्तीय सेवा क्षेत्र में मुख्य अनुपालन कार्य, निवेशकों की सुरक्षा और यह सुनिश्चित करना कि बाजार निष्पक्ष, कुशल और पारदर्शी है, जैसे प्रमुख नियामक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए किया जाता है।

इन उद्देश्यों को वित्तीय प्रणाली में उपभोक्ताओं का विश्वास बढ़ाने के लिए निर्धारित किया गया है। वित्तीय सेवा संगठन विनियामक व्यावसायिक नियमों के अधीन हैं जो नियम-उल्लंघन और खामियों का पता लगाने के साथ-साथ विज्ञापन, ग्राहक संचार, विवादों का निपटारा, ग्राहक समझ और उपयुक्तता, ग्राहक व्यवहार, ग्राहक संपत्ति और धन आदि को भी नियंत्रित करते हैं।

अनुपालन जोखिम क्या है?

पारंपरिक बैंकिंग व्यवसाय, साधारण उत्पाद और गहन विनियमन के युग में, अनुपालन अपेक्षाकृत सरल था। बैंकों को नियामकों द्वारा निर्धारित विशिष्ट अधिनियमों और विनियमों के प्रावधानों का पालन करना अपेक्षित था। वर्तमान में अनुपालन को एक विशेष महत्त्व के कार्य के रूप में पहचाना जा सकता है जिसे व्यवसाय के हिस्से के रूप में निर्वहन किया जा सकता है। हालांकि, वैश्वीकरण, उदारीकरण, नई प्रक्रियाओं, नवीन और जटिल उत्पादों की शुरूआत के साथ-साथ व्यावसायिक प्रक्रियाओं में आईटी के अभिग्रहण और एकीकरण में वृद्धि हुई है, फलस्वरूप अनुपालन कार्य ने उच्चता और महत्व को प्राप्त किया है। परन्तु अनुपालन को अभी भी एक स्वतंत्र 'जोखिम' कार्य नहीं माना जा सकता है, बल्कि आमतौर पर अनुपालन को परिचालन जोखिम का एक हिस्सा माना जाता है।

बैंकिंग में अनुपालन क्यों महत्वपूर्ण है?

- बैंकिंग अनुपालन और जोखिम वित्तीय संस्थान के अधिकारियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक बन गया है। आचरण-जोखिम, एंटी-मनी लॉन्ड्रिंग (एएमएल) जोखिम, जोखिम संस्कृति और तीसरे और चौथे पक्ष (उप अनुबंधकर्ताओं) के जोखिम, आदि जैसे नए कानून और नियम जारी करने अनिवार्य हो गए हैं। सभी बैंकों का कार्य करने का तरीका अलग-अलग हो सकता है, लेकिन उन सभी में एक समानता होती है वह है अनुपालन।
- किसी भी उद्योग में अनुपालन प्रबंधन महत्वपूर्ण स्थान रखता है। हालांकि, बैंकिंग उद्योग में अनुपालन का महत्व अन्य उद्योगों की तुलना में अधिक है। बैंकों को गैर-अनुपालन के लिए कानूनी कार्रवाई का सामना करना पड़ता है साथ ही जुर्माने के अलावा परिणाम और भी भयावह हो सकते हैं जिसमें अस्थायी निलंबन से स्थायी बंद करना शामिल है।
- नियमों का अनुपालन न करने से बैंक की ब्रांड प्रतिष्ठा पर बहुत प्रभाव पड़ता है। वित्तीय संस्थानों के मामले में, ग्राहक ब्रांड प्रतिष्ठा के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं और गैर-अनुपालन से ग्राहकों की संख्या में भी कमी आ सकती है।

निष्कर्ष: –

सभी बैंकों के लिए अनिवार्य रूप से अनुपालन प्रबंधन प्रणाली होना आवश्यक हो गया है। पहले छोटे बैंक या वित्तीय संस्थान अनुपालन प्रबंधन प्रणाली रखने से जुड़ी लागतों से बचने की कोशिश करते थे। हालांकि, अब गैर-अनुपालन होने की स्थिति में बैंक की लागत एक अनुपालन तंत्र होने से जुड़ी लागतों से कहीं अधिक होती है और कुशल अनुपालन तंत्र बैंकिंग में सभी प्रकार के जोखिम, विशेष रूप से परिचालन जोखिम को भी कम करता है।

उद्घाटन/विमोचन

मंडल कार्यालय, फाजिल्का के अंतर्गत बने रैम का उद्घाटन करते हुए श्री डी के गुप्ता, अंचल प्रमुख, लुधियाना एवं श्री नरेश कुमार नागपाल, मंडल प्रमुख, फाजिल्का ।

मंडल कार्यालय, बिहारशरीफ के अंतर्गत बिहारशरीफ शहर में डीजी डट के उद्घाटन के मौके पर, अंचल प्रबन्धक श्री संजय कांडपाल, मंडल प्रमुख श्री सत्येन्द्र सिंह, अग्रणी जिला प्रबन्धक श्री रत्नाकर झा, मुख्य प्रबन्धक श्री राजकिशोर प्रसाद एवं अन्य स्टाफ सदस्य।

सिग्नेचर स्ट्रीट मॉल गोविन्द पुरम दिल्ली में डीजी डट का उद्घाटन करते हुए श्री राम कुमार अंचल प्रमुख, दिल्ली, साथ में हैं श्री राजीव बंसल मंडल प्रमुख, गाजियाबाद तथा अन्य स्टाफ सदस्य।

अंचल कार्यालय, गुरुग्राम की गृह पत्रिका "पीएनबी अभिव्यक्ति" के प्रवेशांक का विमोचन करते हुए मुख्य महाप्रबंधक-राजभाषा श्री बी. एस. मान, मुख्य महाप्रबन्धक, आईएडी श्री बृज मोहन शर्मा, मुख्य महाप्रबंधक-डीबीडी, श्री गौरी प्रसाद शर्मा, अंचल प्रमुख, गुरुग्राम श्री समीर बाजपेयी, महाप्रबंधक-आईएडी, श्री आलोक सिन्हा, एवं महाप्रबंधक-आईएडी, श्री पी.पी. सिंह।

श्री सुरिंदर पाल सिंह जी, अंचल प्रबंधक, मेरठ द्वारा श्री एस.पी. सिंह, सेवानिवृत्त उपमहाप्रबंधक द्वारा लिखित पुस्तक लेपल 'नेवसट इन बैंकिंग कैरिअर' का विमोचन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित हैं बाएं से श्री निलेश कुमार, मण्डल प्रमुख, मेरठ पश्चिम; श्री एस.एन.गुप्ता, मण्डल प्रमुख, मेरठ पूर्व; श्री कान्डपाल, सहायक महाप्रबंधक, निरीक्षण एवं लेखापरीक्षा विभाग, प्रधान कार्यालय; श्री राजीव लोचन, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), अंचल कार्यालय, मेरठ; श्री पी. के. जैन, उप अंचल प्रबंधक, अंचल कार्यालय, मेरठ; श्री संजीव श्रीवास्तव, उपअंचल प्रबंधक, अंचल कार्यालय, मेरठ, श्री सुरिन्दर पाल सिंह, अंचल प्रबंधक, मेरठ; श्री एस. पी. सिंह, सेवानिवृत्त उपमहाप्रबंधक, पीएनबी एवं श्री अजय मित्तल, प्रगति प्रकाशन, मेरठ।

अंचल कार्यालय, मेरठ की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान मेरठ अंचल की छमाही पत्रिका 'भयराष्ट्र गरिमा' का विमोचन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित हैं बाएं से श्री राजेन्द्र कुमार, मण्डल प्रमुख, मुरादाबाद, श्री सुधीर कुमार, मण्डल प्रमुख, बिजनौर, श्री आर. के. गुप्ता, शाखा प्रमुख, मेरठ; श्री पी. के. जैन, उप अंचल प्रबंधक, अंचल कार्यालय, मेरठ; श्री संजीव श्रीवास्तव, उप अंचल प्रबंधक, अंचल कार्यालय, मेरठ; श्री सुरिन्दर पाल सिंह, अंचल प्रबंधक, मेरठ; श्री ए. के. वर्मा, सहायक महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय, मेरठ तथा श्री ओम प्रकाश, मंडल प्रमुख, सहारनपुर।

पुस्तक समीक्षा

पुअर इकोनॉमिक्सः
रीथिंकिंग पॉवर्टी एंड द वे टु एन्ड इट POOR ECONOMICS:
Rethinking Poverty & the ways to end it
प्रकाशकः पेंगुइन बुक्स
लेखक : अभिजीत बनर्जी और एस्थर डुफ्लो
(वर्ष 2019 में अर्थशास्त्र विषयक नोबेल पुरस्कार विजेता)

अभिजीत बनर्जी और एस्थर डुफ्लो ने विगत 15 वर्षों में विभिन्न विकासशील देशों में किए गए शोध के माध्यम से गरीबी के विविध आयाम और इसके उन्मूलन के लिए अभिनव प्रविधियों पर एक नवोन्मेषी परिप्रेक्ष्य सामने रखा है। वे वस्तुतः जेफरी सैक्स और विलियम ईस्टर द्वारा शुरू की गई चर्चा को आगे बढ़ाते हैं और विवेकपूर्ण तरीके से गरीबों के सोचने और व्यवहार करने के तरीके को सामने लाते हैं। यादृच्छिक नियंत्रित परीक्षणों (Randomized Controlled Trials) के आधार पर लेखकों ने गरीबी के चक्र की सच्चाई पर प्रकाश डाला है।

पुस्तक को दो मुख्य भागों में विभाजित किया गया है। पहला भाग गरीबों के निजी जीवन और जमीनी हकीकत पर प्रकाश डालता है। यह गरीबों के दृष्टिकोण से उपभोग, स्वास्थ्य, शिक्षा और प्रजनन जैसे विषयों पर चर्चा करता है। यह विस्तार से बताता है कि लोग गरीब क्यों हैं, जब उनके पास भोजन पर्याप्त अथवा पौष्टिक युक्त नहीं है और वे टेलीविजन, डीवीडी प्लेयर, मोबाइल फोन आदि जैसे विलासिता पर जोर देते हैं, हालांकि गरीब अपने बच्चों को स्कूलों में भेजते हैं, लेकिन इससे बौद्धिक क्षमता विस्तार में बहुत अंतर नहीं पड़ता है। लेखक यह भी बताते हैं कि गरीबों को चिकित्सकीय सुविधा की चिंता बहुत कम या बिल्कुल नहीं है, लेकिन वे अक्सर दवाओं का सहारा लेते हैं और कमाई का एक अहम् हिस्सा दवाईयों पर खर्च कर देते हैं।

पुस्तक का दूसरा भाग संस्थानों और संस्थागत संरचनाओं के विविध पक्षों को उद्घाटित करता है। यह उन जोखिमों के प्रति ध्यानाकर्षित करता है जिनका गरीब लोगों को सामना करना पड़ता है और उनके बचत-व्यवहार, सूचना की कमी और बाजार की विकृतियां जो छोटे उद्यमियों, माइक्रोफाइनेंस को विफलता की ओर ले जाती हैं।

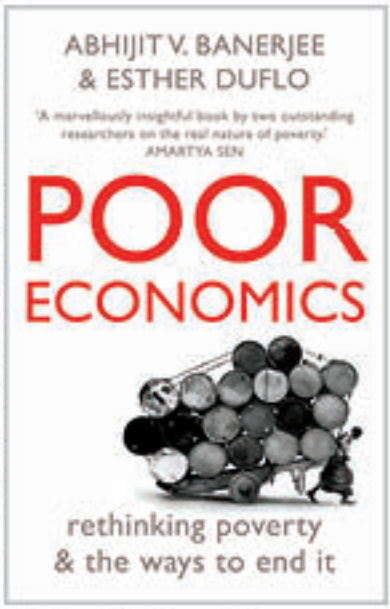

पुस्तक बहुत प्रभावी ढंग से गरीब लोगों की निर्णय लेने की प्रक्रिया के पीछे की तर्कसंगतता को उपस्थापित करती है। पुस्तक का तर्क है कि गरीब वही हैं जो इस ग्रह पर रहने वाले अन्य लोगों के समान हैं। यद्यपि अमीर और गरीब, दोनों समान इच्छाओं को साझा करते हैं, अंतर उन सीमित एवं प्रयाप्त संसाधनों में निहित है जो उनके पास हैं। "पुअर इकोनॉमिक्स" नीतियों के बारे में चर्चा के साथ शुरू होता है। लेखकों का तर्क है कि अधिकांश नीतियाँ विभिन्न विचारधाराओं पर आधारित हैं और वे अक्सर क्रियान्वयन में त्रुटि और जानकारी की कमी के कारण विफल होती हैं। गरीबी के कारणों की खोज करने की बजाय गरीबों के समक्ष उपलब्ध विकल्पों को समझने की जरूरत है। गरीबी के कारणों और लोकतंत्र, मुक्त-बाजार, वृहद स्तर पर विदेशी सहायता की प्रभावशीलता आदि पर विशेष बल दिया गया है। सामान्य रूप से इस बात पर भी बल दिया गया है कि किसी ठोस समाधान के साथ बड़े सवालों से निपटने के बजाय छोटे मुद्दों का निस्वारण अधिक उचित है। विदेशी सहायता की वकालत करने वाले विदेशी सहायता को एक बड़ी मदद मानते हैं जो गरीबी से लड़ने में सहायता कर सकती है जबकि आलोचक इसे आशीर्वाद के बजाय अभिशाप मानते हैं।

हमें किसकी बात सुननी चाहिए? हमारे पास निश्चित रूप से कोई जवाब नहीं है। बल्कि, बड़े पैमाने पर प्रयोगों का संचालन करना और नीतिगत हस्तक्षेपों के प्रभाव का विश्लेषण करना अधिक उपयोगी होगा। इस तरह, हमारे लिए काम करने वाली नीतियों और ऐसा न करने वाली नीतियों और नीतियों की विफलता के पीछे के कारणों का पता लगाना उपयोगी हो सकता है। वे एक किसान कैनेडी का उदाहरण देते हैं, जिन्हें उर्वरक का एक बोरा दिया गया, जिससे उनके खेतों की उत्पादकता बीस गुना

बढ़ गई और फिर भी उन्होंने अगले रोपण के दौरान उर्वरक का उपयोग नहीं किया। यदि नीतियों का सही मूल्यांकन किया जाता है, तो छोटे हस्तक्षेप भी विशाल अंतर ला सकते हैं। समाधान के रूप में यह पुस्तक गरीबी से लड़ने के तरीके के रूप में विदेशी सहायता की न तो वकालत करती है और न ही खारिज करती है लेकिन व्यक्तिगत संदर्भों में इसकी प्रभावकारिता का मूल्यांकन करती है। पुस्तक में स्वास्थ्य के मुद्दों के प्रति गरीबों के उपभोग व्यवहार और रवैये के महत्वपूर्ण मुद्दे का भी विश्लेषण किया गया है। लेखकों ने गरीबों की आदतों की गम्भीरता से पड़ताल की है।

लेखकों के शोध में स्वास्थ्य-व्यवहार का विशेष रूप से परीक्षण है। गरीब अपने लिए उपलब्ध मुफ्त दवाओं को अनदेखा क्यों करते हैं और सुस्वादु लेकिन कम पोषक तत्वों वाले भोजन का विकल्प चुनते हैं और तंबाकू और शराब पर अधिक खर्च करते हैं। उनका तर्क है कि शायद गरीब स्वास्थ्य के मुद्दों को कम महत्त्व देते हैं और सामाजिक दबावों के कारण शादियों, अंतिम संस्कारों और स्थानीय त्योहारों आदि पर शक्ति का अतिक्रमण कर खर्च करते हैं। वे सुझाव देते हैं कि हमें इस तरह का भोजन प्रदान करना चाहिए जो न केवल स्वाद में अच्छा हो बल्कि आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्वों से भी भरपूर हो ताकि गरीब एक पैकेज में स्वाद और स्वास्थ्य का आनंद ले सकें। गरीब अप्रभावी इलाज पर बहुत खर्च करते हैं। गंभीर जानकारी, अविश्वसनीय स्वास्थ्य सेवा वितरण और विश्वास की कमी उन कुछ चीजों में से हैं जो लोगों को स्वास्थ्य आधारित गरीबी के जाल से बाहर नहीं आने देती हैं। जनसंख्या नियंत्रण नीति तैयार करते समय यह विचार किया जाना चाहिए कि यह गर्भनिरोधक की उपलब्धता मात्र नहीं है जो प्रजनन क्षमता को नियंत्रित करती है लेकिन सामाजिक मानदंडों, लड़कियों के खिलाफ भेदभाव और आर्थिक विचारों में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

शिक्षा की निम्न गुणवत्ता के कारण, गरीबों का मानना है कि भविष्य में बहुत कम लाभ स्कूली शिक्षा से प्राप्त होंगे और इसलिए वे मानक बढ़ाने के लिए बहुत कम सोचते हैं। स्वास्थ्य के अचानक संकट, बारिश की कमी या किसी अन्य संकट के कारण कृषि के अप्रत्याशित नुकसान गरीबों को गरीबी के चक्र में धकेल देते हैं और वे समय के साथ इन जोखिमों से निपटने में असमर्थ होते हैं। जोखिम से बचने के लिए, वे उन फसलों को चुनते हैं जो कम लाभदायक हैं, लेकिन कम जोखिम सहन करती हैं। बनर्जी और डूफ्लो माइक्रोक्रेडिट के समर्थकों में से हैं और इसे गरीबी और उससे उत्पन समस्या को मिटाने की एक बड़ी उम्मीद मानते हैं। उनके अनुसार, जहां सरकारी प्रयास बेकार हो गए हैं यह प्रभावी तरीके से काम करता है और सकारात्मक परिणाम पैदा करता है। अरबों लोग छोटे व्यवसाय करते हैं या अपने छोटे खेतों पर काम करते हैं क्योंकि उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं है। इस स्थिति में, माइक्रोक्रेडिट बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है और उन्हें गरीबी से दूर रख सकता है।

यह व्यापक रूप से माना जाता है कि गरीब इसलिए नहीं बनते हैं क्योंकि उनके पास कुछ भी नहीं होता है। लेकिन यह पुस्तक बताती है कि गरीब बचत करते हैं लेकिन वे अपनी बचत बैंकों में नहीं डालते हैं और इस कारण से, माइक्रोक्रेडिट बहुत महत्वपूर्ण है। सही अंतर और इसके कार्यान्वयन के बीच व्यापक अंतर को कम करने के लिए यह काफी हद तक वांछनीय है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यदि आप अच्छी तरह से आमजन के कल्याण के लिए कितनी अच्छी नीतियों की योजना बना रहे हैं अगर वे ठीक से लागू नहीं होने जा रही हैं। यहां राजनीतिक अर्थव्यवस्था ऐसी तस्वीर में आती है जो पूरे परिदृश्य को विकृत कर देती है। लेखकों के अनुसार, औपनिवेशिक संस्थाएं, निम्न गुणवत्ता वाले शासन, भ्रष्टाचार, अन्य चीजों के अलावा, अन्य सम्बंधित विषयों को और अधिक जटिल बनाते हैं।

समकालीन विख्यात अर्थशास्त्रियों द्वारा इस सिद्धांत के अनुप्रयोगों के समानांतर इसके परिणाम को अतिशयोक्ति के साथ प्रस्तुत करने के आरोप वैचारिक चर्चाओं में दृष्टिगोचर होते रहे हैं। वस्तुतः उसका आधार चिकित्सकीय प्रणाली में भी इसके परिणाम संदेह से पूर्णतः परे नहीं हैं। साथ ही, आरसीटी के सैम्पलिंग प्रविधि पर भी कई आपत्तियाँ हैं।

निष्कर्षतः के लिए, "पुअर इकोनॉमिक्स" पांच मुख्य संदेशों के साथ आता है। सबसे पहले, यह दिखाता है कि यह जानकारी की कमी है जो गलत निर्णय लेती है। दूसरे, अधिकतर मामलों में, अपने अस्तित्व के लिए बहुत सारी जिम्मेदारियों को उठाना पड़ता है। तीसरा, बाजारों की अनुपस्थिति निर्दोष लोगों के कंधों पर बोझ बनती है। चौथा, पुस्तक स्पष्ट रूप से दिखाती है कि गरीबों की जमीनी हकीकत को समझे बिना, सरकारें ऐसी नीतियों को लागू करती हैं जो अवसर विफलताओं का सामना करती हैं। संक्षेप में, यह पुस्तक एक नया बोध प्रदान करती है जो इन सभी मुद्दों पर सूक्ष्मता से विचार करती है।

डॉ. स्वस्ति नाथ झा
राजभाषा अधिकारी
राजभाषा विभाग,
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

आधुनिक बैंकिंग और प्रशिक्षण की आवश्यकता

विद्या भूषण मल्होत्रा
अधिकारी (सेवानिवृत)
जबलपुर

आज के बदलते आर्थिक परिवेश तथा प्रतिस्पर्धापूर्ण वातावरण में बैंको के लिए टिके रहना जितना आवश्यक हो गया है, उतना ही चुनौतीपूर्ण भी। जहां एक ओर ग्राहकों में आई जागृति के कारण उनकी बढती हुई अपेक्षाएं हैं वहीं दूसरी ओर नये खिलाडियों के प्रवेश ने इस प्रतिस्पर्धा को और कड़ा रूख प्रदान कर दिया है। बैंकों के समक्ष बाजार स्थापन, बाजार उन्मुखता, तकनीकी होड़, प्रतिस्पर्धा, नवीन व्यवसाय, नवोन्मेष उत्पाद, उत्पाद विपणन व व्यावसायिक जोखिम जैसी विभिन्न चुनौतियां भी उभर कर सामने आ रही हैं। अतः आधुनिक बैंकिंग के इस दौर में बैंकों के सफल संचालन के लिए बैंकिंग प्रशिक्षण की आवश्यकता और भी बढ़ गई है।

प्रशिक्षण की अवधारणाः-

यह जानना आवश्यक है कि प्रशिक्षण की अवधारणा क्या है। यह देखा गया है कि शिक्षण और प्रशिक्षण को एक ही समझ लिया जाता है जबकि दोनों में भिन्नता है। शिक्षण एक सैद्धान्तिक प्रक्रिया है जब कि प्रशिक्षण रोजगार परक व्यावहारिक ज्ञानार्जन है। शिक्षण एक कला है व प्रशिक्षण एक कलात्मक विज्ञान है जिसमें प्रोयोगिक शिक्षा प्रदान की जाती है। एडविन बी फिल्प्पों ने प्रशिक्षण के संबंध में कहा है कि 'एक विशेष कार्य को करने के लिए कर्मचारी को ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि करने का कार्य प्रशिक्षण कहलाता है।'

प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्ट्रेटन ने प्रशिक्षण को इस प्रकार परिभाषित किया है- ''ज्ञान, दक्षता, तकनीक, रुझान तथा अनुभव का ऐसा विकास जो किसी भी व्यक्ति को इतना योग्य बना दे कि वह जिस संस्था में है, उसमें अधिक प्रभावशाली योगदान दे सके।

प्रशिक्षण की आवश्यकताः-

किसी भी संस्था की सफलता में मानव संसाधन का विशेष महत्व होता है। कार्यकुशलता में वृद्धि के लिए ज्ञान व निपुणता में भी लगातार वृद्धि की आवश्यकता होती है। जो प्रभावशाली प्रशिक्षण तंत्र द्वारा ही संभव है। अतः प्रशिक्षण किसी भी कर्मचारी के कैरियर का महत्वपूर्ण पहलू होता है। आज की आधुनिक बैंकिंग उदारीकरण, भू मंडलीकरण व प्रतिस्पर्धा से प्रभावित हो रही है, ऐसे में प्रशिक्षण की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। प्रशिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जो कार्मिकों की मौजूदा कार्यकुशलता को बढाकर उन्हें और बड़ी जिम्मेदारियां सम्भालने तथा कुशल व बेहतर ढंग से अपना कार्य करने में सफल या सक्षम बनाती है।

आज के प्रतिस्पर्धा के दौर में प्रशिक्षण की आवशकता और भी बढ़ गई है। इसका मुख्य कारण है प्रशिक्षण का उत्पादकता का पर्याय बन जाना। एक प्रशिक्षित कर्मचारी अपने ज्ञान के बल पर व्यवस्थित रूप से कार्य करके, संस्थान की उत्पादकता में सहभागी बनता है। कुछ किए गए सर्वेक्षणों से पता चला है कि संस्थान की कार्यप्रणाली पर आधारित प्रशिक्षण देने के बाद संस्थान की उत्पादकता में लगभग 30 से 40% की वृद्धि होती है। अतः आधुनिक बैंकिग में प्रशिक्षण की आवश्यकता विशेष महत्त्व रखती है।

प्रशिक्षण का महत्त्वः-

आधुनिक बैंकिंग में प्रशिक्षण का विशेष महत्व है। प्रशिक्षण द्वारा संस्था को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में बहुत लाभ मिलता है। यह सत्य कि प्रशिक्षण में किया गया व्यय निश्चित तौर पर बैंकों के लिए निवेश होता है जिसमें प्रतिफल की दर बहुत ऊँची होती है। प्रशिक्षण द्वारा कार्य- निष्पादन में सुधार आता है, परिवर्तनों के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सहायता मिलती है एवं उत्पादकता में वृद्धि होती है।

प्रशिक्षण कर्मचारियों के मनोबल को बढ़ाता है तथा आत्मविश्वास की भावना का विकास करता है जिससे कर्मचारियों की कार्यकुशलता में वृद्धि होती है परिणामस्वरुप सेवाओं में गुणवत्ता तथा ग्राहक संतुष्टि को बढ़ावा मिलता है। प्रशिक्षण का विशेष महत्त्व यह भी है कि प्रशिक्षण कर्मचारियों के समय की बचत करते हैं जिससे संस्थानों का अपव्यय कम होता है, सेवा लागत में कमी आती है व लाभप्रदता में वृद्धि होती है।

क्षमता निर्माण व व्यवसायिक विकास में प्रशिक्षण की भूमिकाः-

प्रशिक्षण द्वारा कर्मचारियों के ज्ञान, कौशल तथा अभिरुचियों का विकास होता है जिससे संगठन के लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता मिलती है। भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व उप गवर्नर श्री. आर. गाँधी ने प्रशिक्षण के तरीकों में सुधार लाने तथा क्षमता निर्माण के महत्व पर विशेष जोर दिया था। बैंकिंग क्षेत्र देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है अतः क्षमता निर्माण को ध्यान में रखकर भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा 'उन्नत वित्तीय अनुसन्धान और अध्ययन केन्द्र' (centre for Advanced Financial research & learning) की स्थापना की गई। क्षमता निर्माण की प्रकिया प्रशिक्षण में विशेष महत्त्व रखती है। इसमें बैंक स्तर पर मानव संसाधन विकास, संगठनात्मक विकास, संस्थागत और कानूनी ढांचे के विकास आदि भी शामिल हैं।

व्यावसायिक विकास में भी प्रशिक्षण का विशेष महत्व है। प्रशिक्षण द्वारा कर्मचारियों के कौशल का पूर्णरूप से विकास करके प्रयत्नों का अनुकूलतम उपयोग किया जाता है जिससे व्यावसायिक विकास को एक नई दिशा मिलती है।

नए और पुराने कर्मचारियों के बीच तालमेलः-

नए और पुराने कर्मचारियों के बीच तालमेल या सामंजस्य स्थापित करने में प्रशिक्षण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आधुनिक बैंकिंग के इस दौर में यह सामंजस्य स्थापित करना बहुत आवश्यक हो गया है। पिछले 5-6 वर्षों में जो बैंक कर्मचारी बैंकों में भर्ती हुए हैं उनकी औसत आयु लगभग 28 वर्ष है। कोई कंप्यूटर विशेषज्ञ है तो कोई सूचना प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में डिप्लोमा या डिग्री धारक है। वहीं दूसरी ओर पुराने अनुभवी स्टाफ की औसत आयु 56 वर्ष से अधिक है। अतः कर्मचारियों को उनकी रूचि एवं योग्यता के आधार पर अर्थात् सही व्यक्ति को सही कार्य सौंपा जाना चाहिए तभी नए व पुराने स्टाफ के बीच तालमेल स्थापित हो सकेगा तथा ग्राहक संतुष्टि को बढ़ावा मिलेगा।

प्रशिक्षण की प्राथमिकताएंः-

आज के प्रतिस्पर्धी वातावरण में प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करते समय संस्थान की मूलभूत आवश्यकताओं को प्राथमिकता देनी चाहिए। चाणक्य ने प्रशिक्षण के विषय में अपनी नीति - रणनीति पर स्पष्ट करते हुए कहा है- 'युद्ध जीतने के लिए सैनिकों को नवीन अस्त्रों का ज्ञान, उपलब्धता एवं रणनीति की जानकारी होना उपयुक्त होता है।'

बैंक के अर्थशास्त्री सम्मेलनों तथा राष्ट्रीय बैंक प्रबंधन संस्थान, पुणे द्वारा बैंकों में 'प्रशिक्षण ढांचे का पुनर्निर्धारण' जैसे विषयों पर जोर दिया जाता रहा है जिससे प्रशिक्षण कार्यक्रमों को उपयोगी तथा प्रभावशाली बनाया जा सके।

बैंकों में प्रायः यह देखा गया है कि प्रशिक्षणार्थियों का चयन उनकी आवश्यकता अनुसार नहीं किया जाता है और न ही प्रशिक्षण द्वारा ज्ञान का सदुपयोग ही किया जाता है। अतः चयन प्रक्रिया में समुचित परिवर्तन किया जाना चाहिए। नए-नए क्षेत्रों, विषयों तथा चुनौतियों की पहचान की जानी चाहिए तथा प्रशिक्षित कर्मचारियों को प्रशिक्षण के अनुरूप ही कार्य का आवंटन किया जाना चाहिए। कुछ अन्य पहलुओं पर भी ध्यान देना नितांत आवश्यक है जैसे-

- प्रशिक्षण कार्यक्रम नीतियों, लक्ष्यों, प्रगति, बाजार का रुख, लाभार्जन तथा कार्य पद्धति में सुधार को ध्यान में रखकर तैयार किये जाने चाहिए।

- प्रशिक्षण कार्यक्रम ज्यादा लम्बी अवधि के नहीं होने चाहिए, क्योंकि लंबी अवधि के कार्यक्रम बोझिल तथा अरुचिकर सिद्ध होते हैं।

- प्रशिक्षणार्थियों के ज्ञान का विश्लेषण करने के लिए प्रशिक्षण से पूर्व व प्रशिक्षण के पश्चात् परीक्षा ली जा सकती है। जिससे प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण को मात्र संवैधानिक अवकाश न समझें बल्कि अपने कैरियर का महत्वपूर्ण हिस्सा मानें।

- प्रशिक्षण केन्द्रों में प्रायः व्याख्यान पद्धति ही अपनाई जाती है। इसे अधिक रुचिकर बनाने के लिए सामूहिक चर्चा, प्रश्न मंच प्रकरण अध्ययन, दृश्य माध्यम (फिल्म इत्यादि) तथा आवश्यकता पड़ने पर मौके पर प्रशिक्षण जैसी पद्धतियों को अपनाया जा सकता है।

- प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों के बीच प्रतियोगिताओं का आयोजन करना चाहिए। अतः विषय विशेष पर आशु भाषण, आशु लेख तथा वस्तुनिष्ठ प्रश्न जैसी प्रतियोगिताओं द्वारा न केवल उनके ज्ञान में वृद्धि होगी बल्कि सक्रिय सहभागिता की अवधारणा में भी वृद्धि होगी।

- संकाय सदस्यों की केवल योग्यता का मूल्यांकन नहीं होना चाहिए बल्कि रूचि मूल्यांकन भी बहुत आवश्यक है।

प्रशिक्षण के संबंध में प्रबंधकीय दृष्टिकोणः-

विभिन्न प्रकार के अध्ययनों से पता चला है कि बैंक प्रबंध तंत्र का दृष्टिकोण प्रशिक्षण के संबंध में उतना व्यापक नहीं है जितना होना चाहिए। छोटी तथा ग्रामीण शाखाओं में प्रशिक्षण में स्टाफ की संख्या हमेशा आवश्यकता से कम रहती है। इन शाखाओं में प्रशिक्षण के लिए चुने गए बैंक स्टाफ की कार्य भार मुक्ति की समस्या आये दिन सामने आती रहती है। बैंक की नोडल शाखाओं या मंडल कार्यालय स्तर से इस समस्या को दूर किया जाना चाहिए ताकि प्रशिक्षण के लिए नामित प्रत्येक कर्मचारी आवश्यक रूप से प्रशिक्षण प्राप्त कर सके।

आधुनिक बैंकिंग के इस दौर में अब प्रबंधकीय दृष्टिकोण में भी बदलाव आ रहा है। कुछ बैंकों में बहुस्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (मल्टीलेयर ट्रेनिंग) का भी प्रावधान है जिसमें लिपिक, अधिकारी व प्रबंधकों को एक साथ प्रशिक्षण दिया जाता है जिसके सार्थक परिणाम भी सामने आ रहे हैं। कुछ बैंकों ने प्रयोग के तौर पर कर्मचारी यूनियनों तथा अधिकारी संघों के प्राधिकारियों को भी प्रशिक्षण देना प्रारम्भ कर दिया है जिससे टीम भावना को बल मिलता है व मधुर औद्योगिक संबंध भी विकसित होते हैं।

अंत में:-

यह सत्य है कि मानव संसाधन विकास का सबसे महत्वपूर्ण पहलू भी प्रशिक्षण है। प्रशिक्षण द्वारा कर्मचारियों को नई नीतियों, नए उत्पादों, नई तकनीक, नए नियमों व नई योजनाओं की जानकारी प्राप्त होती है। कर्मचारियों के ज्ञान तथा आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। कार्य निष्पादन में निपुणता आती है व मानसिकता में परिवर्तन आता है। फलस्वरूप उपभोक्ताओं को न केवल बेहतर सेवाएँ प्राप्त होती हैं बल्कि नए परिवेश का पूर्ण व्यावसायिक दोहन करने में भी सहायता मिलती है। अतः आधुनिक बैंकिंग में प्रशिक्षण की आवश्यकता और महत्व को ध्यान में रखकर बैंक कर्मचारियों को सामयिक विषयों पर समुचित प्रशिक्षण देना बहुत अनिवार्य हो गया है।

ममता का मर्म

मीना अग्रवाल
अधिकारी
मण्डल कार्यालय, बिजनौर

आज सूरज की लालिमा में न जाने क्यों अलग सा प्रकाश था, पिछले कुछ दिनों से मानो सूरज देवता भी रुठे हुए थे। घर में सभी लोग उल्लास से भरे हुए थे खासतौर पर दादी के मन में असीम खुशी थी और वो उनके चेहरे की झुर्रियों में भी छुपाए नहीं छुप रही थी।

बात ज्यादा पुरानी तो नहीं है, पाँच साल पहले कुछ ऐसा हुआ जिसने सारे घर की खुशियों पर ग्रहण ही लगा दिया। शर्मा जी के घर रोज सुबह की शुरुआत दादी के मंदिर की घंटी से होती थी पर उस दिन सब कुछ अटपटा ही था। न आज घंटी की आवाज आई न ही सरला के रसोई में बर्तन की खट-पट थी और न ही कूकर की सीटी की। शर्मा जी भी ऑफिस बिना टिफिन लिए ही चले गए थे। शर्मा निवास में कुल चार प्राणी रहते थे। शर्मा जी जिनका नाम यूं तो हरिवंश था पर आस-पड़ोस और ऑफिस में शर्मा जी के नाम से ही जाने जाते थे। दूसरी उनकी पत्नी सरला, तीसरी पाँच वर्षीय बेटी ध्वनि और आखिरी तथा सबसे महत्वपूर्ण उनकी माता जी।

उस दिन सुबह तड़के उठने वाली सरला आज कुछ ठीक-सी नहीं लग रही थी। दिन भर फिरकी की तरह घूमने वाली सरला आज सही से चल भी नहीं पा रही थी। शाम होते-होते सरला ने चारपाई ही पकड़ ली। हालत खराब होने के कारण शर्मा जी को ऑफिस से जल्दी घर आना पड़ा और डॉक्टर को भी साथ ही ले आए।

डॉक्टर की जांच में बीमारी का कुछ खास पता नहीं चला। कमजोरी और खून की कमी कह कर डॉक्टर ने दवाई लिख दी। वैद्य, हकीम और देसी दवाइयाँ करने पर भी तबीयत में कुछ सुधार नहीं हुआ। और फिर वही हुआ जिसका सबको डर था, अकस्मात ही सरला ने सदा के लिए घर से विदाई ले ली।

पूरा शर्मा निवास शोक के महान सागर में डूब गया। ऐसा लगा मानो सब कुछ थम-सा गया हो। धीरे-धीरे समय बीतता गया और पुरानी यादों पर वक्त की परत जमती गयी। इन सब के बीच बेचारी बिन माँ की बच्ची हँसना ही भूल गयी। अंदर ही अंदर न जाने क्या सोचती रहती और अक्सर अपनी माँ की तस्वीर हाथ में लेकर सो जाती। माँ ने बड़े अरमान से जिसका नाम ध्वनि रखा था पता चला कि वह जन्म से ही गूंगी-बहरी है। पत्नी के जाने का दुख यूं तो शर्माजी को भी कम नहीं था पर वे अपना अधिक-से-अधिक समय ऑफिस में बिताने लगे। केवल दादी ही प्यार से ध्वनि को सहलाती और इशारों से किस्से कहानियाँ समझाती।

धीरे-धीरे समय का पहिया घूमता रहा। रिश्तेदारों और मिलने जुलने वालों ने दूसरी शादी का दबाव बनाना शुरू कर दिया। बिन माँ कि बच्ची का क्या होगा, यह सोच कर बुझे मन से शर्मा जी ने सहमति दे दी।

सूक्ष्म तरीके से शादी के सारे काम-काज किए गए और शर्मा जी से उम्र में 10 वर्ष छोटी एक विधवा उनकी जीवन संगिनी बन कर घर का एक हिस्सा बन गयी। समय हमेशा क्रूर नहीं होता। अपने नाम ममता के अनुरूप ही उसका व्यवहार भी था। उसने घर को इस प्रकार संभाल लिया मानो वह सदा से ही इस घर का हिस्सा हो। ध्वनि को तो मानो माँ के रूप में एक दोस्त ही मिल गया था। अब तो दादी भी ईश्वर से यही प्रार्थना करती थी कि प्रभु अब मुझे बुलावा भेज दो। शर्मा जी जो घर आने को सजा समझने लगे थे समय से घर आने लगे। अपने बेटे का नया रूप माँ के हृदय को उल्लास से भर देता था।

कौन कहता है कि सौतली माँ हमेशा बुरी होती है। यदि कोई मन से करना चाहे तो क्या नहीं हो सकता जैसा ममता ने कर दिखाया।

मैं भी हुआ कोरोना पॉजिटिव

दिन था शनिवार का! बाकी लोगों की तरह मैंने भी सोचा था, कि छुट्टी के दिन परिवार के साथ मौजमस्ती करूंगा। दो साल के बेटे के साथ खेलने के लिए मैं उसे सोसायटी के गार्डन में ले गया। बेटे ने फरमाइश की- "पापा मुझे साइकिल चलानी है", तो उसकी इच्छा पूरी करने के लिए और उसकी साइकिल लेने के लिए मैं फ्लैट की सीढ़ी चढ़ने लगा। प्रथम तल तक पहुंचने में ही मेरी सांस चढ़ गई थी। पहले कभी ऐसा हुआ नहीं था, तो मैं तुरंत समझ गया कि कुछ गड़बड़ है।

डॉक्टर से मिलने पर उसने कोविड-19 टेस्ट की सलाह दी। टेस्ट के बाद नेगेटिव रिपोर्ट की उम्मीद में अपने आप को कमरे में बंद कर लिया। बेटा दरवाजे के बाहर खड़ा होके रोता रहा कि पापा! मुझे आपके साथ सोना है, मगर मेरे दिमाग में उम्मीद के साथ डर भी था। सुबह 10:30 बजे रिपोर्ट आई और ये पढ़कर मेरे पैरों तले जमीन खिसक गई थी कि मैं कोविड पॉजिटिव हूँ। ब्रह्मांड में सबसे तेज गति सिर्फ विचारों की होती है और उन विचारों ने मुझे कुछ ही क्षणों में बहुत कुछ दिखा और सिखा भी दिया था।

जैसे-तैसे खुद को संभालकर पत्नी को फोन पर बताया कि मैं पॉजिटिव हूँ। हम समझ गए थे कि आने वाले दिन हमारे अत्यंत कष्टकारी हैं। दफ्तर में मैं पहला पॉजिटिव था तो वहाँ हड़कंप मच गया। मैंने ईश्वर से प्रार्थना की, हे ईश्वर! यह बीमारी सिर्फ मुझ तक ही रहे, किसी और तक ना जाए। ईश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन ली थी।

खबर सुनकर मेरे पास बहुत फोन आने लगे, कुछ से बात करके तो ऐसा लग रहा था कि मैं अपनी आखिरी साँसे जी रहा हूँ। मेरे पिता एवं भाई-भाभी सब डरे हुए थे, वो मुझे आकर संभालना चाहते थे, मगर मैंने मना कर दिया। क्योंकि मैं जिस मोड़ पर खड़ा था मुझे और मेरी पत्नी को ये लड़ाई अकेले ही लड़नी थी। इन सब के बीच मेरा बेटा बस रो रहा था, पापा के पास जाना है। उसको समझाते हुए उसकी माँ ने यही बताया कि पापा ऑफिस के काम से बाहर गए हुए हैं, कुछ दिन बाद वापिस आएँगे। मेरे बेटे को यह नहीं पता था कि मैं बगल के कमरे में चुपचाप बैठा हूँ। चुप इसलिए क्योंकि मेरी आवाज सुनकर बेटा अपने आप को मुझसे मिलने से रोक नहीं पाएगा और रो-रो के अपना हाल बुरा कर लेगा।

मेरे दिल-दिमाग और शरीर की लड़ाई में दिल कहता था कि अपने बच्चे, बीवी और माँ-बाप के लिए ठीक होना है। दिमाग कहता था कि कुछ हो गया तो तेरे परिवार को कोई संभालने नहीं आएगा, तुझे कोई हाथ नहीं लगाएगा, प्लास्टिक बैग में पैक करके जला आएँगे, परिवार वालों को देखना भी नसीब नहीं होगा और इस बीच मेरा शरीर बीमारी से लड़ रहा था।

इस बीच एक अच्छी खबर आई कि मेरा बेटा और पत्नी दोनों कोविड नेगेटिव हैं। पड़ोसी मेरे घर में हर जरूरत की चीज पहुंचा देते थे। अपने स्वास्थ्य के बारे में सिर्फ मेरे डॉक्टर से बातचीत होती थी। तभी एक साथी मिला जिससे सिर्फ राम-राम होती थी। उसने उसी रात बड़े अस्पताल के एमडी एवं मनोचोकित्सक से रात को 11 बजे परामर्श कराया, जिससे मेरा मनोबल बढ़ा।

अब एक कमरे में मुझे अकेले समय काटना था और कोरोना को हराना था। सुबह उठकर प्राणायाम, गरम पानी की भाप, काढ़ा, दवाई, हल्दी का दूध, खाना-पीना सब करते हुए गर्मी में रहना। इसी बीच मेरी पत्नी ने कहा कि उसे भी सांस लेने में दिक्कत, गले में दर्द और हल्का बुखार है। मैं समझ गया था कि शायद अब उसे भी कोविड हो गया है। अब मुश्किल और बढ़ गई थी।

उसी शाम को मुझे मेरी कमर की पसलियों में दर्द महसूस होने लगा और दो रात लिए यह दर्द असहनीय बन गया था। उस समय कोरोना ने बता दिया था कि मुझे हल्के में मत लो। दर्द भरी दो रातें निकालने के बाद जो सवेरा हुआ वो सवेरा मेरी जिंदगी का सवेरा था। अपने बच्चे को छुप कर देखना मुझे और दुःख दे रहा था। एक दिन थोड़ा सा दरवाजा खोल कर मैं उसे

खेलते हुए देख रहा था, तभी मेरे बेटे ने पलट कर देख लिया, मैंने तुरंत दरवाजा बंद कर लिया। जरूर उसे आभास हुआ होगा कि मेरे पापा अंदर ही हैं, वो दौड़ता हुआ दरवाजे के पास आया और फिसल कर गिर गया, उसके मुंह से खून आ रहा था और वह रो रहा था। मुझे पता था कि उसे चोट लगी है ओर मैं उसे जाकर पकड़ भी नहीं सकता था, यह दर्द उन पसलियों के दर्द से बहुत बड़ा दर्द था।

हम दोनों पति-पत्नी रोज सुबह उठके एक दूसरे का दरवाजा खटखटा के एक दूसरे का हाल पता करते थे। शायद हम एक दूसरे को बताते थे कि हम दोनों जिंदा हैं। कुल मिला के कोरोना वाइरस ने मानसिक तौर पर हमें तोड़ दिया था। माता-पिता रोज सुबह शाम विडियो कॉल करके मुझे देखते और अपने मन को तसल्ली देते कि हमारा बेटा ठीक है। जब दर्द खत्म हुआ तो जिंदगी बेस्वाद और बिना खुशबू की हो गई। करीब 5-6 दिन लगे खुशबू और स्वाद को वापस अनुभव होने में।

समय बीतने के साथ अगले टेस्ट का समय आ गया। मेरे मन में अपने बच्चे एवं पत्नी को गले लगाने की उत्सुकता भी थी और डर था कि रिपोर्ट अगर फिर से पॉजिटिव आ गई तो क्या होगा। कुछ घंटो की प्रतीक्षा के बाद रिपोर्ट आ गई। मैं, हमेशा पॉजिटिव रहने वाला इंसान जब नेगेटिव हुआ तो सिर्फ मैं ही नहीं, मेरा परिवार एवं पड़ोसी बहुत खुश हुए।

15 दिन एक कमरे में गुजारने के बाद आत्ममंथन किया। पहली सीख थी कि बीमारी को छुपा कर फैलाने से अच्छा अपने आप को छुपा लो, ताकि बाकी लोग अच्छे से जी सकें। दूसरी सीख थी कि प्रशासन के लिए आप सिर्फ एक नंबर हो, कितने बीमार हुए, कितने ठीक हुए और कितने स्वर्ग सिधार गए। अपने परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझें, पूरा समय दें। जिंदगी बहुत छोटी है तो खुल के जिओ, अपने शौक और इच्छाएं पूरी कर लेनी चाहिए, क्योंकि कल क्या होगा, कोई नहीं जानता।

आखिरी सीख यह थी कि अपने परिवार के लिए आज ही इतना कर दें कि आपके बाद उन्हें किसी के सामने हाथ न फैलाने पड़े। टर्म इंश्योरेंस प्लान अवश्य लें।

अंत में एक वाक्य से विराम लूँगा, "मौज लो, रोज लो, न मिले तो खोज लो"।।

सुमित आचार्या
प्रबंधक (अग्नि सुरक्षा)
अंचल कार्यालय, जयपुर

व्यंजन

गाजर का हलवा

ममता मीना
उप प्रबन्धक-राजभाषा
मंडल कार्यालय, उदयपुर

सामग्री–250 ग्राम गाजर, 4 चम्मच घी, दो गिलास दूध, चीनी-आवश्यकतानुसार, सूखे मेवे (बादाम, किशमिश, काजू, 2 इलायची)

बनाने की विधि– सबसे पहले गाजर को छीलकर अच्छे से कद्दूकस कर लें। उसके बाद एक कुकर में घी गर्म करें तथा गर्म होने पर कद्दूकस की हुयी गाजर को कुकर में डाल दें और 5 मिनट चलाने के बाद उसमें दूध डाल दे तथा हिला कर कुकर को बंद कर दे। 4 से 5 सीटी आने के बाद कुकर को खोल कर गाजर को पैन में ट्रांसफर कर ले तथा दूध एवं गाजर को तब तक धीमी आंच पर पकाएं जब तक हलवा गाढ़ानाहो जाए तथा पूरा दूध सोख ना ले। उसके बाद उसमें चीनी डालें एवं हलवा गाढ़ा होने तक पकाएं। तैयार हलवे में सूखे मेवे तथा इलायची पीसकर डालें एवं गरमा गरम परोसें।

वास्तु-टिप्स

वास्तुशास्त्र के अनुसार उत्तर दिशा संबंधी स्वीकार्य एवं त्याज्य निर्माण या वस्तुएं

आशीष शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

वास्तु का शाब्दिक अर्थ है निवास स्थान। इसका मूल सिद्धांत वातावरण में जल, पृथ्वी, वायु, अग्नि और आकाश तत्वों के बीच एक सामंजस्य स्थापित करने में मदद करना है। जल, पृथ्वी, वायु, अग्नि एवं आकाश इन पंच तत्वों का हमारे कार्य, स्वास्थ्य, प्रगति, शांति, भाग्य आदि जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रभाव पड़ता है।

यह विद्या भारत की प्राचीनतम विद्याओं में से एक है, जिसे आधुनिक समय के आर्किटेक्चर विज्ञान का प्राचीन एवं मूल स्वरूप माना जा सकता है तथा जिसका संबंध दिशाओं, उर्जाओं से होता है। इसके अंतर्गत दिशाओं को आधार बनाकर आस-पास मौजूद नकारात्मक ऊर्जाओं को कुछ इस तरह सकारात्मक किया जाता है कि वह मानव जीवन पर अपना प्रतिकूल प्रभाव न डाल सके। वास्तु शास्त्र में प्रत्येक दिशा का एक ग्रह एवं एक दिग्पाल होता है।

विश्व के प्रथम वास्तुविद भगवान विश्वकर्मा के अनुसार शास्त्र सम्मत निर्मित भवन विश्व को सम्पूर्ण सुख, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति कराता है। वास्तु एक प्राचीन विज्ञान है। हमारे ऋषि-मुनियों ने हमारे आस-पास की सृष्टि में व्याप्त अनिष्ट शक्तियों से हमारी रक्षा के उद्देश्य से इस विज्ञान का विकास किया।

वास्तु का उद्भव "स्थापत्य" वेद से हुआ है, जो अथर्ववेद का अंग है। इस सृष्टि के साथ-साथ मानव शरीर भी पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश तत्व से बना है। किसी भूमि की शुभ-अशुभ दशा-दिशा आदि के माध्यम से किए गए भवन निर्माण से उसमें निवास करने वाले जातक अधिक स्वस्थ एवं समृद्ध होते हैं।

भारतीय परम्परा में वास्तु का महत्व त्रेता युग से चलता आ रहा है, जब रावण ने अपनी सोने की लंका बनाने के लिए भगवान विश्वकर्मा से सहायता ली और समुद्र पर सेतु बांधने के लिए श्री राम ने वानर सेना के नल एवं नील का सहयोग लिया। महाभारत के काल में भी पांडवों के बनाए महल में वास्तुशिल्प का अद्भुत विज्ञान सम्मिलित था।

मूलतः वास्तुशास्त्र वैदिक ज्योतिष शास्त्र का ही एक अभिन्न अंग है। आज के आधुनिक युग में तो आर्किटेक्ट की पढाई में वास्तुशिल्प विज्ञान भी एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है।

सामान्यतया वास्तु विज्ञान में विश्वास करने वाले लोग कोई भी भूमि या भवन खरीदने से पहले उसकी दिशा एवं दशानुसार ही इन्हें क्रय करते हैं। इस अंक में हम, घर की

उत्तर दिशा से संबंधित कुछ नियमों की जानकारी आपके लिए लेकर आए हैं :

वास्तु के अनुसार घर की उत्तर दिशा धन के कोषाध्यक्ष कुबेर का स्थान है तथा इसके स्वामी गृह बुध होते हैं, जो बुद्धि और स्वास्थ्य के कारक माने जाते हैं। यह दिशा सकारात्मक ऊर्जा का भंडार होती है। उत्तर दिशा के घर बहुत शुभ माने जाते हैं। इस दिशा के घर में सुख-समृद्धि का वास रहता है, इसलिए घर की उत्तर दिशा में कुछ निर्माण कार्य करते समय या कुछ सामान रखते समय विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता होती है।

तो आइए जानते हैं कि उत्तर दिशा में रखने के लिए कौन सी वस्तुएं त्याज्य हैं एवं कौन सी वस्तुएं उत्तर दिशा में रखना श्रेयस्कर होगा :

1. **जूते-चप्पलें** – घर की उत्तर दिशा में भूलकर भी कभी जूते-चप्पलें रखने का स्थान नहीं बनाना चाहिए तथा घर के बाहर से आकर भी कभी जूते घर की उत्तर दिशा की ओर नहीं रखने चाहिए। इससे घर में नकारात्मकता बढ़ने लगती है तथा घर में आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ सकता है।

2. **भारी-भरकम सामान या फर्नीचर** – वास्तुशास्त्र के अनुसार घर के उत्तर में भारी-भरकम फर्नीचर नहीं रखना चाहिए। इससे घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बाधित होने लगता है एवं धन संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

3. **कूड़ेदान** – उत्तर दिशा में कूड़ेदान रखना भी वर्जित है, इससे घर की सुख-शांति एवं समृद्धि में बाधा आती है ।

4. **टूटी हुई वस्तुएं या कबाड़** – वैसे तो घर में किसी भी प्रकार की टूटी-फूटी वस्तुएं या कबाड़ नहीं होना चाहिए परन्तु विशेषत्या घर की उत्तर दिशा में टूटी-फूटी वस्तुएं नहीं रखनी चाहिए, इससे घर में कलह-क्लेश, आर्थिक तंगी, रोग आदि पर अनावश्यक व्यय आदि से परेशान रहना पड़ सकता है।

5. **शौचालय या स्नानघर** – घर की उत्तर दिशा में शौचालय या स्नानघर नहीं बनाना चाहिए, इससे घर में हमेशा पैसे की किल्लत बनी रहती है तथा दरिद्रता का वास रहता है। यदि गलती से इस दिशा में शौचालय या स्नानघर बन गए हैं तो कांच की एक कटोरी में समुद्री नमक डालकर उसे स्नानघर / शौचालय में एक कार्नर में रख देना चाहिए तथा हर 10-15 दिन बाद इसे बदलते रहना चाहिए। इससे नकारात्मक ऊर्जा के प्रवाह को कम किया जा सकता है।

6. **रसोई** – घर की उत्तर दिशा में कभी भी रसोई का निर्माण नहीं करना चाहिए।

7. **सोते समय सिर की दिशा** – वास्तुशास्त्र के अनुसार सोते समय जातक का सिर पूर्व या दक्षिण की ओर होना चाहिए तथा उत्तर की तरफ कभी भी सिर करके नहीं सोना चाहिए। पूर्व की ओर सिर करके सोने से विद्या का लाभ मिलता है एवं बौधिक क्षमताओं में वृद्धि होती है तथा दक्षिण दिशा की ओर सिर करके सोने से सुख-सम्पत्ति का लाभ होता है। उत्तर दिशा की ओर सिर करके नहीं सोना चाहिए इसके पीछे वैज्ञानिक तथ्य है कि पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति लगातार उत्तर की ओर प्रवाहित होती है और जब हम दक्षिण की ओर सिर करके सोते हैं तो यह उर्जा हमारे सिर से प्रवेश करके पैरों से बाहर निकल जाती है, जिससे सुबह जागने पर हम तरो-ताजा महसूस करते हैं।

8. **तिजोरी या धन की अलमारी** – अपने घर में तिजोरी या धन रखने वाली अलमारी वगैरह को दक्षिण दिशा की दीवार के साथ इस प्रकार से रखा जाना चाहिए कि उसका मुंह उत्तर की ओर खुले। इससे उत्तर दिशा के स्वामी भगवान कुबेर की दृष्टि सदैव आपके धन पर रहेगी एवं उसमें वृद्धि होती रहेगी।

गाँव का सम्मान : कल्पना

द्युमादित्य गोयल
वरिष्ठ प्रबंधक
आयोजना एवं विकास विभाग
मंडल कार्यालय, उदयपुर

हाल ही के समय की बात है शाम का समय हो रहा था। मैं और मेरे पिताजी घर के बाहर आँगन में बैठे हुए थे। मौसम बहुत ही सुहावना हो रहा था और भीनी-भीनी बारिश भी हो रही थी। मेरे पिताजी कुछ समय पूर्व ही बैंक सेवा से सेवानिवृत्त हुए थे। मैंने पिताजी से कहा कि पिताजी क्यों ना चाय के साथ पकौड़ों का स्वाद लिया जाए, तब पिताजी ने मुस्कुराकर अपना सर हाँ में हिला दिया। मैंने वहीं से अपनी धर्मपत्नी को आवाज दी कि सुनो सभी के लिए गरम-गरम चाय और पकौड़े बना दो। रसोईघर से आवाज आई - ठीक है मैं बनाती हूं। तभी अचानक बच्चा पार्टी (मेरे व मेरे बड़े भैया के बच्चे) भी हमारे पास आ गए और अपने दादाजी से कहने लगे कि दादाजी-दादाजी हमें कोई नई कहानी सुनाओ ना! आप हमेशा वही पुरानी कहानियाँ ही सुनाते हो। तब पिताजी खिलखिला कर हँस उठे और कहने लगे बच्चो मुझे जितनी भी कहानी आती थी वह सभी तो मैं तुम्हें सुना चुका हूं। अच्छा यह कार्य करता हूं कि आज मैं तुम्हें अपने जीवन की एक सच्ची कहानी सुनाता हूं। सभी बच्चे खुशी से झूम उठे और दादाजी के पास आकर नर्म-नर्म घास पर बैठ गए। मैं भी बहुत उत्सुक हुआ कि आज मुझे भी अपने पिताजी के जीवन की एक सच्ची कहानी सुनने को मिलेगी।

पिताजी ने कहानी सुनाना शुरू किया और कहा यह उन दिनों की बात है जब मेरी नियुक्ति ग्रामीण शाखा में हुआ करती थी। गांव में बैंक मैनेजर का पद सरपंच के बाद सबसे बड़ा माना जाता था। लोगों का मानना था कि किसी भी गांव का भला यदि किसी सरपंच के अलावा और कोई कर सकता है तो वह सिर्फ एक बैंक मैनेजर ही है। वह गाँव शहर से बहुत दूर था, इसलिए मैंने वहीं गाँव में एक घर किराए पर ले लिया था ताकि आने-जाने में मेरा समय बर्बाद ना हो। मैं गांव में अपना कार्य बहुत ही निष्ठा व ईमानदारी से करता था, इसलिए समस्त ग्रामवासी मेरा बहुत आदर करते थे और मैं भी उन्हें अपने एक परिवार की तरह ही मानता था।

उसी गांव में एक सोहन नाम का व्यक्ति रहता था जोकि गरीब होने के साथ-साथ बहुत आलसी भी था उसके परिवार में उसके अलावा उसके बूढ़े मां बाप व उसकी एक पुत्री कल्पना रहती थी। पहली तो पुत्र मोह की चाह और दूसरी पुत्री के पैदा होते ही उसकी पत्नी के निधन ने उसकी नजरों में उसकी ही पुत्री को कसूरवार बना दिया था। उसके बूढ़े मां-बाप हमेशा उसे समझाते रहते थे कि बेटा पुत्रियां घर की लक्ष्मी होती हैं, तू अपनी पुत्री को इस तरह हमेशा डांटा मत कर और वैसे भी उसके पैदा होते ही उसकी माँ की मृत्यु हो जाने में उस बेचारी की तो कोई गलती नहीं है ना। परंतु वह अपने बूढ़े मां-बाप की बातों को भी अनसुना कर देता था।

उसके बूढ़े मां-बाप की सरकार की योजना के तहत वृद्धावस्था पेंशन बंधी हुई थी। अतः वह इस पेंशन राशि का भुगतान लेने के लिए प्रतिमाह हमारी बैंक शाखा में आया करते थे। एक दिन जब वह इस पेंशन राशि को लेने के लिए बैंक शाखा में आए, तो वे मुझे कुछ परेशान से दिखे। मैं उनके पास गया और उन्हें अपने केबिन में ले आया और पूछा कि चाचा क्या बात है आज आप कुछ परेशान से दिख रहे हैं? पहले तो उन्होंने अपनी परेशानी मुझसे छुपानी चाहि, परंतु मेरे दोबारा पूछने पर उन्होंने कहा कि बेटा तुम तो जानते ही हो कि सोहन कैसा है। ना तो वह कुछ काम करता है बल्कि अपनी गरीबी का दोष अपनी पुत्री को देता रहता है। उसके इस बर्ताव से हम बहुत ही दुखी व परेशान हैं। उसे कई बार समझाने की भी कोशिश की परंतु वह हमारी बातों को नजरंदाज कर देता है। अब तुम ही बताओ बेटा हम क्या करें? मैंने कहा चाचा इसमें परेशान होने की कोई बात नहीं है, समय बहुत ही बलवान होता है। देखना एक दिन वो ही अपनी पुत्री पर बेहद नाज करेगा। चाचा बोले बेटा बस ईश्वर से यही प्रार्थना है, ऐसा कहकर वे वहां से चले गए। मैंने भी ईश्वर से उनकी प्रार्थना सुनने की गुहार लगाई।

कल्पना पढाई में बहुत ही प्रतिभावान थी। वह हर कक्षा में प्रथम आती थी और सोहन के माँ-बाप उसे उच्च-शिक्षा हेतु शहर भेजना चाहते थे, परन्तु सोहन गरीबी का बहाना बना कर इस बात को टाल देता था। चूँकि मैं उनके घर के हालात जनता था इसलिए इस मामले में मैंने कल्पना के लिए कुछ करने का

विचार बनाया। मैंने सोहन से कहा कि बिटिया की पढाई के लिए मैं शिक्षा ऋण दे देता हूँ और इस ऋण को चुकाने की चिंता भी तुम्हें नहीं करनी है। कल्पना की पढाई पूरी होने के बाद जब इसकी नौकरी लग जायेगी तब वह किश्तों में इस ऋण का भुगतान कर देगी। इस बात को सुनकर सोहन राजी हो गया और मैंने सभी दस्तावेजों की औपचारिकता पूर्ण कर कल्पना को एक शिक्षा ऋण स्वीकृत कर दिया और वह चिकित्सकीय शिक्षा के लिए शहर चली गयी।

धीरे-धीरे समय गुजरता चला गया और कल्पना की चिकित्सकीय शिक्षा भी पूर्ण हो गयी थी। कुछ समय बाद उसका प्रशिक्षण होना बाकी था ताकि वह पूर्ण रूप से चिकित्सकीय कार्य कर सके। अभी कुछ ही दिवस बीते थे कि समस्त संसार में एक महामारी ने जन्म ले लिया था। देश-विदेश में उस महामारी से चारों ओर त्राहिमाम मचने लगा। बहुत कम समय में ही इस महामारी ने बहुत अधिक लोगों को अपनी चपेट में ले लिया था। उस गाँव में चिकित्सकों की कमी के कारण लोगों का इलाज नहीं हो पा रहा था। परिणामस्वरूप बहुत से लोगों को तो अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ रहा था।

कल्पना की अभी-अभी चिकित्सकीय शिक्षा ही पूर्ण हुई थी व उसे प्रशिक्षण लेना बाकि था परंतु इस महामारी के चलते आने वाले कुछ समय के लिए समस्त प्रशिक्षण को स्थगित कर दिया गया था। अतः कल्पना भी अपने घर में ही रहने लग गई थी। इस महामारी ने उस गाँव को भी अपनी चपेट में ले लिया था व समस्त ग्रामवासी बहुत अधिक घबरा गए थे। ऐसे में कल्पना ने सोचा कि मेरी चिकित्सकीय शिक्षा तो पूर्ण हो ही गई है, क्यूँ ना मैं ही अपने गांव के लोगों की मदद करूं। चूँकि उसके पिताजी तो उसकी बात सुनते नहीं थे, अतः उसने इस बारे में मुझसे और सरपंच साहब से सलाह-मशविरा किया। तब हमने कहा कि पुत्री कार्य तो यह बहुत नेक है परंतु इसमें तुम्हारी जान को भी तो खतरा है। कल्पना बोली मैं जानती हूँ कि इसका अभी टीका नहीं मिल पाया है परंतु जिस तरीके से शहरों के अस्पतालों में इसका उपचार किया जा रहा है उसी तरह मैं भी यहां के लोगों की इलाज करके मदद कर सकती हूं। तब हमने उसे आशीर्वाद देकर कहा कि बिटिया इसमें हमारी किसी भी तरह की कोई मदद चाहिए हो तो हमें जरूर बताना। हमने उसके लिए 2 कमरों के एक अस्थायी उपचार केंद्र की व्यवस्था कर दी और उसने वहां पूरे जी-जान से लोगों की सेवा की। उसने वहाँ के लोगों को बाहर जाने व बाहरी व्यक्तियों के अनावश्यक गाँव में प्रवेश करने पर सरपंच साहब की मदद से रोक लगा दी ताकि बीमारी फैल ना सके।

कुछ माह पश्चात इस महामारी का टीका भी वैज्ञानिकों के द्वारा बना लिया गया जो कि समस्त देशवासियों को दिया गया जिससे इस महामारी का खात्मा हो गया। मुझे लगता था कि उस गाँव में सरपंच साहब के बाद मैं ही आदर के काबिल था परंतु इस महामारी ने साबित कर दिया कि ना केवल गाँवों में अपितु शहरों में भी जो व्यक्ति सबसे ज्यादा आदर के काबिल है वह सिर्फ और सिर्फ चिकित्सक ही है।

कल्पना को भी उसके पिताजी ने अपने दिल से अपना लिया था और उन्होंने उससे माफी भी मांगी कि उन्होंने उसके बचपन से लेकर अब तक उसके साथ जो भी व्यवहार किया वह गलत था। कुछ ही समय बाद कल्पना की शादी एक चिकित्सक से कर दी गई और उन्होंने उस गाँव में एक अस्पताल का निर्माण करवाया जहां उन्होंने सभी को मुफ्त इलाज उपलब्ध कराने की मुहिम की शुरुआत कर दी थी। अब उस गांव में सभी लोग खुशी-खुशी अपना जीवन व्यतीत करने लगे।

सभी बच्चों सहित मैं भी इस कहानी को सुनने में इतना ध्यानमग्न हो गया था कि हमें याद ही नहीं रहा कि कब मेरी धर्मपत्नी चाय और पकौडों को वहां रख गई थी और वे बिल्कुल ठंडे हो चुके थे। बारिश भी थम गई थी। अतः पिताजी ने कहा कि जाओ बच्चों अब तुम पढ़ाई कर लो, सभी बच्चे वहां से चले गए। परंतु मैं अभी भी कल्पना के बारे में सोच रहा था कि जिस बच्ची को अपने पिताजी का भी प्यार-दुलार नहीं मिला, उसने उन नफरतों के बावजूद अपने दिल में हमेशा प्यार को संजोए रखा और अपने जीवन में बहुत ही नेक काम किया। ये सब सोचकर मेरे अंदर भी एक सकारात्मक ऊर्जा ने जन्म ले लिया था जिसके तहत मैंने भी अपने जीवन में मौका मिलने पर कुछ नेक कार्य करने की ठानी। मैं भी चाय और पकौडों को गरम करने के लिए वहां से चला गया।

इस कहानी से हमें सीख मिलती है कि हमें अपने जीवन में बहुत सी परेशानियाँ देखनी पड़ती है परंतु हमें हमेशा सकारात्मक सोच रखनी चाहिए और हमेशा मौका मिलने पर दूसरों की मदद करने के लिए नेक कार्य हेतु तैयार रहना चाहिए। यही जीवन का मूल मंत्र है। आज भी कल्पना के द्वारा किया गया नेक कार्य मेरे मन को उर्जान्वित कर देता है।

ज्ञान प्रश्नोत्तरी

1. बैंकों में मुख्य ग्राहक सेवा अधिकारी की नियुक्ति किस समिति की सिफारिश के आधार पर की जाती है।

क. तारापोर समिति	ख. दामोदरन समिति
ग. हिल्टन यंग	घ. चक्रवर्ती समिति

2. पीएनबी वन ऐप की सीमा 2 लाख रुपये है, जिसे बढ़ाया जा सकता है?

क. 5 लाख रूपये	ख. 10 लाख रूपये
ग. 15 लाख रूपये	घ. 20 लाख रूपये

3. भारत का पहला बैंक कौन सा था?

क. जनरल बैंक ऑफ इण्डिया	ख. बैंक ऑफ हिंदुस्तान
ग. बैंक ऑफ कलकत्ता	घ. इनमें से कोई नहीं

4. किस बैंक को फरवरी 2021 में भारतीय रिजर्व बैंक ने विनियमित किया है ?

क. पंजाब एंड सिंध बैंक	ख. बैंक ऑफ महाराष्ट्र
ग. मुद्रा बैंक	घ. स्टेट बैंक ऑफ सिक्किम

5. भारतीय रिजर्व बैंक ने रियल टाइम ग्रॉस सेटलमेंट (RTGS) सिस्टम को किस वर्ष से 24 X 7 उपलब्ध किया?

क. 2019	ख. 2020
ग. 2018	घ. 2021

6. इनमें से किस बैंक की स्थापना ब्रिक्स देशों द्वारा की गई है?

क. नाबार्ड	ख. राष्ट्रीय आवास बैंक
ग. न्यू डेवलपमेंट बैंक	घ. वर्ल्ड बैंक

7. भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा संचालित वित्तीय साक्षरता सप्ताह 2021 की थीम क्या है?

क. सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम	ख. किसान और औपचारिक बैंकिंग प्रणाली
ग. औपचारिक संस्थाओं से क्रेडिट अनुशासन और क्रेडिट	घ. इनमे से कोई नहीं

8. भारत में बैंकिंग लोकपाल योजना कब से लागू हुई?

क. 22 जून 2004	ख. 01 जनवरी 2006
ग. 14 दिसम्बर 2017	घ. 31 मार्च 2013

9. वह ब्याज दर जिस पर भारतीय रिजर्व बैंक अन्य घरेलू बैंकों को कर्ज देता है?

क. रिवर्स रेपो रेट	ख. फेडरल फंड्स रेट
ग. रेपो रेट	घ. इनमें से कोई नहीं

10. अटल पेंशन योजना की आयु-अवधि क्या है?

क. 18-60 वर्ष	ख. 18-45 वर्ष
ग. 18-65 वर्ष	घ. 18-40 वर्ष

11. प्रधानमंत्री जीवन ज्योति योजना का वार्षिक प्रीमियम कितना है?

क. रु. 321	ख. रु. 331
ग. रु. 330	घ. रु. 338

12. 'पढ़ो परदेश' योजना से आप क्या समझते हैं?

क. यह योजना विदेश में उच्च शिक्षा के अध्ययन हेतु है।	ख. यह अल्पसंख्यक समुदायों के मेधावी विद्यार्थियों हेतु छात्रवृत्ति योजना है।
ग. इस योजना के अंतर्गत माता-पिता की आय प्रति वर्ष 6 लाख रूपये से अधिक नहीं होनी चाहिए।	घ. उपरोक्त सभी

13. भारत में सबसे अधिक बार बजट पेश करने वाले वित्त मंत्री कौन थे?

क. मनमोहन सिंह	ख. प्रणव मुखर्जी
ग. इंदिरा गांधी	घ. मोरारजी देसाई

14. वित्त आयोग अपनी रिपोर्ट किसे सौंपता है?

क. लोकसभा अध्यक्ष	ख. राज्य सभा अध्यक्ष
ग. प्रधानमंत्री	घ. राष्ट्रपति

15. निम्न में कौन राजकोषीय नीति तैयार करता है?

क. वित्त मंत्रालय	ख. केंद्र सरकार
ग. भारतीय रिजर्व बैंक	घ. इनमें से कोई नहीं

16. फीफा के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी 2019 का पुरस्कार किसे मिला है?

क. नेमार	ख. लियोनल मेसी
ग. लुका मोर्डिक	घ. क्रिस्टियानो रोनाल्डो

17. राजभाषा नियम 1976 के नियम 5 के अनुसार हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर अनिवार्यतः किस भाषा में दिया जाएगा?

क. क्षेत्रीय भाषा में	ख. अंग्रेजी में
ग. हिंदी में तथा क्षेत्र 'ग' में क्षेत्रीय भाषा में	घ. इनमें से कोई नहीं

18. अमेरिका के राष्ट्रपति जोसेफ रॉबिनेट बाइडेन का संबंध किस पार्टी से है?

क. डेमोक्रेटिक पार्टी	ख. रिपब्लिकन पार्टी
ग. साम्यवादी पार्टी	घ. इनमें से कोई नहीं

19. अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह किस भाषा वर्ग में आता है?

क. 'ख' भाषा वर्ग	ख. 'ग' भाषा वर्ग
ग. 'क' भाषा वर्ग	घ. इनमें से कोई नहीं

20. पहला विश्व हिंदी सम्मेलन कब और कहा आयोजित किया गया?

क. 10 जनवरी, 1975 को महाराष्ट्र के नासिक में	ख. 10 जनवरी, 1975 को महाराष्ट्र के नागपुर में
ग. 10 मार्च, 1975 को महाराष्ट्र के मुंबई में	घ. 10 फरवरी, 1975 को महाराष्ट्र के पुणे में

(उत्तर इसी अंक में पृष्ठ 107 पर दिए गए है।)

अजेश
प्रबंधक-राजभाषा
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

एक अनूठा भारत भ्रमण

तरुण चंद
अधिकारी
मंडल कार्यालय, मुजफ्फरपुर

ईंट-पत्थर से बनी एक बैंक शाखा से हम पूरे देश की आर्थिक स्थिति को नहीं समझ सकते। बैंक में बैठ कर कुछ ग्राहकों के खाते में लेन-देन कर हम अपने कर्तव्य से मुक्त नहीं हो जाते। सोचता हूँ कि आखिर देश में सरकार द्वारा चलाई गयी इतनी कल्याणकारी योजनाओं के बावजूद समतामूलक विकास क्यों नहीं हो पा रहा हैं? समझ नहीं आता कि क्यों गरीबों का आर्थिक सशक्तिकरण नहीं हो पा रहा है, क्यों वो सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ नहीं उठा पा रहे हैं?

हमारे भारतीय गांव के किसान, मुख्यतः लघु एवं सीमांत किसान जो अत्यधिक गरीब हैं, अनपढ़ हैं, उन्हें सरकार द्वारा बैंकों के माध्यम से प्रदान की जाने वाली वित्तीय सेवाओं के बारे में कुछ जानकारी नहीं है। वो गरीबी में पैदा होते हैं, गरीबी में जीते हैं, और गरीबी की विरासत अपने बच्चों को सौंपकर इस संसार से विदा हो जाते हैं।

जरूरत है कि हम विश्लेषण करें कि क्यों भारतीय जनसंख्या का एक बड़ा भाग गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहा है। भारत के विभिन्न इलाकों के किसानों, मजदूरों, एवं उपेक्षित वर्गों के लोगों से संवाद करें और जानें कि स्वतंत्रता के इतने दशकों बाद भी उनके जीवन स्तर में बढ़ोतरी क्यों नहीं हो पाई।

इस आर्थिक असमानता की वजहों को तलाशने के लिए, समतामूलक विकास के लिए, कुछ सीखने के लिए, अपने जीवन को एक मकसद देने के लिए और विकसित भारत के स्वप्न को अमलीजामा पहनाने के लिए गया था, एक अनोखी 15 दिन लम्बी राष्ट्रीय यात्रा पर, जो पूरे भारत में 8000 किलो मीटर की दूरी तय कर यात्रियों को उन अनुकरणीय व्यक्तियों से मिलवाती हैं, जो अपने स्व उद्यम से भारत का निर्माण करने में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं और देश के सुदृढ़ निर्माण हेतु विभिन्न मुद्दों पर चिंतन अनुचिंतन करने का मंच प्रदान कर रहे हैं ।

इस यात्रा संस्मरण के माध्यम से मैं आपका परिचय करवाऊंगा देश के विभिन्न कोनों के बेहतरीन लोगों से और साझा करूँगा उनकी सुनी-अनसुनी कहानियां। कन्याकुमारी से लेकर दिल्ली और अहमदाबाद से लेकर भुवनेश्वर तक पूरे यात्रा वृतांत के साथ।

"चेहरे पे विजयी मुस्कान लिए,
राष्ट्रसेवा का अरमान लिए,

दृढ, गंभीर, उद्यमी तरुण दल,
जो है एकाग्र और संकल्पित हर पल,
निकल पड़ा एक अद्भभुत यात्रा पे,
पाटने संपूर्ण भारत का जल-थल।

मिलवाऊंगा अनोखे संस्थानों से,
कुछ होनहार बिरवानो से,
चिंतन-मनन की भावना लिए,
नव सृजन के कोपल अरमानों से,
सारे नभ को नाप ले जो,
उन प्रतिबद्ध उड़ानों से।
देखेंगे हम,
दो तस्वीर,
एक है विकसित
एक विकासशील,
पढ़े हैं मैंने अनेक शहर,
बहुत गाँवों को भी भांपा है,
हजारों किलोमीटर का ये सफर,
नई उम्मीदों से नापा है।"

1. मानतीय सहायता और सामुदायिक तिकास का कार्य करती एक संस्था – "गूँज"

स्थान : सरिता तिहार – नई दिल्ली

"श्वानों को मिलता दूध-वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते हैं,
मां की हड्डी से चिपक, ठिठुर जाड़ों की रात बिताते हैं।"

जी साहब! कभी निकलिए कम्बलों की गर्मी से और घूम आइये किसी रेलवे स्टेशन, बस अड्डे या फुटपाथ पे, आप कुछ लोगों को बेबस पाएंगे। अपने हाथों को पैरों के बीच छुपाए वो कुंडली मार के सोए मिलेंगे आपको किसी कोने में, ठिठुरते हुए। किसी प्राकृतिक आपदा से ज्यादा लोग मारे जाते हैं हर साल इस ठंड के प्रकोप से, वजह बस इतनी कि ओढ़ने ढ़कने को कपड़े नहीं होते इनके पास।

बात बस इतनी कि केवल रोटी ही जरूरी नहीं, एक जरूरत कपड़ा भी है, जो अक्सर हम नजर अंदाज कर जाते हैं।

आइए मिलते है एक ऐसी संस्था से जिसने रुपए के समानांतर कपड़ों की एक अर्थव्यवस्था बना दी। जिसने हमारे छोड़े गए कपड़ों से गाँव का विकास किया। जिसने पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे मसलों को सुलझाने का एक नया रास्ता निकाला। यह संस्थान है "गूँज"।

बड़े शहरों में अब चलन है कि लोग जल्द ही अपने कपड़ों से ऊबने लगते हैं। जाहिर है बाजार की संस्कृति ने उनके मन मस्तिष्क पर गहरा असर किया है। ऐसे में लोग अकसर अपने पुराने कपड़ों को बेकार समझकर फेंक देते हैं लेकिन क्या आप जानते हैं कि आपके बेकार पड़े हुए कपड़े किसी जरूरतमंद के काम आ सकते है या आपके बेकार पड़े कपड़े गांव देहातों की तरक्की का कारण भी बन सकते हैं? हैरान हो गए ना? लेकिन ये सच है। 'गूंज' नाम की संस्था ने ऐसा कर दिखाया है। उन्होंने पुराने कपड़ों को न सिर्फ गरीब जरूरतमंदो तक पहुंचाया बल्कि इनके जरिए ग्रामीण क्षेत्रों में तरक्की का एक नया मॉडल भी पेश किया है। गूंज के प्रयासों से भारत के कई गांवों में सकारात्मक बदलाव देखने को मिले हैं और इस सबका श्रेय जाता है गूंज के संस्थापक अंशु गुप्ता को।

पूरे भारत के परिवारों से छोड़ दिये गए कपड़े, किताब, और अनेक अन्य वस्तुए इकट्ठी की जाती हैं, उन्हें अलग-अलग छांट कर उनसे नई नई चीजें बना दी जाती हैं जैसे सुजनी, गद्दा, झोला, ठंड के कपड़े, स्कूल का बस्ता और बहुत कुछ। जिस गाँव को इसकी जरूरत होती है गूंज की टीम इन चीजों के साथ वहां जाती है और ग्रामीणों के साथ बुनियादी जरूरतों पर काम करती है जैसे सड़क निर्माण, तालाब, कुआं या जलाशय की सफाई, नए पानी के स्रोत का निर्माण, विद्यालय का जीर्णोद्धार और इसके बदले ये कपड़े और अन्य जरूरी सामान उन्हें पुरस्कार के रूप में दिए जाते हैं। है न कमाल काम के बदले पैसे नहीं, जरूरी सामान। संस्थापक, अंशु गुप्ता ने बताया कि बहुत से गाँवों में मनरेगा से ज्यादा काम गूंज कर रही है। उत्तराखंड हो या केरल, जरूरत होने पर गूँज की टीम पहुंच जाती है अपने प्रतिबद्ध हौसलों के साथ।

विचार कीजियेगा, लिखने को बहुत कुछ है, ज्यादा जानकारी के लिए आप www.goonj.org पे विजिट कर सकते हैं।

2. आदिवासी जनजातियों को मुख्यधारा से जोड़ती संस्था – "ग्राम विकास"

स्थानः बेहरामपुर, जिलाः गंजम, ओडिशा

भारत की कुल आबादी का लगभग 8.6 प्रतिशत आदिवासी जनजातियां हैं। और उनके लिए बजट का केवल एक प्रतिशत आवंटित होता हैं। फिर कैसे हो विकास ?

मेरी समझ से राष्ट्र तभी विकसित हो पाता है जब राष्ट्र का हर एक नागरिक खुद को राष्ट्रगाथा का हिस्सा समझे। अपने को अलग नहीं वरन समाज का हिस्सा समझे। क्या ये जनजातियाँ खुद को भारतीय समझती हैं? क्या उन्हें आधारभूत सुविधा मिल पाती है?

आइए मिलवाता हूँ एक संस्थान से जिसने आदिवासी समुदाय को, उनके गांव को उन्नत बनाया। एक समतामूलक और टिकाऊ समाज का निर्माण किया,जहां मुख्य समाज से कभी कटे रहें, ये प्यारे आदिवासी लोग शान से रहते हैं। पेयजल, स्वास्थ्य, स्वच्छता और शिक्षा के सभी स्तंभों पर बेजोड़ कार्य कर देश के समक्ष मिसाल पेश की। यह संस्था है "ग्राम विकास"।

1970 में अपनी स्थापना के बाद, ग्राम विकास ने शिक्षा और जागरूकता पर ध्यान केंद्रित करना शुरू किया और आय के सुरक्षित स्रोत को खोजने और आदिवासी समुदायों के स्वास्थ्य और जीवन की स्थिति में सुधार हेतु अहर्निश कार्य करने लगे। ग्राम विकास के इतिहास और जनजातीय लोगों के जीवन में गिरवी भूमि को पुनः प्राप्त करने का अभियान एक बड़ा कदम था। इन क्षेत्रों में हस्तक्षेपों के अलावा, इस संस्थान ने सामुदायिक वानिकी के लिए एक अभियान शुरू किया, जिससे लोगों को सभी निजी और आम बंजर भूमि पर ईंधन, चारा, फल और लकड़ी की प्रजातियों को लगाने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

गंजम जिला में एक गाँव है कनकिया। वहां पर एक बेहतरीन आवासीय विद्यालय संचालित करती है ये संस्था। जब हम वहां गए तो आदिवासी समुदाय के कक्षा चार के एक प्यारे बच्चे ने हमारा स्वागत किया, एक बेहतरीन भाषण से। फिर हम देखने गए उनका इनोवेशन सेल, और देखी उनकी कल्पना की उड़ान, उनकी पेंटिंग्स, और बहुत कुछ। उस विद्यालय में वेटलिफ्टिंग खेल को बढ़ावा देने के लिए एक अलग कक्ष भी है। हमें बताया गया कि पास के सभी गांवों के बच्चे कक्षा 1 से 10 तक यहां पढ़ाई करते हैं। विद्यालय परिसर में लगे हैंडपम्प के पास सबसे ज्यादा कचरा इकट्ठा हो जाता है, इस संस्था ने उसको साफ करके विद्यालय का अपना एक किचन गार्डन बना दिया और उस हैंडपम्प के बेकार पानी को उसके लिए प्रयोग कर कुछ दिनों में ही मिड डे मील के लिए ताजी हरी सब्जी भी उगा रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में इस विद्यालय ने एक अनोखी और सराहनीय पहल की है।

फिर हम घूमने गए उनके गांव में। साथ के कुछ विदेशी मित्रों ने पहली बार गाँव देखा था, वो हतप्रभ थे। वहां के बच्चे काफी खुश थे जैसे हमारा ही इंतजार कर रहें हो।

मैं सोच रहा था कि ये आदिवासी जनजातियाँ जो वर्षों तक मुख्यधारा से कटी रही जब इतनी स्वच्छता से रहती हैं तो हमारे बिहार के गाँव क्यों नहीं?

अपनी बैंक शाखाओं को जहां हम दिन का अधिकतर समय बिताते हैं उसे साफ सुथरा रखें। सभी पंचायतों के मुखिया, वार्ड सदस्य, प्रमुखों से बात कर कभी क्षेत्रीय समस्याओं पर चर्चा कर अपनी बात रखें और सहयोग दें। हम बैंकर्स अपनी शाखाओं से एक नई पहल कर सकते हैं। माना हमारी सैलरी कम है और हम कार्य के बोझ से दबे हैं पर हमारा दिल बहुत बड़ा है और यह मैं दावे से कह सकता हूँ।

सोचिएगा शायद नए वर्ष में हम खुद को, अपनी शाखा को, अपनी पंचायत को, अपने प्रखंड को, अपने जिले को, अपने राज्य और अपने देश को उन्नत बना सकें।

3. भगवान की अपनी रसोई – "अक्षयपात्र"

स्थानः विशाखापट्टनम– आंध्रप्रदेश

आइये रूबरू करवाते हैं आपको विश्व के सबसे बड़े गैर सरकारी संस्थान (NGO) से जिसे भगवान की रसोई, God's own kitchen भी कहते है। जी हां, अक्षयपात्र फाउंडेशन।

पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है अक्षयपात्र फाउंडेशन। भारत के 12 राज्य, 44 जगहों, में फैले अक्षयपात्र कुल 15,000 विद्यालयों में 17 लाख बच्चों को रोज मिड डे मील मुहैया करवाते हैं और खाना इतना स्वादिष्ट और पौष्टिकता से भरा हुआ कि बच्चे विद्यालय आने को बाध्य हो जाते हैं। संचालक ने बताया कि उनका मुख्य उद्देश्य बच्चों के चेहरे पर मुस्कान लाना है और उन्हें स्वस्थ और सेहतमंद बना कर अध्ययन हेतु प्रेरित करते रहना है।

सुबह से ही अनेकों कर्मचारी अपने मुंह पे मास्क लगा कर, बालों में हैडनेट और बदन में एप्रन पहन कर लग जाते है खाना बनाने में। रोज नई मेन्यू, यानी बदलाव, बच्चों में ये उत्सुकता रहती है कि आज खाने में क्या आएगा। 20 मिनट में 400 किलो चावल तैयार। 60 मिनट में 40 हजार रोटियां तैयार। है ना कमाल। और तो और उन्हें विद्यालय तक पहुंचाने के लिए स्पेशल ट्रंक्स, जो खाने को अच्छे से गरम रखते हुए पहुंचा देते हैं देश के भविष्य के पास।

हमें भी रसोई दिखाने से पहले मुँह का मास्क और हैडनेट पहनाया गया। हमने देखा कि सब कुछ बनाने की मशीनों लगी हैं। इडली का मिक्स तैयार करने के लिए। सांभर बनाने के लिए। कमाल का इंफ्रास्ट्रक्चर।

अगर आप किसी एक बच्चे के वार्षिक खाने हेतु योगदान देना चाहते हैं तो योगदान की राशि है मात्रा 1100/-रुपये। जी हां, 1100 रुपये में आप एक बच्चे को पूरे साल खाने के लिए योगदान कर सकते हैं। मैंने भी योगदान किया, गुजरते साल में जाते जाते ये एक बेहतरीन काम था।

हमारे बिहार में स्थिति कितनी भिन्न है ना। बच्चे केवल खाने के लिए विद्यालय जाते हैं। और खाना भी पौष्टिक और मानकों के अनुकूल नहीं। कुछ अपवाद अवश्य हो सकते हैं, पर याद रहे हम निरक्षरता में शीर्ष राज्यों में से एक हैं। छपरा, मशरक के 23 मृत्यु अभी भी याद हैं।

शायद बिहार सरकार भी अक्षयपात्र को मिड डे मील को प्रभावी तरीके से परिचालित करने के लिए नियुक्त करें। ताकि बच्चे भोजन के लिए ही सही विद्यालय आएं और सेहतमंद भी बने रहें।

4. निःशुल्क वैदिक गुरुकुल – "कलकेरी संगीत विद्यालय"

स्थानः धारवार, कर्नाटक

एक ऐसा विद्यालय जिसकी रूह में संगीत बसा है। जहाँ गुरु शिष्य परंपरा अभी भी जीवंत है। जहाँ कोई गृहकार्य नहीं, कोई परीक्षा नहीं, कोई डाँट फटकार नहीं और कोई मोटी फीस नहीं, जी हां सब बिल्कुल निःशुल्क। स्वागत है आपका कलकेरी संगीत विद्यालय में।

कर्नाटक के धारवाड़ जिले में स्थित तीन खूबसूरत झीलों से घिरे इस साढ़े तीन एकड़ क्षेत्र में फैले संगीत विद्यालय में 250 से अधिक छात्र पढ़ाई करते हैं। तीन एकड़ भूमि में फैला यह संस्थान ठोस कक्षाओं, अलमारी, बेंच और डेस्क के साथ उन औपचारिक विद्यालयों की तरह नहीं है। कक्षाएँ छोटी-छोटी झोपड़ियों के अंदर हैं, जिनमें कीचड़ से ढकी दीवारें और लाल टाइलों और बांस की लकड़ियों से बने दरवाजों के साथ एक छत बिछी हुई है। बच्चे अपने पाठ के लिए फर्श पर बैठते हैं। इन कक्षाओं की खासियत यह है कि इन्हें भारतीय नदियों के नाम पर रखा गया है - कावेरी, गंगा, यमुना। संगीतमय माहौल वाले इस विद्यालय के कॉटेज का नाम भी विभिन्न रागों के नाम पर हैं, मसलन असवरी, भैरवी, खमाई, थोडी आदि। इस आवासीय विद्यालय में दाखिला लेने के लिए पहली योग्यता छात्र का ग्रामीण पृष्टभूमि से होना है।

यहां पर छात्रों को भोजन और शिक्षा मुफ्त में दी जाती है।

यहां दिन की शुरुआत योग और व्यायाम से होती है। जलपान के बाद पहली घंटी संगीत की होती है। इसके बाद एकेडमिक विषयों की पढ़ाई होती है। संगीत के माध्यम से यहां के छात्र भारत की संगीत विरासत को सहेजने में अपना योगदान देते हैं।

कलकेरी संगीत विद्यालय की स्थापना नवंबर 2002 में कनाडा के मैथ्यू फोर्टिर ने की। जिस भारतीय परंपरा, संगीत, नृत्यशैली को हमने सहेजना, संवारना था उसे संभाला मैथ्यू ने। हिंदी, बंगाली, कन्नड भाषाओं के जानकार और भारतीय शास्त्रीय संगीत और हठयोग में दक्ष मैथ्यू ने परंपरा और आधुनिकता का अद्भुत समन्वय किया है इस विद्यालय में। पूरे भारत से 6 से 23 साल के विद्यार्थी यहां हिंदूस्तानी एवं कर्नाटक संगीत, भरतनाट्यम और कथक जैसे नृत्य और वादन यंत्र जैसे सितार वीणा, बांसुरी, तबला, हारमोनियम बजाना भी सीखते हैं साथ ही कर्नाटक स्टेट क्लूरिकुलम के अंतर्गत पढ़ाई भी जारी रखते हैं।

220 छात्र, 75 स्टाफ और 15 वालंटियर के साथ चल रही इस संस्था का प्रतिदिन खर्च 41 हजार रुपये हैं, सालाना 1.5 करोड़ के करीब। विद्यालय के अंदर जाने पर लगता जैसे आप वैदिक काल में आ गए हों। अद्भुत एवं सराहनीय प्रयास।

पारंपरिक उत्सव-लॉसोंग

अंजलि सिंह
प्रबंधक-राजभाषा
प्रधान कार्यालय
नई दिल्ली

हमारा देश अनेकता में एकता का अद्भुत संगम है। हर धर्म, जाति अथवा संप्रदाय की अपनी एक सांस्कृतिक विरासत है, जो भिन्न-भिन्न त्योहारों और उत्सवों के माध्यम से प्रकट होती है। देश की एकता, समृद्धि तथा पारस्परिक मेल-मिलाप को बनाए रखने में इनका अभूतपूर्व योगदान होता है।

पूर्वोत्तर भारत का सबसे कम आबादी वाला राज्य सिक्किम प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग है। कभी यह नामग्याल राजतंत्र द्वारा शासित स्वतंत्र राज्य हुआ करता था परंतु वर्ष 1975 में भारत में इसका विलय हो जाने के पश्चात् यह भारत का हिस्सा बन गया। सांस्कृतिक रूप से यह अत्यंत समृद्ध राज्य है। वर्ष भर यहाँ कई त्योहार, उत्सव जैसे - द्रुक्प्रेसी, पांग लुबसोल, सागा दावा, लॉसोंग और दासैन व्यापक रूप से मनाए जाते हैं ।

लॉसोंग त्योहार तिब्बती लूनर कैलेंडर के अनुसार साल के 10वें माह अर्थात् अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार दिसंबर माह में मनाया जाता है। यह भूटिया और लेपचा जनजाति का पारंपरिक त्योहार है, यह ऐसा समय होता है जब किसान अपनी फसलों की कटाई का जश्न मनाते हैं। यह पूर्वोत्तर भारत में मनाए जाने वाले महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। साल भर कड़ी मेहनत करने वाले किसान बड़े उमंग और उत्साह से यह त्योहार मनाते हैं, जो चार दिनों तक चलता है। इस दिन स्त्री, पुरुष, बच्चे सभी पारंपरिक वेशभूषा धारण करते हैं।

पुजारियों द्वारा देवताओं को 'ची-फुत' अर्पित करने के पश्चात् उत्सव का आरंभ होता है। 'ची-फुत' सिक्किम का मशहूर पारंपरिक पेय है। इस धार्मिक अनुष्ठान के बाद एक प्रतीकात्मक दानव राजा का पुतला दहन किया जाता है जो बुराई के विनाश का प्रतीक होता है। इस अवसर पर लोकनृत्य, लोकगीत और कई प्रकार की स्थानीय प्रतियोगिताओं जैसे तीरंदाजी आदि का आयोजन किया जाता है। त्सू ला खांग, फोडोंग तथा रूमटेक मठ में प्रस्तुत किया जाने वाला चैम लोकनृत्य इस उत्सव के आकर्षण का मुख्य केंद्र बिंदू होता है। इसमें भाग लेने वाले पुरुष भारी पारंपरिक परिधानों के साथ बड़े मुखौटे पहनते हैं, जो अत्यंत मनमोहक होता है। नृत्य के माध्यम से बौद्धाचार्य (गुरु रिन्पोछे) 'पद्मसंभव' के जीवन के किस्सों का बयान किया जाता है। 'पद्मसंभव' ने तिब्बत और भूटान में बौद्ध धर्म के वज्रयान संप्रदाय का प्रचार-प्रसार किया। इन्हें दूसरा 'बुद्ध' माना जाता है। तिब्बत में पहला बौद्ध मठ स्थापित करने का श्रेय भी इन्हें दिया जाता है ।

पर्यटकों के लिए यह उत्सव निश्चित रूप से सिक्किमी संस्कृति को निकट से जानने और समझने का एक शानदार अवसर होता है। बर्फीले पहाड़ों की गोद में बैठकर इस उत्सव को देखने का अनुभव अद्भुत होता है ।

पहाड़ों की रानी - शिमला

हिमाचल प्रदेश की राजधानी तथा सबसे बड़ा नगर शिमला एक बेहद खूबसूरत स्थान है। शिमला को पहाड़ों की रानी के नाम से जाना जाता है। यह राज्य प्रमुख वाणिज्यिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक केंद्र है । यह एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। हिमालय के घने जंगलों में स्थित इस क्षेत्र की जलवायु, परिस्थितियों ने शहर की स्थापना के लिए अंग्रेजों को आकर्षित किया। ग्रीष्मकालीन राजधानी के रूप में राजनैतिक बैठकों की मेजबानी की। शिमला में अनेकों इमारतें स्थित हैं, जिनमें औपनिवेशिक युग के समय की ट्यूडरबेटन और नव-गृथिक वास्तुकला के साथ-साथ कई मंदिर और चर्च शामिल है। ये ब्रिटिशकालीन इमारतें तथा चर्च और शहर का प्राकृतिक वातावरण बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करता है। शहर के प्रमुख आकर्षणों में वायसराय लॉज, क्राईस्ट चर्च, जाखू मंदिर, माल रोड और रिज शामिल हैं। यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल के रूप में घोषित ब्रिटिश निर्मित कालका-शिमला रेलवे लाइन भी एक प्रमुख पर्यटन आकर्षण है। वर्तमान शिमला नगर जहाँ स्थित है, वह तथा उसके आस-पास का अधिकांश क्षेत्र 18वीं शताब्दी के अंत तक घने वनों से भरा हुआ था। पूरे क्षेत्र में बसावट के नाम पर केवल जाखू मंदिर तथा इसके इर्द-गिर्द स्थित कुछ बिखरे घर ही थे। श्यामला देवी जिन्हें देवी काली का अवतार माना जाता है, के नाम पर ही इस क्षेत्र का नाम शिमला रखा गया था। शिमला लगभग 267 फीट की ऊँचाई पर स्थित है और यह अर्थ-चक्र आकार में बसा हुआ है। जहाँ पूरे वर्ष ठंडी हवाएं बहने का वरदान है। शिमला घाटी से महान हिमालय पर्वतों की चोटियाँ चारों ओर दिखाई देती है। शिमला के कुछ पर्यटन स्थल :-

1. **रिज** :- शहर के मध्य में एक बड़ा और खुला स्थान जहाँ से पर्वत श्रृंखलाओं का सुंदर दृश्य देखा जा सकता है। यह शिमला की पहचान बन चुका है। न्यू गृथिक वास्तुकला का उदाहरण क्राईस्ट चर्च और न्यू-ट्यूडर पुस्तकालय का भवन दर्शनीय है।

2. **माल** :- शिमला का मुख्य बाजार मॉल जहाँ शॉपिंग से लेकर बड़े-बड़े रेस्तरां में आप स्वादिष्ट पकवानों का स्वाद ले सकते हैं। मॉल के समीप स्थित लक्कड़ बाजार है, जो लकड़ी की बनी वस्तुओं और स्मृति चिन्हों के लिए प्रसिद्ध है।

3. **काली बाड़ी मंदिर** :- यह मंदिर स्केंडल पॉईंट से जनरल पोस्ट ऑफिस की ओर कुछ गज की दूरी पर स्थित है। माना जाता है कि, यहाँ श्यामला देवी की मूर्ति स्थापित है।

4. **जाखू मंदिर** :- (2.5 किमी.) शिमला की सबसे ऊँची चोटी से शहर का सुंदर नजारा देखा जा सकता है। यहाँ भगवान हनुमान का प्राचीन मंदिर है। रिज पर बने चर्च के पास

से पैदल मार्ग के अलावा मंदिर तक जाने के लिए टैक्सी द्वारा भी पहुंचा जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि इस स्थान पर हनुमान जी ने लक्ष्मण जी के लिए जड़ी-बूटियों का पर्वत ले जाते समय विश्राम किया था। इसलिए भी यह मंदिर प्रसिद्ध है।

5. **समरहिल** :- शिमला कालका रेलमार्ग पर एक सुंदर स्थान है। यहाँ के शांत वातावरण में पेड़ों से घिरे रास्ते है। अपनी शिमला यात्रा के दौरान राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी राजकुमारी अमृत कौर के शानदार जार्जियन हाउस में रुके थे। यहाँ हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय है।

6. **चेडविक जल प्रपात** :- घने जंगलों से घिरा यह स्थान समरहिल चौक से लगभग 45 मिनट की पैदल दूरी पर है।

7. **संकटमोचन** :- शिमला कालका सड़क मार्ग पर भगवान हनुमान का प्रसिद्ध मंदिर है। यहाँ से शिमला शहर का सुंदर दृश्य दिखाई देता है।

8. **तारा देवी** :- तारादेवी शिमला कालका मार्ग पर स्थित एक पवित्र स्थल है। जहाँ पर श्रद्धालु रेल, कार, टैक्सी, बस द्वारा असानी से पहुँच सकते है।

9. **इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडी** :- शिमला की खुबसूरत घाटी में बसा यह एक शोध संस्थान है, जो

1964 में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा स्थापित किया गया था। यहाँ पर शिमला पेक्ट हस्ताक्षर हुआ था वह टेबल अभी भी यही पर सुरक्षित रखी गयी है।

शिमला एक बेहद खूबसूरत जगह है। गर्मी हो या सर्दी हर ऋतु में इसकी अनोखी छटा मंत्रमुग्ध कर देने वाली होती है। देश-विदेश से हर वर्ष हजारों पर्यटक शिमला की खुबसूरती व मौसम का आनंद लेने आते हैं। गर्मियों की हरियाली हो या सर्दियों में बर्फ के सफेद चादर से ढकी खुबसूरत वादियाँ अपनी आकर्षक सौन्दर्य से हर किसी का मन मोह लेती हैं।

चेतन शर्मा
अधिकारी
एचआरडी विभाग
मंडल कार्यालय, शिमला

बैंकिंग अपडेट

हरिश्चन्द्र राम
प्रबन्धक-राजभाषा
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

- भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति में 6 सदस्य होते हैं। इसमें तीन भारतीय रिजर्व बैंक के अधिकारी एवं अन्य तीन बाहरी सदस्य होते हैं जिन्हें भारत सरकार द्वारा नामित किया जाता है।

- भारतीय रिजर्व बैंक की तरफ से तीन सदस्त डॉ मृदुल के सग्गर, डॉ माइकल देवव्रत पात्रा और श्री शशिकांत दास हैं।

- भारतीय रिजर्व बैंक का गवर्नर मौद्रिक नीति समिति का पदेन अध्यक्ष होता है।

- भारतीय रिजर्व बैंक अपने मल्टीमीडिया जन जागरूकता "आरबीआई कहता है" के प्रभाग का आंकलन करने का निर्णय लिया है, जिसे सुरक्षित बैंकिंग और वित्तीय प्रयासों के बारे में जनता को शिक्षित करने के लिए 14 भाषाओं में लांच किया गया है। इस अभियान के अंतर्गत एसबीबीडीए, सुरक्षित डिजिटल बैंकिंग प्रयासों, वरिष्ठ नागरिकों के लिए बैंकिंग सुविधाएं, बैंकिंग लोकपाल योजना और साइबर सुरक्षा सहित अन्य पर सन्देश लांच किए गए हैं।

- निजी ऋण दाता आईसीआईसीआई बैंक ने अपने मिलेनियम ग्राहकों (18 वर्ष से 35 वर्ष के आयु वर्ग) के लिए आईसीआईसीसी माइन नामक एक बैंकिग कार्यक्रम शुरू किया गया है। बैंक द्वारा लांच किया गया यह उत्पाद भारत का पहला और एक विशिष्ट उत्पाद है। इससे बैंक अपने पुराने ग्राहकों को अत्यधिक व्यक्तिगत और अनुभवात्मक अनुभव प्रदान कर सकेगा।

- एनपीसीआई ने मैसेजिंग प्लेटफार्म व्हाटसएप को देश में अपनी पेमेंट सेवाओं को श्रेणीबद्ध तरीके से लांच करने की अनुमति दे दी है।

- इक्विटास स्माल फाइनेंस बैंक ने महिलाओं को ध्यान में रखते हुए एक नया उत्पाद Eva लांच किया है। बैंक ने भारतीय महिला क्रिकेटर स्मृति मन्धाना को इस उत्पाद का ब्राण्ड अम्बेसडर बनाया है। यह एक बचत खाता है।

- भारतीय रिजर्व बैंक ने कोविड संकट के कारण बेसल III पूंजी के अंतर्गत किए गए प्रावधानों को लागू करने को स्थगित कर दिया है।

- आईसीआईसीआई बैंक ने विदेशी कम्पनियों को भारत में व्यापार स्थापित तथा विस्तार करने के लिए Infinite India नामक एक ऑनलाइन प्लेटफार्म लांच किया है।

- भारतीय रिजर्व बैंक ने संकटग्रस्त पंजाब और महाराष्ट्र को-ऑपरेटिव बैंक (PMC) पर लगाए गए प्रतिबन्धों को 31 मार्च 2021 तक तीन महीने के लिए बढा दिया है।

- भारतीय रिजर्व बैंक ने केरल स्थित द अर्बन को-आपरेटिव लिमिटेड पर 50 लाख रूपए का मौद्रिक जुर्माना लगाया है। यह जुर्माना आय पहचान और सम्पत्ति वर्गीकरण नियमों तथा कर्ज के प्रबन्धन के मामले में निर्देशों का पालन न करने को लेकर लगाया गया है।

- निजी क्षेत्र के बैंक आईसीआईसीआई बैंक ने सभी बैंक के ग्राहकों को भुगतान और बैंकिंग सेवाए प्रदान करने के लिए iMobile Pay नामक अपने मोबाइल भुगतान ऐप का नया वर्जन लांच किया है। ऐप का नया वर्जन इंटर ऑपरेबल है, और अब उन ग्राहकों को भी भुगतान और अन्य बैंकिंग सेवाओं में सक्षम बनाएगा जो आईसीआईसीआई बैंक खाता धारक नहीं हैं।

- भारतीय रिजर्व बैंक ने मुद्रा नोटों की प्राप्ति, भंडारण और भेजने के लिए जयपुर में एक स्वचालित बैंक प्रसंस्करण केन्द्र स्थापित करने का निर्णय लिया है।

- केनरा बैंक ने सभी इंटरनेट बैंकिंग उपयोगकर्ताओं को फोरेक्स ट्रांजेक्शन की समस्या से निपटने में सक्षम बनाने के लिए FX4U लांच किया है।

- राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा दिनांक 01 दिसम्बर, 2020 से 28 फरवरी, 2021 के दौरान स्मृति आधारित अनुवाद टूल "कंठस्थ" के माध्यम से प्रतियोगिता का आयोजन केवल राष्ट्रीयकृत बैंकों के लिए किया जा रहा है। जिसमें 2000 टीएम जोडने वाले प्रतिभागियों को ही इस प्रतियोगिता के लिए पात्र माना जाएगा।

- इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक ने अपने ग्राहकों के लिए कम लागत वाली बीमा योजना प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना लागू की है।

- निजी क्षेत्र के बैंक येस बैंक ने **पीओएस टर्मिनलों** के लिए एक नया "एसएमएस पे" फीचर लांच किया है, जो कारोबारियों को ग्राहकों से सम्पर्क रहित और दूर से ही भुगतान स्वीकार करने में सक्षम बनाएगा। येस बैंक ने इस सुविधा को शुरू करने के लिए फ्रेंच की भुगतान सेवा कम्पनी **वर्ल्डलाइन** के साथ साझेदारी की है।

- भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंकों के शिकायत निवारण प्रणाली के मानदण्ड को कड़ा करने का निर्णय लिया है जिसमें बैंकिंग लोकपाल के कार्य क्षेत्र का विस्तार किया गया है।

- यूपीआई, रूपे की वैश्विक पहुंच को आगे बढ़ाने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक ने आवश्यक कदम उठाया-सरकार व एनपीसीआई के सहयोग से यूपीआई व रूपे की विशिष्टता से अवगत कराते हुए इसकी पहुंच को बढ़ाने हेतु कहा गया है।

- भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा निजी क्षेत्र के बैंकों के आईटी इन्फ्रास्ट्रक्चर के ऑडिट के लिए आईटी फर्म को नियुक्त किया गया है।

- भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने हाल ही में गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) और शहरी सहकारी बैंकों (यूसीबी) के लिए जोखिम-आधारित आंतरिक लेखा परीक्षा प्रणाली पर दिशानिर्देश जारी किए हैं। भारतीय रिजर्व बैंक ने कहा है कि 5,000 करोड़ या उससे अधिक की संपत्ति वाले सभी एनबीएफसी और 500 करोड़ या उससे अधिक की संपत्ति वाले सभी प्राथमिक यूसीबी को नई प्रणाली में माइग्रेट करना होगा।

- अपर्याप्त निधि के कारण एटीएम से असफल लेनदेन के लिए एसबीआई ने 20 रु. + जीएसटी चार्ज लगाना शुरू कर दिया है।

- भारतीय रिजर्व बैंक ने हाल ही में निवासी व्यक्तियों को देश में अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्रों (IFSCs) को उदारवादी प्रेषण योजना (LRS) के तहत धनप्रेषण करने की अनुमति दे दी है।

आपबीती: लॉकडाउन

राजेश वर्मा
अधीनस्थ कर्मचारी
मंडल कार्यालय, उदयपुर

शुरुआत हुई थी हमारे पड़ोसी मुल्क से जहां से हुआ था इसका आगाज...

मतलब कोरोना का आगाज। इसी कोरोना के कारण आगाज हुए इस भयानक एवं ज्ञानचक्षु खोलने का समय जिसे ''लॉकडाउन'' कहा गया, जोकि समय की मांग थी।

भयानक इसलिए कहा गया क्योंकि इसने कई गरीबों का जीवनयापन करना मुश्किल कर दिया एवं ज्ञानचक्षु इसलिए कहा गया क्योंकि इससे लोग अपना गुजारा कम एवं आवश्यक चीजों के साथ ही कर सके।

जब ऐलान हुआ कि ''लॉकडाउन'' लगाया गया है तब सरकारी निर्देशानुसार घर से बाहर नहीं निकलना था परंतु राजकीय सेवाओं और जनहित की सेवाओं के लिए जिन लोगों को लॉकडाउन में भी देश की सेवा करने का मौका दिया गया उनमें शामिल था-मैं। हालांकि मैं कोई डॉक्टर या पुलिसकर्मी नहीं था, बल्कि मैं तो एक बैंक कर्मचारी हूं। इस दिन मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि मेरा देश हित के लिए कुछ सहयोग रहा।

जब घर से मास्क लगाकर जेब में सेनीटाइजर की बोतल लेकर खाने का टिफिन बैग में रखकर बैंक पहूँचता तो बीच में मैं देखता किस प्रकार जो लोग दिनभर मजदूरी कर अपना जीवनयापन करते थे। आज उनको अपना जीवनयापन करने के लिए जो काम करना पड़ता वो कर रहे हैं। भोजन जुटाने में असमर्थ हैं परंतु जब उन दान दाताओं को देखा जिन्होंने इस कठिन समय में उन असमर्थ लोगों को निःशुल्क भोजन की सुविधाएं देते हुए देखा तो मुझे अपने देश की अनेकता में एकता का जो नारा है सत्य प्रतीत होते दिखा, क्योंकि कोई भी दानदाता किसी भी धर्म या समाज का नहीं था वह मात्र अपने देश में अपने आस पास के लोगों को भूखा नहीं सोने देना चाहता था।

जहां तक हो सका मैंने भी सहायता की परंतु शायद मैं उनकी उतनी मदद नहीं कर पाया जितनी मैं करना चाहता था।

इस लॉकडाउन में मेरा जीवन भी बहुत प्रभावित हुआ क्योंकि मुझे अपने घर वालों के साथ समय बिताने का मौका मिला जो कि बिना लॉकडाउन के थोड़ा मुश्किल ही था। लॉकडाउन में मुझे यह पता चला कि घर के कितने कोने हैं, जिनकी सफाई करनी होती है। मैंने पूरे समय को मेरे माताजी के कामों में हाथ बंटाकर गुजारा। मैंने उनके छोटे बड़े कामों में उनका हाथ बंटाया और उनसे खाना बनाने की कला को भी थोड़ा-थोड़ा सीखा। हालांकि मैं अपनी माताजी के अनुसार एक प्रतिशत भी नहीं सीखा हूं पर मैं अपने हिसाब से 50% सीख गया हूं। साथ ही यहाँ एक और समस्या आई जोकि बालों से संबंध रखती थी जैसे बालों का बढ़ना। इस लॉकडाउन में मुझे अपने छोटे भाइयों के बाल काटने का पूरा ज्ञान हो गया और उन्हें मेरे बाल काटने का पूरा अनुभव हो गया क्योंकि बाहर तो जाना ही नहीं था अब लगता है कि भविष्य में हम हमारे बाल आपस में ही काट लेंगे।

जब लॉकडाउन की शुरुआत हुई तब अपने मित्रों से मिल नहीं पाया, अपने परिवारजनों से मिल नहीं पाया परंतु इस समय मेरा पूरा साथ दिया था मेरे मोबाइल और जिओ के प्लान ने, जिसके माध्यम से मैं अपने सभी मित्रों से वीडियो कॉल से बात कर सका, परिवारजनों से बात कर सका, साथ ही उन सभी परिवारजनों से भी बात कर सका, जिनसे मैं काफी समय से बात नहीं कर पाया था। जब लॉकडाउन समाप्त होने लगा तब तक जीवन शैली इस प्रकार बदल चुकी थी कि हमें आगे भी अगर लॉकडाउन में रखा जाए तो हमें किसी प्रकार की परेशानी नहीं होगी। भगवान से यही गुजारिश है कि जितना जल्दी हो सके उतना जल्दी यह कोरोना महामारी जड़ से समाप्त कर दें आज विश्व जिस संकट की आपदा से गुजर रहा है वह बिल्कुल भी सही नहीं है।

हमें गर्व है

सुधीर सक्सेना हमारे बैंक के प्रधान कार्यालय में कॉर्पोरेट संचार प्रभाग में सहायक प्रबंधक के पद पर कार्यरत हैं। बैंक अधिकारी के साथ-साथ वह एक प्रतिष्ठित किकबॉक्सिंग खिलाड़ी भी हैं। उन्होंने अपनी इस कला को अनेक बार साबित भी किया है। उन्होंने अनेक प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेकर पदक प्राप्त किए तथा अपना और बैंक का नाम रोशन किया। उनकी मुख्य उपलब्धियों का वर्णन नीचे दिया गया है:-

खेल-कूद गतिविधियाँ

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर

- 2006 में, नेपाल में अंतर्राष्ट्रीय किकबॉक्सिंग चैम्पियनशीप में सहभागिता की और स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
- 2017 में, भूटान में इंडो-भूटान इंटरनेशनल किकबॉक्सिंग चैम्पियनशीप में सहभागिता की और स्वर्ण पदक हासिल किया।
- 2017 में, तुर्कमेनिस्तान में एशियाई चैम्पियनशीप में सहभागिता की और कांस्य पदक प्राप्त किया।
- 2020 में, नई दिल्ली में आयोजित इंडियन ओपन इंटरनेशनल किकबॉक्सिंग चैम्पियनशीप 2020 में सहभागिता कर रजत पदक प्राप्त किया।

राष्ट्रीय स्तर

- 2004 में, बरेली में प्रथम किकबॉक्सिंग राष्ट्रीय चैम्पियनशीप में गोल्ड मेडल हासिल किया।
- 2006 में, नोएडा में राष्ट्रीय स्कूल खेलों में रजत पदक हासिल किया।
- 2008 में, कोलकाता में राष्ट्रीय किकबॉक्सिंग चैम्पियनशीप में गोल्ड मेडल हासिल किया ।
- 2010 में, विशाखापत्तनम में तीसरी राष्ट्रीय किकबॉक्सिंग चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक हासिल किया।
- मेरठ 2016 में, तीसरी राष्ट्रीय किकबॉक्सिंग चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक हासिल किया।

- वाको इंडिया राष्ट्रीय किकबॉक्सिंग चैम्पियनशिप 2017 में कांस्य पदक हासिल किया।
- WAKO INDIA इंडिया किकबॉक्सिंग चैम्पियनशीप 2018 में गोल्ड मेडल हासिल किया ।

राज्य स्तरीय

- लखनऊ में किकबॉक्सिंग चैम्पियनशीप 2007 में गोल्ड मेडल हासिल किया।

विशेष उपलब्धियां

- सेंचुरी स्पोर्ट्स अवार्ड
- पूर्व ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स के स्थापना दिवस 2020 के अवसर पर एमडी और सीईओ के हाथों सम्मानित किया गया।
- पद्म श्री पुरस्कार के लिए नामांकित।

सामाजिक कार्य

- वर्तमान में आत्मरक्षा और महिला सशक्तिकरण हेतु आरम्भ अकादमी के साथ मिशन शक्ति सेना में काम करना।
- भारतीय सैनिकों और शहीदों के लिए एकता द यूथ पावर ऑफ इंडिया की नींव
- पुरुष न्याय हेतु लोगों की संस्था के साथ कार्य करना।

श्री सुधीर ने अपनी मेहनत और लगन के दम पर अपना तथा अपने देश का नाम रोशन किया है। पीएनबी प्रतिभा का संपादक मंडल आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

क्षेत्रीय भाषा के झरोखे से

स्वागत

कविता - बांगला भाषा

आप आए खुश हुए हम सब
हम सब शीश झुकाते हैं
स्वागत में आज आपके हम
ये कविता सुनाते हैं।

खाली है हाथ, करें क्या हम
स्वागत हम करें क्या लेकर
कण-कण में इस क्षण में देखो
यह जीवन लहलाया।

आप आए खुश हुए हम
आशा फूली ये मन मुस्काया
आप आए ये मन भाया
श्रद्धा के फूल नयन में जो
यह जीवन लहराया।

আপনি আমাদের সবাইকে খুশি করলেন
আমরা সবাই মাথা নত করি
আপনাকে আজ আপনাকে স্বাগতম
তিনি কবিতা আবৃত্তি করেন।

খালি হাতে দেওয়া উচিত
আমাদের কি করা উচিত স্বাগতম
প্রতিটি কণায় এই মুহূর্তটি দেখুন
এই জীবন কাটাও|

আপনি খুশি এসেছিলেন আমরা
আশা ফুলি হয়ে মন মুসকায়া
আপনি এইভাবে এসেছিলেন
নয়নে শ্রদ্ধার ফুল
এই জীবন উড়ে|

विश्वेश्वर कुमार डे
पदनाम - वि. सहायक
शाखा कालेज स्ट्रीट
कोलकाता पूर्व

सिक्के दे दो पासे

कविता - पंजाबी भाषा

इस चंदरी दुनिया अंदर दिल दें हाणी खसें,
दिल दा हाणी रब वरगा, बाकी सब इक पासे,
रब नाल मेल ना सोखा है, सोखे सोने ते कासे,
असीं अपना बिरहा खुद लिखिया,
हुन न कोई राह न पासे,
बस लंघ जानी ए जिंद निमानी,
कोई देवे लख दिलासे,
पर यारा आपा नहीं बिछड़ि-मिलना,
आपा सिक्के दे दो पासे,
यारा सिक्के दे दो पासे।

ਇਸ ਚੰਦਰੀ ਦੁਨਿਆ ਅੰਦਰ ਦਿਲ ਦੇ ਹਾਣੀ ਖਾਸੇ,
ਦਿਲ ਦਾ ਹਾਣੀ ਰੱਬ ਵਰਗਾ ਬਾਕੀ ਸਭ ਇੱਕ ਪਾਸੇ,
ਰੱਬ ਨਾਲ ਮੇਲ ਨਾ ਸੌਖਾ ਹੈ,ਸੌਖੇ ਸੋਨੇ ਤੇ ਕਾਸੇ,
ਅਸੀ ਆਪਣਾ ਬਿਰਹਾ ਖੁਦ ਲਿਖਿਆ,
ਹੁਣ ਨਾ ਕੋਈ ਰਾਹ ਨਾ ਪਾਸੇ,
ਬਸ ਲੰਘ ਜਾਣੀ ਇਹ ਜਿੰਦ ਨਿਮਾਣੀ,
ਕੋਈ ਦੇਵੇ ਲੱਖ ਦਿਲਾਸੇ,
ਪਰ ਯਾਰਾ ਆਪਾ ਨਹੀਂ ਵਿਛੜਨਾ-ਮਿਲਣਾ,
ਆਪਾ ਸਿੱਕੇ ਦੇ ਦੋ ਪਾਸੇ,
ਯਾਰਾ ਸਿੱਕੇ ਦੇ ਦੋ ਪਾਸੇ।

शहनाज
मंडल कार्यालय, कपूरथला

काव्य सरिता

मेरा लक्ष्य

एक सात वर्षीय बालिका से पूछा गया, कि
"बड़े होकर क्या बनना चाहोगी?"
उसने पहले अपने आसपास के वातावरण को टटोला,
फिर उत्साह से एक सांस में बोला
एस्ट्रोनॉट! पायलट! मॉडल! अध्यापिका!

उस अनुभवहीन मन को यह कहाँ ज्ञात था।
कि दुनिया उसके सपनों की तरह आशावान नहीं
लेकिन इसमें बुराई कहाँ?
सोच की उड़ान को पंख देने में कर्ज है क्या?
बालिका के ऐसे सोचने में हर्ज है क्या?

बालिका जब थोड़ी बड़ी हुई, तो उसका परिचय हुआ किताबों से
किताबों ने उसकी कल्पना को उस ऊंचाई तक पहुँचाया
जहाँ तक, शायद ही मानवजाति की पहुँच हो
किताबों के प्रेम ने उसे एक अटूट शक्ति दी
जिससे उसका विश्वास दृढ़ हुआ "अगर ये किरदार कुछ भी
कर सकते हैं, तो, मैं क्यूं नहीं?"

जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ी, वैसे-वैसे वह
दूसरों की उम्मीदों से परिचित हुई,
उसका आत्मविश्वास परिवर्तित होकर आत्म संदेह बन गया
उसने अपने आप से बार-बार पूछा
मेरा लक्ष्य है क्या? मैं क्या बनूंगी?
या, क्या मैं कुछ बन भी पाऊँगी?

उसने अपने वातावरण पर पुनः ध्यान दिया
और पाया ,,,,,,,, कि इस दुनिया में बहुत कष्ट हैं
हर कोई किसी न किसी दर्द से पीड़ित है

फिर उसके निश्चल मन ने सोचा कि,
उसे कुछ करना होगा ,,,,,,,, लेकिन क्या?

दुनिया इतनी बड़ी और डरावनी है
इतने सारे लोग जो उसे हानि पहुंचाना चाहेंगे
सिस्टम के भीतर सिस्टम से किस तरह वह निपट पाएगी,
इतनी सारी चीजें जिनसे वह अनजान है,
पर, अब वह अकेली करे ही क्या?

वह समझ न पाई, आखिर वह करे तो क्या करे?
दुनिया के हित के लिए पैसे कमाए?
या, दूसरों की उम्मीदों के हिसाब से नौकरी चुने?
आखिर, इस दुनिया की पीड़ा
को, वो कम करे तो कैसे करे?

वह छोटी बालिका, जिसने इतने बड़े स्वप्न देखे
आज समझ नहीं पा रही है कि आखिर उसका लक्ष्य क्या है?
इसलिए जब भी कोई मुझसे पूछता है, कि तुम्हारा लक्ष्य क्या है
अब एस्ट्रोनॉट, पायलट या मॉडल नहीं बोलती हूं मैं
बस बोलती हूँ, कि मुझे है एक अच्छी इंसान बनना

भले ही मेरे पास उस सात वर्षीय बालिका की आशा अब नहीं है
किन्तु मैं इतनी आशावान हूँ,
कि इस दुनिया में जितना भी दर्द है,
उसे थोड़ा कम कर सकूँ
और यही मेरे लक्ष्य की पूर्ति होगी।

आयुशी
सुपुत्री श्री सुधीर कुमार
मंडल प्रमुख, चंडीगढ़

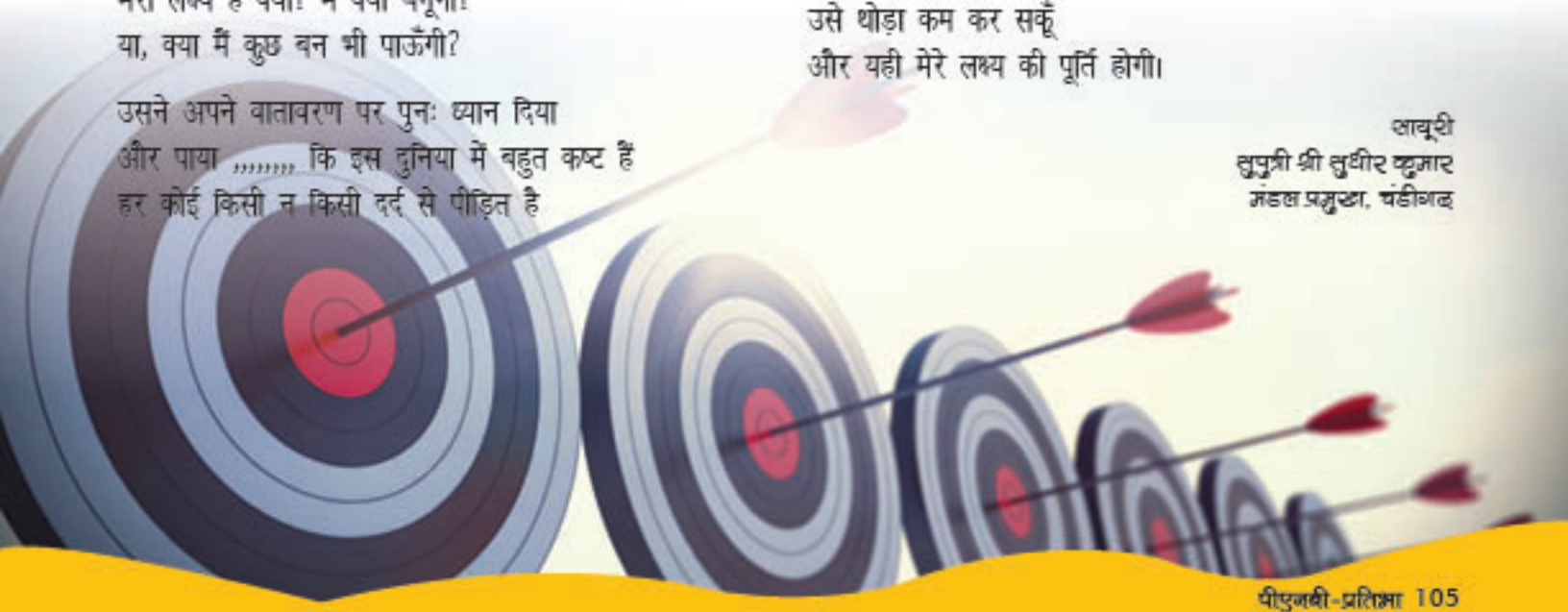

मजदूर की कथा

वी. रविकृष्णन
वरिष्ठ प्रबन्धक
शाखा - मुद्रा तिजोरी (करेंसी चेस्ट)
मंडल कार्यालय, चेन्नई दक्षिण

हाथों में थामे कुदाल
माथे पर धारण किये परात
फावड़ा चलाते हुए मजबूत हाथ
चलते हैं निरन्तर दिन-रात
धूल धूसरित परिस्थिति जन्य बदन
अनवरत चलते हुए हाथ
माथे से टपकते श्रमबिन्दु पर
कभी न होते वे उदास
प्रातः से संध्या तक निरन्तर
हाड़तोड़ सभी मिल करते हैं परिश्रम
बाधाओं से भरी हो चाहे राहें
पर न होता उत्साह कभी कम
सिकुड़कर पेट चिपक गया है आँतों से
दम हुआ जाता है बेदम
चलें हैं फिर भी फिकर छोड़
जीने को संघर्ष करने मिला कर कदम
मुस्काता है जीवन हर हाल में
शिकवा नहीं कोई, न कोई गम
साथी हाथ बढ़ाना कहकर-बाँट ही लेते हैं
सब मिलकर अपना श्रम
कड़कती धूप हो चाहे या
फिर धूल भरी चलें आँधियाँ
कडकड़ाये बिजली कहीं या
बरसती हो कहीं बदलियाँ
मजदूर घुटने टेकता नहीं
रहता स्थितप्रज्ञ सा रत कर्मफल में
देता सन्देश सभी को कभी न बैठो
उत्साह विहीन से
तटस्थ रहो जीवन पथ में
कितने ही महल, कितनी ही बड़ी इमारतें
उनके परिश्रम से कितनी लिखी गई इबारतें
नींव की ईंट ही रहे सदा
कंगूरा बनने की मन में कभी न आई चाहतें

पिता जीवन का आधार

अचला सिंह
शाखा महादेवपुरा
मंडल कार्यालय, बेंगलूरु

आज भी चाहता हूँ पापा, छत्र-छाया आपकी
बचपन में जब डगमगाया था, चलना सिखाया आपने,
जब दौड़ते-दौड़ते था गिरने वाला, बाहों में संभाला आपने।।

जब गया था पहले दिन विद्यालय, डबडबाती आँखें नहीं देख पाए थे आप,

हुई छुट्टी देखा आपको बाहर, दौडकर गले लिपट जाता था आपके।।

जब दशहरा में नहीं दिखता था रावण मुझे, प्यार से कंधे पर बैठाते थे आप

हँस-हँस कर खुश होकर देखता था, मुझसे भी ज्यादा खुश होते थे आप।।

जब गिरता था साइकिल से, पापा ही याद आते थे,

बहादुर हो बेटा! कहकर सीने से मुझे लगाते थे आप।।

भौतिक विज्ञान हो या गणित, सवाल अटकने पर पापा ही याद आते थे,

जब अध्यापक न बताते थे हल, विश्वास था पापा ही बतायेंगे हल।।

उच्चशिक्षा के शैक्षणिक संस्थानों के नाम, अंकित कराये मेरे मानस पटल पर

चयनिक होंगे बेटा-अवश्य तुम, इतना बड़ा विश्वास दिलाया था आपने।।

आज वह दिन आ गया, जिसका था आपको इंतजार,

उच्च शैक्षणिक संस्था में, चयन हुआ मेरा आज।।

पूर्ण श्रेय जाता है पापा आपको

यह हल है आपके आशीर्वाद और प्यार का।।

डाँटते थे, गुस्साते थे, प्यार भी असीम करते थे आप,

आज लगता है डांटे चाहे गुस्साएं, पर रहे सदा मेरे समीप।।

संस्कार भी दिए आपने, कठिन परिश्रम भी करना सिखाया आपने,

गुरु एवं प्रियजनों को सम्मान देना ये भी तो सिखाया आपने।।

कठिन से कठिन समस्या हो, सबका किया समाधान आपने,

सम्बल भी मेरा हैं आप, आधार भी जीवन का हैं आप।।

जीवन के उतार-चढ़ाव में, पग-पग पर संभाला आपने,

सदैव कंधे पर रहे वृहद हस्त आपका, सौभाग्यशाली समझूँगा अपने आपको।।

आज भी चाहता हूँ पापा, छत्र-छाया आपकी।।

ज्ञान प्रश्नोत्तरी के उत्तर

1	क	2	ख	3	ख	4	घ	5	ख	6	ग	7	ग
8	ख	9	ग	10	घ	11	ग	12	घ	13	घ	14	घ
15	क	16	ख	17	ग	18	क	19	ग	20	ख		

प्यारी माँ

मैथाली जैन
सुपुत्री श्री मुकेश जैन
मंडल प्रमुख, उदयपुर

क्या कूल है यह कहकर तुम मुझे सताती हो,
मेरे अजीब ख्यालों का दिन-भर मजाक उड़ाती हो।

चश्मे के बिना तुम्हारी जिन्दगी अधूरी है,
फिर भी मेरी हंसी के पीछे छुपे दर्द को तुम ऐसे ही पहचान लेती हो।

कभी-कभी मेरी परेशानी को तुम न समझीं,
तब भी हर पल मेरे साथ तुम खड़ी थी।
याद है रातभर जागकर हम बहुत बातें करते,
और तुम आधी नींद में भी मेरी हर शिकायत सुनती।

और कभी-कभी आधी बातें नींद में तुम नहीं सुनती,
पर एक पल भी मुझे यह महसूस नहीं होने देतीं।

इसीलिए तो लोग मुझे अच्छा लिसनर कहते हैं कहीं।
बचपन में तुम्हारी चुन्नी को मैं साड़ी बनाकर पहनती,

इस उम्मीद में कि मैं तुम्हारे जैसी दिखूंगी,
भूल गयी थी कि तुम्ही तो दौड़ रही हो मेरी रगों में।

तुमने मेरे हर नखरे झेले, मेरे हर आंसू को पोंछा,
तुम्हारी जैसी इतनी हिम्मत तो मैं हर दिन भगवान से मांगती हूं,

समझना तुम मेरी दोस्त नहीं, तुम मेरी प्यारी माँ हो।

बच्चों का कोना

अनुज प्रजापति पुत्र श्री हरिश्चन्द्र राम
प्रबन्धक राजभाषा, राजभाषा विभाग
प्रधान कार्यालय, द्वारका, नई दिल्ली

वीर सिपाही

सब धर्मों से श्रेष्ठ-धर्म है
जीवन जिसका राष्ट्र-कर्म है
कहने में फिर कहां-शर्म है
मेरे देश का लहू-गर्म है
राष्ट्रवाद का यही धर्म है।
भुजबल में प्रचंड है ज्वार
सरहद की रेखा के तार
लौटाया दुश्मन को पार
प्रहरी हैं-तिब्बत के द्वार
नमन तुम्हें है बारंबार।
राष्ट्रवाद सब धर्मों का सार
कर्महीन को है धिक्कार।
कश्मीर और तिब्बत की धार
मेरे शहीदों के परिवार
नमन तुम्हें है बारंबार।
स्वयं सूर्य-सा जलते-जीवन में
राष्ट्रवाद के समर-अग्निकुंड में
दिव्य-शौर्य कदमों की ताल
वीर सिपाही-दुश्मन के काल
सेना का हर-एक लाल।
शहीद-सौभाग्य परम-धर्म है
सदा पथरीली राहें नर्म हैं।
पक्ष-विपक्ष की महासभा में
सत्ता की तलवारों के बीच
चर्चाओं का बाजार गर्म है।

जी. रामकृष्णा
मुख्य प्रबन्धक
मंडल कार्यालय, चेन्नई दक्षिण

जिन्दगी का गणित

शालिनी मुखरैया
विशेष सहायक
शास्त्री मेंडीकल रोड, अलीगढ

आज सोचती हूँ जिंदगी के इस मोड़ पर आ कर
मैंने क्या पाया है, क्या खोया है
क्या सपने देखे थे इसको ले कर
कितने ख्वाब पूरे हुए, कितने दम तोड़ गए रास्ते में
बचपन में दिखता था खुला आसमान
मन में उमंग थी कि नाप लेंगे सारा जहान
सर पर साया था माता-पिता का
गम जिन्दगी का कोई छू भी न पाता था।
न थी कभी भविष्य की कोई चिंता
न ही वर्तमान की थी कोई फिकर
माँ के कंधे पर सर रख कर सो जाती थी
पिता की उंगली पकड़ कर पूरा बाजार खरीद लाती थी
ज्यों बड़े हुए दुनिया के सच से सामना हुआ
कौन अपना है, कौन पराया, इसका भान हुआ
सपनों का संसार जो बुना था
कुछ पूरे हुए, कुछ अधबुने ही रह गए
कुछ को खिलने का मौका ही न मिला
जिन्दगी कभी मेंरी चाह के हिसाब न चली
जब भी चली बस अपने हिसाब से ही चली
जो राह वह बनाती गई, उस पर बस चलते गए
उसने हँसने को कहा तो हंस दिए
अगर रुलाया तो बस रो दिए
हम तो बस खिलोने है भगवान के
अपनी ताल पर वो सबको नचाता है
जीवन में हर कोई अपना मनचाहा कहाँ पाता है
जब अकेली होती हूँ तो यादें दस्तक दे जाती हैं
मन के झरोखों को अपनी खुशबू से महका जाती हैं
मन ही मन बचपन याद कर मुस्कुरा लेती हूँ
अपने बच्चों का बचपन याद कर उसे जी लेती हूँ
यूँ तो अब जिन्दगी का सफर पूरा होने को है
फिर भी न जाने कुछ कसक मन में क्यों है
गुणा भाग जिंदगी के आज तक कोई न समझ पाया है
कोई विरला ही अपनी जिन्दगी को अपने हिसाब से रच पाया है

मन का भ्रम

नीरज कुमार सिन्हा
वरिष्ठ प्रबंधक सह जिला
समन्वयक अधिकारी
मोतिहारी

मनुष्य क्यों भ्रम में पलता है।

न कुछ लाता है, न कुछ ले जाता है।

दूसरों को मूर्ख अपने को बुद्धिमान मान बैठता है।

दूसरों की कमी देखता, जो स्वयं करता उसे छुपा लेता है।

मनुष्य क्यों भ्रम में पलता है।

जब मंदिर में हाथ जोड़ता है तो सोचता ईश्वर देखते हैं।

कभी दूसरे का दिल दुखाता तो नहीं सोचता की ईश्वर उसे भी देखते हैं।

बिन देखे कानो से सुन, अगले को पापी समझता है।

मनुष्य क्यों भ्रम में पलता है।

प्रकृति भी जो मुफ्त में देती है, उसे वापिस लेना चाहती है।

जैसे हवा मुफ्त देती है, उसे सासों से छुड़ा लेती है।

जो आपको ज्ञान देती है, नहीं संभालो क्षीण करती है।

अपनों को अपना न समझो तो रिश्ते टूट जाते हैं।

पराये को भी अपना लो तो दिल को छू लेते हैं।

मनुष्य क्यों भ्रम में पलता है।

जो धर्म एवं सत्य को परित्याग नहीं करता है।

उसे कष्ट हो सकता है, पर निराश नहीं हो सकता है।

जीत उसी को मिलती है जो अंगारों पर पांव रखता है।

सजीव-निर्जीव पदार्थो का एक गुण ऐसा होता है।

मनुष्य क्यों भ्रम में पलता है।

मनुष्य का धर्म वही अच्छा होता है, प्रकृति को सुन्दर बनाना होता है।

अपने दिल के आईने में दूसरो को सुन्दर देखना होता है।

उसे सुन्दर नहीं दिखने पर दिलो के आईने को तोड़ना नहीं होता है।

एक टूटी हुई पतवार को मजबूत करने वाला ही बलवान होता है।

मनुष्य क्यों भ्रम में पलता है।

वो मेरी मां

आंखों में गंगासागर और आंचल में
दूध की नदियां,
फिर भी मुझे लोरी सुनाती है
वो मेरी मां।

अपने दुख को भुला कर मेरी हंसी पर मुस्कुराती
वो मेरी मां।
मेरी बलाएं लेकर जो मुझे दुनिया की बुरी नजर से बचाती
वो मेरी मां।

मेरी हर बीमारी में जो अपनी सारी रात जलाती
वो मेरी मां।
मेरी झोली में हर खुशियों के लिए रोज दुआओं में हाथ फैलाती
वो मेरी मां।

मेरी परीक्षाओं की घड़ी में जो खुद भी न सो पाती
वो मेरी मां।

मेरी हर गलती पर पापा की डांट से जो बचाती
वो मेरी मां।

मेरे रूठने चिल्लाने पर हल्की-सी चपत लगाकर जो फिर से
गले लगाती है
वो मेरी मां।
छोटा सा एक काम मेरा कहकर जो किलो दो किलो मुझसे
मटर छिलवाती है
वो मेरी मां।

खुद बुखार में तपकर भी जो मेरी तबीयत का हाल पूछती है
वो मेरी मां।
भगवान को तो देखा नहीं पर हर पल उसके होने के अस्तित्व
जो एहसास कराती है
वो मेरी मां।।

राहुल गोठवाल
वरिष्ठ प्रबन्धक
मंडल कार्यालय, उदयपुर

मेरी हिंदी बनेगी विश्व की बिंदी!

वो दिन अब दूर नहीं,
कि दुनिया हिन्दी अपनाएगी,
बनेगी सिरमौर मेरी हिंदी!
मानवता के गीत गायेगी,

135 करोड़ है भारत की जनता
जब मिलकर हिंदी अपनाएगी
सोचो! और कौन-सी भाषा?
इसके आगे टिक पाएगी?

होगा व्यवहार मेरा हिन्दी में,
हम हिन्दी में ही लिखेंगे!
विश्वास रखो! हे माँ!!
राष्ट्रभाषा नहीं, तुझे विश्वभाषा बनाएंगे!

अपनी आभा से संसार को हम
आलोक से भर देंगे,
आरती करेगी तेरी दुनियाँ
जश्न-ए-दीपक जलायेंगे!

कोयल भी चहकेगी हिंदी में,
चाँद पूनम का भी होगा हिंदी!
संतोष होगा तुझे माँ हिंदी,
मेरी हिंदी बनेगी विश्व के माथे की बिंदी!!

श्वेता जयसवाल
अधिकारी
शाखा आर. एच. रोड
मंडल कार्यालय चेन्नई दक्षिण

विविध गतिविधियाँ

पंजाब नैशनल बैंक द्वारा अर्बन एस्टेट फेज-2 शाखा कार्यालय में कार लोन मेले का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ अंचल प्रबंधक, लुधियाना श्री डी. के. गुप्ता एवं मंडल प्रमुख, पटियाला श्री एस.के. थापर द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया।

चौधरी चरण सिंह जी की जयन्ती के अवसर पर बवायूँ कलब बवायूँ में पंजाब नैशनल बैंक ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान बवायूँ द्वारा किसान मेले का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पंजाब नैशनल बैंक ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक श्री दीपक कुमार, प्रशिक्षिका श्रीमति पूर्णिमा शर्मा एवं अटैंडर रवि कुमार उपस्थित रहे।

लखनऊ अंचल कार्यालय के स्टाफ सदस्यों के द्वारा तीन बैंकों के सम्मेलन के पश्चात आपसी बन्धुत्व तथा सांस्कृतिक एकता में वृद्धि के लिए बाबू बनारसी दास स्टेडियम में CGM 11 एवं GM 11 के बीच एक मैत्री क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया। (चित्र में टॉस कराते हुये मुख्य महाप्रबंधक श्री स्वरूप कुमार साहा एवं महाप्रबंधक श्री संजय गुप्ता)

श्री एस. के. दाश जी, अंचल प्रबंधक के मानव संसाधन विकास विभाग, प्रधान कार्यालय में स्थानांतरण तथा श्री एस. पी. सिंह के मेरठ के नए अंचल प्रबंधक के रूप में कार्यभार ग्रहण करने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए श्री एस. के. दाश, महाप्रबंधक तथा श्री एस. पी. सिंह, अंचल प्रबंधक। साथ हैं श्री पी. के. जैन, उप अंचल प्रबंधक, श्री निलेश कुमार, मंडल प्रबंधक, मेरठ पश्चिम; श्री राज कुमार गुप्ता, सहायक महाप्रबंधक, शस्त्र कार्यालय, मेरठ तथा स्टाफ सदस्य।

श्री निलेश कुमार, मंडल प्रमुख, मेरठ (पश्चिम) ने आचार्य विष्णु गुप्त सुभारती कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट एंड कामर्स में "वित्तीय योजना" विषय पर अतिथि संकाय के रूप में सत्र लिया। इस अवसर पर उनको सम्मानित करते हुए संस्था के निदेशक डॉ. आर. के. घई व अन्य गणमान्य

डिजिटल अपनाएं दिवस के अवसर पर श्री बी. पी. महापात्र, अंचल प्रमुख, जयपुर स्थानीय वेंडरों को क्यूआरकोड प्रदान करते हुए।

संविधान दिवस के अवसर पर श्रीगंगानगर मंडल में मंडल प्रमुख श्री राजिन्द्र मोहन शर्मा द्वारा समस्त स्टाफ सदस्यों को संविधान के प्रति शपथ दिलवाई गयी।

बेंती में ग्राम संपर्क अभियान की शुरुआत करते हुए श्री संजय गुप्ता, महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय, लखनऊ।

मंडल कार्यालय, गुरुग्राम में ग्राम संपर्क अभियान के अवसर पर सम्मानित ग्राहकों के साथ चर्चा करते हुए मंडल प्रमुख श्रीमती निधि भार्गव।

श्री बी पी महापात्र, अंचल प्रमुख, जयपुर सटकेयर होम्योपैथी क्लिनिक के डॉक्टरों को सम्मानित करते हुए।

संविधान दिवस के अवसर पर अंचल कार्यालय, जयपुर के स्टाफ सदस्य संविधान की उद्देशिका की शपथ लेते हुए।

वर्ष 2020 में मुजफ्फरपुर, वैशाली तथा सारण जिला में 10वीं तथा 12वीं में जिलावार अव्वल आने वाले विद्यार्थियों को मंडल कार्यालय मुजफ्फरपुर द्वारा सम्मानित किया गया। यह सम्मान मंडल प्रमुख श्री अभिजीत सिन्हा तथा सम्बन्धित जिले के जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा प्रदान किया गया।

मंडल कार्यालय, इंदौर में सीएसआर अभियान के तहत मास्क वितरित करते हुए मंडल प्रमुख श्री प्रेम कुमार अग्रवाल व अन्य स्टाफ सदस्यगण।

सेवानिवृत्ति

श्री बी. एन. मिश्रा, मुख्य महाप्रबंधक के सेवानिवृत्ति के अवसर पर उन्हें भावभीनी विदाई देते हुए, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव तथा कार्यपालक निदेशकगण श्री संजय कुमार, श्री अशोक कुमार आजाद, श्री विजय दुबे तथा मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री विजय कुमार त्यागी, इस अवसर पर श्री बी. एन. मिश्रा के परिवार के सदस्य भी उपस्थित रहे।

अंचल कार्यालय, लखनऊ में कार्यरत श्री योगेन्द्र पाल सिंह को सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावभीनी विदाई देते हुए मुख्य महाप्रबंधक श्री स्वरूप साहा।

मंडल कार्यालय, बिहार शरीफ में पदस्थ श्री सर्वेश प्रसाद, वरिष्ठ प्रबन्धक एवं श्री विजय कुमार, प्रबन्धक करेंसी चेस्ट को सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावभीनी विदाई देते हुए मंडल प्रमुख श्री सत्येन्द्र सिंह एवं स्टाफ सदस्य।

श्री आर. के. अरोड़ा, उप अंचल प्रबंधक, जयपुर तथा श्री सुबोध कुमार जैन, मुख्य प्रबंधक को सेवानिवृत्ति पर भावभीनी विदाई देते हुए अंचल कार्यालय के स्टाफ सदस्यगण।

श्री अशोक कुमार गोगिया, मुख्य प्रबंधक, मंडल कार्यालय, गुरुग्राम को सेवानिवृत्ति के अवसर पर उन्हें भावभीनी विदाई देते हुए अंचल प्रबंधक श्री समीर बाजपेयी, मंडल प्रमुख श्रीमती निधि भार्गव।

आपके पत्र

हमें आपकी गृह पत्रिका "पीएनबी प्रतिभा" का "राजभाषा एवं सरकारी कारोबार विशेषांक" प्राप्त हुआ, धन्यवाद। सर्वप्रथम पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय से प्राप्त "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार" हेतु आपकी समस्त राजभाषा टीम को मेरी ओर से बधाई। माननीय सचिव महोदय, राजभाषा विभाग के लेख "हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका" से राजभाषा के क्षेत्र में कार्य कर रहे राजभाषा सेवियों को निश्चित रूप से लाभ प्राप्त होगा। इन सभी दस 'प्र' को मोतियों की माला की तरह बड़े ही आकर्षक ढंग से पिरोया गया है। श्री एस. के. दीक्षित, मुख्य महाप्रबंधक महोदय के लेख 'बैंक का सरकारी कारोबार' में आपके बैंक द्वारा प्रदान की जाने वाली विभिन्न सेवाओं की विशेषताओं का बखूबी संकलन किया गया है। खाता खोलने संबंधी विभिन्न बारीकियों को बताने वाला श्री एस. विश्वकर्मा सहायक महाप्रबंधक का लेख लाभदायक है। पत्रिका के माध्यम से बैंक में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ देखने को मिली। इसके साथ ही अन्य लेख जैसे 'व्यवसाय के सशक्त संचालन में भाषा की भूमिका', 'डिजिटल बैंकिंग: भारतीय बैंकिंग का भविष्य', 'एक राष्ट्र एक भाषा', 'आर्थिक अपराधियों द्वारा आधुनिक बैंकिंग सुविधाओं का दुरुपयोग तथा निजात के उपाय' आदि अनेकों नयी जानकारियां प्राप्त हुई। आशा करते हैं कि भविष्य में भी इसी तरह के बेहतरीन विशेषांक पढ़ने का अवसर अवश्य प्राप्त होगा। आगामी अंकों के लिए मेरी ओर से संपादक महोदया तथा पूरे संपादक मंडल को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

रंजन कुमार बरुन
उप महाप्रबंधक राजभाषा
राष्ट्रीय आवास बैंक

आपके बैंक से पत्रिका "पीएनबी प्रतिभा" "राजभाषा एवं सरकारी कारोबार विशेषांक" हमें प्राप्त हुई। यह पत्रिका बड़ी ही सुव्यवस्थित एवं सुरुचिपूर्ण है। इसमें संकलित रचनाएँ जैसे 'राजभाषा कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका', 'नकदी रहित अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ते कदम', 'राजभाषा हिंदी का स्वरूप', 'जो होता है अच्छे के लिए होता है', 'बैंकों की प्रगति में हिंदी का योगदान', 'वो शाम' आदि बहुपयोगी एवं नवीन जानकारियों से भरी हुई है। इस पत्रिका में चित्रांकन बड़ा ही आकर्षक है। इसके लिए आपका संपादक मंडल बधाई के पात्र है। आशा करते हैं कि भविष्य में भी यह पत्रिका ज्ञानवर्धन हेतु हमें प्राप्त होती रहेगी।

अमित श्रीवास्तव
उप महाप्रबन्धक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी
पंजाब एण्ड सिंध बैंक

आपको सहर्ष सूचित करना चाहते हैं कि प्रधान कार्यालय द्वारा प्रकाशित तिमाही गृह पत्रिका "पीएनबी प्रतिभा" के नवीनतम अंक "राजभाषा एवं सरकारी कारोबार विशेषांक" की प्रति प्राप्त हुई। इसमें राजभाषा के विकास से जुड़े मौलिक लेखों के साथ-साथ सरकारी कारोबार के बारे में विस्तृत जानकारी बहुत ही रोचक तरीके से प्रस्तुत की गई है। दैनिक स्तर पर बैंकिंग के काम काज में राजभाषा हिन्दी के स्वरूप को इस पत्रिका में बखूबी से दर्शाया गया है। साथ ही इसमें सरकारी कारोबार के बारे में विस्तृत जानकारी बहुत ही रोचक तरीके से प्रस्तुत की गई है। सभी प्रकार के सरकारी कारोबार के उत्पाद एवं राजभाषा के महत्व के विस्तृत विवरण को एक ही पत्रिका में समावेश करना ज्ञानवर्धक एवं रुचिकर है।

पत्रिका के सुंदर एवं ज्ञानप्रद विशेषांक के लिए सम्पूर्ण संपादकीय टीम एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई। पत्रिका के आगामी अंकों के लिए हृदयतल से शुभकामनायें।

मोहम्मद मकसूद अलि
मंडल प्रमुख
मंडल कार्यालय, चेन्नई दक्षिण

अभी हाल में ही "राजभाषा एवं सरकारी कारोबार विशेषांक" के रूप में प्रकाशित "पीएनबी प्रतिभा" का जुलाई-सितम्बर, 2020 अंक पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। आकर्षक कलेवर वाले इस अंक को प्रेषित करने के लिए हम आपके आभारी हैं। पत्रिका में प्रकाशित लेख काफी ज्ञानवर्धक हैं। 'डोरस्टेप बैंकिंग सेवाएं', 'बैंक एवं बैंकिंग कार्य में हिंदी की भूमिका' और 'भारतीय अर्थव्यवस्था के सन्दर्भ में बैंकों का विलय', नामक आलेख ज्ञानप्रद होने के साथ-साथ समीचीन भी हैं। पत्रिका के संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं आगामी अंकों के लिए शुभकामनाएं।

हरदीप खन्ना
सहायक महाप्रबंधक
भारतीय रिज़र्व बैंक

पीएनबी अखबारों में

সতর্কতা সচেতনতা সপ্তাহে পিএনবিতে প্রতিশ্রুতি গ্রহণ

पीएनबी वित्तीय सेवाओं को उन्नत बनाने के लिए प्रतिबद्ध : मल्लिकार्जुन राव

પીએનબીએ 'ગ્રામ સંપર્ક અભિયાન'નો આરંભ કર્યો

পাঞ্জাব ন্যাশনাল ব্যাঙ্ক সংবিধান দিবস পালন করল

PNB lowers recast target; expects only Rs 20,000 cr loan book to be restructured

कार्यस्थल पर समझौता करने वालों के लिए दण्ड का प्रावधान भी होना चाहिए

पंजाब नैशनल बैंक ने टीएमएसएसी पोर्टल एवं विजिलेंस मैनुअल 2020 का अनावरण किया

మార్చినాటికి 16 వేల కోట్ల రికవరీ

• పీఎన్‌బీ ఎండీ సీహెచ్ఎస్ఎస్ మల్లికార్జున రావు

पीएनबी ने भाऊराव देवरस सेवा न्यास को आपातकालीन वाहन दान किया

రూ.16,000 కోట్ల మొండి బాకీలు వసూలు చేస్తాం

हर्ष वर्धन ने कोविड-19 के खिलाफ पीएनबी के अखिल भारतीय सीएसआर अभियान का शुभारंभ किया

घर मतलब सपने, आराम और सुविधा का संगम

पेश है pnb होम लोन।

pnb होम लोन

- तुरंत भुगतान
- कम ब्याज
- कम कागजी कार्रवाई

pnb

Oriental United

बढ़ें साथ मिलकर

हमारे ग्राहक...हमेशा आगे।

1-800-180-2222 or 1-800-103-2222 Toll Free

www.pnbindia.in